सालाजार की वापसी

Hindi

Salazar ki Wapsi

Akram Allahabadi

1

जासूसी वृत सीरीज

सालाज़ार की वापसी

अकरम इलाहाबादी

फरहत प्रकाशन मुंबई - भारत

2

सभी अधिकार प्रकाशक द्वारा सुरक्षित हैं।

इस उपन्यास में वर्णित सभी घटनाएँ, स्थान और पात्र काल्पनिक हैं।
इनसे किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है।
प्रकाशक और मुद्रक ऐसी किसी भी घटना के लिए जिम्मेदार नहीं हैं।

इस उपन्यास को पुनर्मुद्रण, अनुवाद या किसी अन्य उद्देश्य के लिए उपयोग करने के लिए लिखित अनुमति आवश्यक है, अन्यथा कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

प्रिंटर----फरहत प्रकाशन मुंबई - भारत

3

बिना शरीर, धड़कता सीना

"आ...आ ...आईईईई.."
प्रयोगशाला के गार्ड की एक लंबी, भयभीत चीख दूर-दूर तक सुनाई दी, और सरकारी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान के आठ डॉक्टर, जो आज सुबह से ही पुलिस मुख्यालय द्वारा विशेष अनुरोध पर भेजे गए एक अजीब, मांस विहीन और गूदेदार शव (संरचना) के टुकड़ों में अमरता के वैज्ञानिक प्रभावों की जांच कर रहे थे, प्रयोगशाला की ओर दौड़े।

वह अभी-अभी रिटायरिंग रूम में गए थे, इस काम से थककर।
वह सुबह से ही एक इंसान की छाती की गुहा का अध्ययन कर रहा था।
कमरे में घुसते ही सबसे पहले उसकी नज़र प्रयोगशाला के चौकीदार पर पड़ी।

वह ऑपरेशन टेबल के पास बेहोश पड़ा था, लेकिन जैसे ही उनकी नजर टेबल पर पड़ी, उसकी आंखें फैल गईं।
वे आश्चर्य से एक-दूसरे को देखने लगे।
टेबल पर सिर्फ पसलियों की हड्डियों वाला एक मानव सीना था।
पसलियों के ऊपर एक झिल्ली थी, जिसे डॉक्टरों ने कुछ घंटे पहले फाड़ दिया था और उसके अंदर दिल, फेफड़े, लीवर और दिल के चारों ओर लिपटे अंग बाहर झांक रहे थे।
लेकिन उस पल उन के होश ठिकाने नहीं रहे, यह देखकर कि टेबल पर रखा मानव सीने का सिर्फ वह टुकड़ा ही कांप रहा था।
उसके अंदर एक अजीब सी हलचल पैदा हो गई थी।
कुछ देर दूर खड़े रहने के बाद संस्थान के निदेशक मंडल के सदस्य डॉ. नॉर्मन टेबल के पास आए।
यह देख बाकी लोग टेबल के चारों ओर इकट्ठा हो गए और धड़कते सीने के टुकड़े को गौर से देखने लगे।

4

"क्या यह चमत्कार है या जादू?" डॉ. मोहसिन ने अपने सहकर्मियों से गंभीरता से पूछा।

‘‘भगवान जाने, आज की दुनिया में कैसी-कैसी अजीब चीजें हो रही हैं।’’ डॉ. पांडे ने भी आश्चर्य व्यक्त किया।

"छाती के सिर्फ़ एक हिस्से में यह हरकत, जिसका असर शरीर के सभी अंगों पर नहीं पड़ता और वह भी तब जब उसका शरीर कुतुब मीनार जैसी ऊंचाई से गिरा था, समझ से परे है।" डॉ. नॉर्मन भी जो अब तक गंभीरता से देखते रहे थे उसी हैरानी से टिप्पणी करने लगे।
"और फेफड़े भी सांस ले रहे हैं।" डॉ. हरीश ने कहा।

"देखो, दिल अंदर धड़क रहा है," तीसरे डॉक्टर ने कहा।

"अब इस बारे में क्या किया जाना चाहिए?"
डॉ. मोहसिन ने डॉ. नॉर्मन से पूछा।

"मुझे लगता है कि हमें तब तक इंतजार करना चाहिए जब तक वह शांत नहीं हो जाता। देखते हैं कि दिल की धड़कन के अलावा उसमें और क्या बदलाव होते हैं,"
डॉ. नॉर्मन ने सुझाव दिया।
"यह विचार अच्छा है, मैं इसका समर्थन करता हूँ।" डॉ. वाघे ने कहा।

"तो आओ, कुर्सियों पर बैठो और तमाशा देखो।" नॉर्मन ने प्लेट पकड़ते हुए यह कहा।

"कहीं उछल कर टेबल से न गिर जाए"। डॉ. हसन ने कहा।
"दिल की धड़कन इतनी तेज़ नहीं है, और फिर हम देखेंगे कि क्या होता है।"
डॉ. नॉर्मन ने जवाब दिया।
और वह मुड़ा और उसकी ओर देखा और प्रयोगशाला की कुर्सियों पर बैठ गया जो बड़ी रासायनिक परीक्षण मेज के बगल में रखी गई थीं।

"क्या पुलिस को इस बारे में सूचित किया जाना चाहिए?" डॉ. वाघे ने पूछा।
"अभी यह उचित नहीं है, हमारा शोध अधूरा है। आखिर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से हम इस अद्भुत घटना की व्याख्या कैसे करेंगे?" डॉ. नॉर्मनने वाघे की बात का खंडन किया।

5

"ठीक है, मेरी भी यही राय है," डॉ. पांडे ने सहमति जताई और सभी चुप हो गए और उस छाती की धड़कन को ध्यान से देखने लगे।

दीवार घड़ी की छोटी सुई ढाई से छह पर आ गई, लेकिन इस मानव छाती के टुकड़े की गति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। यह अभी भी उसकी अतिरिक्त गति या रुकने की प्रतिक्षा में थे।

"क्या आप चुपचाप बैठे रहेंगे?" डॉ. वाघे ने थके हुए स्वर में कहा। "कम से कम मै तो अनुमति चाहता हूं।" यह कहते हुए वे उठने लगे।

"प्रयोगशाला सहायकों, श्री सेठी और श्री अरशद को ड्यूटी पर रखा जाना चाहिए। वे रात भर इसकी निगरानी करेंगे और अगर कुछ नया होता है, तो वे हमें तुरंत फोन करके सूचित करेंगे।"
डॉ. नॉर्मन ने सुझाव दिया।

"मैं भी यही बात कहने जा रहा था।" डॉ. पांडे ने कहा।

इस सुझाव पर सभी ने सहमति जताते हुए श्री सेठी और श्री अरशद को बुलाया और उन्हें बिना शरीर के सीने की निगरानी करने की जिम्मेदारी सौंपी। पहले तो दोनों ही ऐसी विचित्र स्थिति से घबरा गए, लेकिन डॉक्टरों के साथ कुछ समय बिताने के बाद उनकी झिझक दूर हो गई।
उन्हें बताया गया कि बिना अंगों के सीने का यह टुकड़ा अभी अपने आप हिलना शुरू हुआ है, लेकिन इसकी गति एक सी ही बनी हुई है, फिर भी अगर कुछ नया हो तो वे तुरंत डॉ. नॉर्मन, डॉ. मोहसिन और डॉ. पांडे को फोन पर सूचित करें।

श्री सेठी और अनुसंधान सहायक श्री अरशद ने कार्यभार संभाला और बोर्ड के डॉक्टर अपनी कारों से अपने घरों के लिए रवाना हो गए।

यह देहविहीन छाती, जो विचित्र परिस्थितियों में या चमत्कारिक रूप से जीवित हो गई थी और धड़कने लगी थी, डॉ. सालाजार के शरीर की थी। कुतुब मीनार जैसी ऊंचाई से नीचे

6

गिरने पर उस के अंग टुकड़े-टुकड़े हो गए थे और पुलिस ने इन बिखरे अंगों को इकट्ठा करके डॉ. सालाजार की अजीबोगरीब शारीरिक स्थिति की जांच करने के लिए शोध संस्थान को सौंप दिया।
वह हड्डियों का एक जीवित कंकाल था, जिसकी छाती पर केवल एक पतली झिल्ली थी और शायद उसके अंदर उसका जीवन था।

जब वह कुतुब मीनार से गिरा, तो उसके सभी अंग अलग-अलग टूट गए और कुचल गए। मात्र उसके सीने का पिंजर और उसका सिर ही बचा था।

डॉ. सालाज़ार अपने समय के सबसे विचित्र और खतरनाक व्यक्तियों में से एक था।

कुछ साल पहले की बात है---

वह गोवा का एक जवान और खूबसूरत पुर्तगाली वैज्ञानिक था, और अपनी खूबसूरती और जवानी को अमरता देने के लिए एक विचित्र और खतरनाक वैज्ञानिक फार्मूले पर कई साल शोध और प्रयोग करने के बाद, एक दिन जब उसने खुद पर प्रयोग किया, तो उसे सचमुच अमरता मिल गई, लेकिन जिस जवानी और खूबसूरती के लिए उसने मौत पर विजय पाई थी, वह उससे छिन गई।
जब उसने कई वर्षों के प्रयोग के सार से तैयार तरल पदार्थ की पहली खुराक ली, तो आंतरिक प्रणाली में अप्रत्याशित परिवर्तन के साथ-साथ उसके शरीर का सारा मांस पिघल कर टपक गया और वह एक जीवित कंकाल बन गया।

उसका रूप इतना भयानक हो गया था कि कोई भी उसे उसके असली रूप में देखता तो डर से बेहोश हो जाता।
प्रयोग के इस अजीब प्रतिक्रिया ने डॉ. सालाजार को आधा पागल कर दिया।
वही अनगिनत लड़कियाँ जो उसकी सुंदरता और आकर्षण पर मोहित हुआ करती थीं, आज उसकी ओर देख भी नहीं सकती थीं। इस भावना ने उसके मन में एक अतिवादी विचार उत्पन्न किया और उसने बम्बई गुप्तचर विभाग के भण्डार कक्ष से स्कॉटलैंड यार्ड का एक बड़ा, परिष्कृत और सम्पूर्ण मेकअप बॉक्स चुरा लिया और उसकी सहायता से उसने अपनी डरावनी आकृति पर आकर्षक मेकअप किया और हर सुन्दर लड़की या स्त्री को अपनी ओर आकर्षित करके एकांत में ले जाकर उसकी हत्या करना आरम्भ कर दिया।

(विस्तार पूर्वक जानने के लिए अकरम इलाहाबादी का सालाजार सीरीज का पहला उपन्यास **डॉक्टर सालाजार** पढ़ें)

7

एक विचित्र और रहस्यमय व्यक्तित्व को खत्म करने के लिए सरकार ने मुंबई प्रांतीय गुप्तचर विभाग के सबसे प्रसिद्ध जासूस खान को विशेष रूप से नियुक्त किया था और खान ने आखिरकार सालाजार को घेर लिया और उसे कुतुब मीनार ले गया, जहां खान के साथ अंतिम लड़ाई में सालाजार मीनार से गिर गया और मारा गया।
पुलिस ने उसके शरीर के अंगों को सावधानीपूर्वक एकत्र किया था, लेकिन बाद में उसके कुछ विशेष अंग, जैसे छाती और सिर, अमरता के संकेतों के कारण वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए ले जाए गए।

और इसे अनुसंधान संस्थान को सौंप दिया गया।

सालाजार की हड्डियाँ जिन पर कुछ मोटी नसें एक-दूसरे से चिपकी हुई थीं, पुलिस मुख्यालय के एक विशेष कमरे में रखी हुई थीं।
सालाजार का अध्ययन मस्तिष्क अनुसंधान विभाग द्वारा किया जा रहा था।
और इस समय उसे इस कमरे से जुड़े एक अन्य कमरे में कांच के एक डिब्बे में रखा गया था।

**

8

पहरेदार अंधे हो गये

अभी सुबह का समय था।
पुलिस मुख्यालय के कार्यालय अभी खुल ही रहे थे कि तभी एक्सचेंज पर रिसर्च इंस्टीट्यूट से फोन आया।

"सुपरिंटेंडेंट हजूर अहमद खान, कृपया,"
वहां से आवाज आई।

एक्सचेंज संचालक ने ओके कहा और फोन अपराध शाखा के अधीक्षक हजूर अहमद खान के नंबर पर मिला दिया।

अधीक्षक खान अभी नाश्ता करके बैठे ही थे और अखबार पढ़ रहे थे, तभी फोन की घंटी बजी।

"सर, आपके लिए एक फ़ोन है,"
अर्दली ने आगे आकर कहा।
और खान सोफ़े से उठकर लिविंग रूम में चला गया, जहाँ फ़ोन दीवार के सामने एक खूबसूरत लकड़ी के स्टैंड पर रखा हुआ था।

"हैलो," खान ने रिसीवर उठाते हुए कहा।

"मैं डॉ. नॉर्मन बोल रहा हूँ,कुछ अजीब हुआ है। बेहतर होगा कि आप तुरंत यहां आएँ"
दूसरी तरफ से आवाज़ आई।

"आखिर हुआ क्या है,कुछ बताइए भी?" खान ने पूछा।

"सालाज़ार की छाती का वह हिस्सा कल आप ही आप सक्रिय हो गया था, और आज सुबह से वह यहां से गायब है,,प्रयोगशाला से गायब हो गया" डॉ. नॉर्मन ने उत्तर दिया.

"गायब हो गया? सक्रिय हो गया?" खान ने आश्चर्य से दोहराया।

"हाँ,, यहाँ आकर तुम सब कुछ समझ सकोगे," डॉ. नॉर्मन ने उधर से कहा।

"ठीक है, मैं आ रहा हूँ"

यह कहते हुए खान ने रिसीवर रख दिया। लिविंग रूम में जहां उसने लापरवाही से अपना कोट हैंगर पर लटका दिया था, उसे उसने अपने कंधों पर रखा और नौकर को कुछ ज़रूरी निर्देश देकर बाहर आ गया।
उसकी लंबी काली फ़ोर्ड कार गए के पास खड़ी थी।
आज काफ़ी ठंड थी।
हवा भी इतनी ठंडी हो रही थी कि गर्म कपड़े पहनकर बाहर निकलना ज़रूरी था।
उस समय खान ने अपने हाथों में पीले ऊनी दस्ताने भी पहन रखे थे।
वह कार को अभी स्टार्ट कर ही रहा था कि पीछे से किसी की आवाज़ ने उसे चौंका दिया।
कार की पिछली सीट पर पहले से ही कोई बैठा हुआ था।

"अपने हाथ ऊपर कर लो" उसने पीछे बैठे इंसान की आवाज सुनी।

खान ने दोनों हाथ उठा दिए।

"सारे पैसे अपनी जेब में निकाल कर रख दीजिए, मैंने आज सुबह से एक भी सिगरेट नहीं पी है।"

पीछे से फिर आवाज़ आई.

"मर्दूद "
खां ने यह कह कर हाथ घूमा दिया था लेकिन बाले अपना सर नीचे कर चुका था, अन्यथा खान के मुक्के से उसकी खोपड़ी उड़ जाती।

"अरे, अरे, आपने तो अपनी मुक्केबाजी का हुनर दिखाना शुरू कर दिया। मैं सिगरेट के लिए पैसे मांग रहा था,"
सार्जेंट बाले ने कहा, उसका चेहरा बच्चों की तरह लटका हुआ था।

"शुक्र है कि तुमने रोना-धोना नहीं किया और रिश्वत की भीख नहीं मांगी,बेवकूफ, तुम जामे से बाहर होने लगे हो"

"महामहिम, मैं एक शुद्ध पश्चिमी सज्जन व्यक्ति हूं, मैं जामे नहीं पायजामें पहनता हूं।

"बकवास मत करो,,बैठना है तो चुपचाप बैठो " खान ने कहा और गाड़ी स्टार्ट कर दिया और वह गेट से बाहर आकर बंगले के नीचे से गुजर रही सड़क पर आ गई।

"लेकिन आप आज सुबह कहाँ जा रहे हैं?"

10

"डॉ. सालाज़ार वापस आ गया है, उससे मिलने।"

"डॉ. सा ...ला....ज़ा...र " बाले आश्चर्य से उछल पड़ा "अरे वाह, आपने तो मुझे कोई दूध पीता बच्चा समझा है, जो मैं यह सुन कर बेवकूफ बन जाऊंगा?"..."उस मुर्दे आदमी के तो कुतुबमीनार से गिरकर बहत्तर टुकड़े हो चुके है,हुंह"
बाले ने बड़ी गरिमा के साथ उत्तर दिया, यह सोचते हुए कि खान का यह झूठ है या मजाक।

"चल तो रहे ही हैं बेटे, खुद ही देख लेना," खान ने मुस्कान के साथ कहा।

"तो क्या यह सच है?... लेकिन यह कैसे संभव है?... वह पूरी तरह से टूट चुका था,... फिर वह ज़िंदा कैसे है?
बाले बड़बड़ाने लगा।

"मेरे प्यारे मूर्ख, वह जीवित वापस नहीं आया, क्योंकि उसका सीने का पिंजर, जिसे हमने अनुसंधान संस्थान को सौंप दिया था, गायब हो गया।" खान ने कहा

बाले ने पूछा, "पिंजर ... लेकिन उसे वहां से गायब करने का क्या लाभ है?"

"गायब करने वाले तुमसे अधिक जानते होंगे"। खान ने संक्षेप में उत्तर दिया।
"अजीब बात है"
बाले ने यह कह कर गरदन टेढ़ी कर ली और खान विचारों में खोया हुआ गाड़ी दौड़ने में लगा रहा ।

जैसे ही कार संस्थान के प्रवेश द्वार पर रुकी, ड्राइव वे पर खड़े तीन डॉक्टर कार की ओर दौड़े।

"आइये, मि. खान."
डॉ. मोहसिन ने अपना हाथ आगे बढ़ाया।
खान कार से उतरकर उनके साथ हो लिया।
बाले से किसी ने पूछा तक नहीं था, इसलिए वह चेहरे पर कुछ रूखा भाव लिए धीरे-धीरे उनके पीछे चल पड़ा।

11

"डॉक्टर नॉर्मन कहाँ हैं?" खान ने डॉ. हसन से पूछा।

"वे अनुसंधान कक्ष में हैं," डॉक्टर ने उत्तर दिया।

शोध कक्ष का दरवाज़ा खुला था।
दो-तीन आदमी बाहर खड़े होकर बातें कर रहे थे।
अंदर घुसते ही खान ने देखा कि डॉ. नॉर्मन कुर्सी पर दरवाज़े की तरफ़ पीठ करके बैठे हैं और सिगरेट का धुआँ उड़ा रहे हैं।
जब उसने उनके कदमों की आवाज़ सुनी तो वह चौंक गया।

"आप आ गए " उसने खान के पास आकर पूछा।

"इसे देखो।"
खान से हाथ मिलाते हुए, उसने प्रयोगशाला सहायक श्री सेठी की ओर इशारा किया, जो एक तरफ कुर्सी पर बैठे थे, और दूसरे सहायक श्री अरशद, जो दूसरी कुर्सी पर बैठे थे।
वे दोनों दो कुर्सियों पर एकदम शांत बैठे थे।

खान ने पूछा, "उन्हें क्या हुआ?"

डॉ. नॉर्मन ने कहा,
"कल शाम हमने सालाजार की धड़कती छाती का केस उसके जिम्मे छोड़ दिया था और वह पूरी रात उस पर नजर रखता रहा, लेकिन जब मैं आज सुबह यहां पहुंचा तो सालाजार की छाती का पिंजर अनुसंधान कक्ष से गायब था और सालाजार का सिर बगल वाले कक्ष से गायब था, और ये दोनों मेज से कुछ दूरी पर बेहोश पड़े थे।"

"लेकिन क्या अब वे होश में हैं?" अधीक्षक खान ने पूछा।

डॉ. ना रमन ने जवाब दिया, "दोनों पूरी तरह अंधे हो गए हैं , वह कुछ भी नहीं देख सकते।"
"अंधा? बाले चौंक गया।

"हाँ, "
"डॉक्टर, भगवान के लिए हमारी दृष्टि वापस कर दो" उनमें से एक बड़बड़ाया ।

"लेकिन यह सब हुआ कैसे?" खान ने उनकी ओर मुड़कर कहा।

12

"हम लोग रात के दो बजे तक रिसर्च रूम में बैठे रहे और सालाजार की धड़कती छाती पर नज़र रखते रहे , दरवाज़े के बाहर संस्थान का एक नाइट अर्दली ड्यूटी पर था और बिल्डिंग के बाहर चौकीदार गश्त कर रहे थे, ठीक दस बजकर दो मिनट पर अचानक दरवाज़े पर दस्तक हुई, मि. सेठी ने कहा, "शायद रोली है, वह चाय का मग लेकर आएगा।" फिर भी हम दोनों उठकर दरवाज़े की तरफ़ चले गए, लेकिन जैसे ही हमने दरवाज़ा खोला, हमें बस इतना याद है कि हमारे सामने एक काली परछाई खड़ी थी और उसके हाथ में टॉर्च जैसी कोई चीज़ थी। जैसे ही वह हमारे सामने आई, उस वस्तु से एक बहुत तेज़ रोशनी निकली और एक के बाद एक हमारी आँखों पर पड़ी और एक पल के लिए हमारी आँखें चौंधिया गईं, लेकिन तुरंत ही हमें चक्कर आने लगे,हमें बस इतना याद है कि वह काली परछाई हमें धकेलती हुई तेज़ी से प्रवेश द्वार की तरफ़ आ रही थी, इसलिए हमने इस अर्ध-चेतन अवस्था में भी उसका पीछा करने की कोशिश की, लेकिन जैसे ही हम टेबल के करीब पहुँचे, हम गिर पड़े, इसके बाद जब हमारी आंखें खुलीं तो डॉ. नॉर्मन और कुछ अन्य डॉक्टरों की आवाजें हमारे कानों में गूंजने लगीं, लेकिन हमारी आंखों के सामने अंधेरा छा गया था,, हमें लगा कि हमने अपनी दृष्टि खो दी है" अरशद ने इतना कहकर अपनी बात समाप्त की।

सुपरिंटेंडेंट खान ने जेब से माचिस निकाली, माचिस जलाई और उसे अपने सामने रखा, लेकिन उसने पलक तक नहीं झपकाई।

फिर वह उसकी आँखों में गौर से देखने लगा।
वे खुली थीं, लेकिन उसकी आँखों और पुतलियों की चमक गायब हो गई थी।

खान ने पुष्टि की, "उनकी देखने की शक्ति सचमुच गायब हो गयी है।"

डॉ. नॉर्मन ने दुख से भरे स्वर में कहा, "यह बहुत दुखद घटना है।"

"लेकिन सालाज़ार के धड़कते पिंजर का गायब होना भी कम महत्वपूर्ण नहीं है, डॉक्टर, मुझे डर है कि एक नया अँधेरा बनेगा अब, या .फिर खुदा ही जाने" बोलते हुए वह रुक गया।

13
"या ...क्या?" नॉर्मन ने पूछा
"कुछ नहीं, कुछ नहीं,हाँ, बताओ, कि आप यहाँ कब आये थे?" सुपरिंटेंडेंट खान ने पूछा।

डॉ. नारमन ने कहा, "मुझे लगता है कि यह 9 बजे से कुछ मिनट पहले की बात है।"

"आपके साथ कौन था?"

"मैं उस समय अकेला था। रात भर अरशद साहब या सेठी साहब की तरफ से कोई रिपोर्ट नहीं मिली थी, इसलिए मैं चिंतित था। मैं सुबह-सुबह घर से निकल गया था। "डॉ. नॉर्मन ने बताया।

खान ने पूछा, "जब आप आये थे तो बाहर का प्रवेश द्वार खुला था या बंद?"

डॉ. ना रमन ने बताया, " बाहर से बंद था।"

"और अनुसंधान कक्ष का दरवाज़ा?" खान ने फिर पूछा।

"शायद वह भी बंद था," डॉक्टर ने थोड़ी हिचकिचाहट के साथ कहा।

"शायद?" खान ने हल्की मुस्कान के साथ कहा।

"हाँ। मुझे ठीक से याद नहीं आ रहा है, या शायद यह खुला था।" डॉक्टर ने दिमाग पर जोरदेते हुए कहा.

"क्या आपने संस्थान के गार्ड से इसके लिए पूछा था?"

"नहीं, मैं मिस्टर अरशद और सेठी साहब को इस हालत में देखकर थोड़ा डर गया था"
"इसके अलावा, सालाज़ार के पिंजर के गायब होने ने मुझे मजबूर कर दिया था कि सबसे पहले आपसे संपर्क करूं"

"मजबूर? "खान ने मुस्कुराते हुए पूछा, उसके शब्द पकड़ लिए थे।

14

"मेरा मतलब है, मुझे उस समय यही बात समझ में आई।"
"लेकिन दरवाज़ा बाहर से कैसे बंद था, जबकि चौकीदारों को पता था कि मिस्टर अरशद और मिस्टर सेठी अंदर हैं?"
खान ने एक तीखा सवाल पूछा।

इस पर डॉ. नॉर्मन घबरा गया।

डॉक्टर ने शांतिपूर्वक उत्तर दिया, "मैंने खुद ही सावधानीवश उसे बाहरी प्रवेश द्वार बंद रखने का निर्देश दिया था।"

"क्या अनुसंधान कक्ष का दरवाज़ा अंदर से बंद था या बाहर से बंद था?"

"बाहर से," डॉक्टर ने रुकते हुए जवाब दिया।

"लेकिन तुम्हें यह ठीक से याद नहीं था?" खान ने कहा।

"मेरा मतलब है, शायद ।"
डॉक्टर ने मुस्कुराने की कोशिश की।

"आपने डॉ. मोहसिन और अन्य साथियों को कब सूचित किया?"
"पुलिस को फोन करने के बाद "
डॉक्टर ने बताया,
खान ने फिर पूछा, "क्या चौकीदारों ने रात में इमारत के आसपास कहीं कोई छाया या आकृति देखी?"

"मैंने इन लोगों से पूछा है। वे कहते हैं कि हमने रात में एक भी चिड़ीया का बच्चा तक नहीं देखा,"
डॉक्टर ने खुद चौकीदारों का बयान दोहराया।

इस पर अधीक्षक खान ने अपना सिर हिलाया, और चुप हो गए फिर कमरे की सावधानीपूर्वक जांच करने लगे।

मेज़ के किनारों पर हल्के-हल्के उँगलियों के निशान थे, जिन पर एक्पोजर डाल करके उनकी तस्वीरें ली गईं।
फर्श आदि की भी जाँच की गई, लेकिन कुछ भी उपयोगी नहीं मिला।
उसके बाद, वह अगले कमरे में गया, जो कंकाल- विषय पढ़ने का कमरा था।
वहाँ, एक कांच के केस का दरवाज़ा थोड़ा सा खुला था और डॉक्टर के अनुसार, उसमें सालाज़ार का सिर रखा हुआ था।

15

शीशे के अन्य केसों में, कई मानव खोपड़ियाँ रखी गई थीं, जिनके सामने कांच पर अलग-अलग लेबल लगे थे।
खान ने पाया कि इस कमरे के दरवाज़े अंदर से बंद थे, सिवाय उस दरवाज़े के जो अनुसंधान कक्ष में खुलता था।
इस निरीक्षण के बाद, वह अरशद और सेठी की ओर आकर्षित हुआ ।

खान ने डॉ. नॉर्मन से पूछा, "आपको क्या लगता है कि किस तरह का प्रकाश आंखों को इस तरह खत्म कर सकता है?"

"प्रकाश?" उसने सोच-विचार कर कहा, "मेरे विचार से, केवल रेडियम ही ऐसी चीज़ है जिसे अंधेरे में घूरते रहने से आँखें खराब हो जाती है।" डॉक्टर ने उत्तर दिया"
"लेकिन इतनी जल्दी यह असंभव है "वह फिर बोला।

खान ने अनुमान लगाया, "हो सकता है कि इसका कोई उन्नत रूप हो?"

"मुझे समझ नहीं आया" डॉक्टर उसकी राय से असहमत था।

"ठीक है, लेकिन क्या उनका इलाज संभव नहीं है?" खान ने पूछा।

"आँखों और पुतलियों की चमक गायब हो जाने के बाद ऐसा संभव नहीं है" डॉक्टरनॉर्मन ने कहा.

"आप क्या सोचते हैं, डॉ. मोहसिन?'' अधीक्षक खान ने डॉ. मोहसिन से पूछा और उनका फीडबैक मांगा.

डॉ. मोहसिन ने गंभीरता से जवाब दिया,
"मैं इस संबंध में कुछ नहीं कहूंगा, क्योंकि मुझे दृष्टि हानि के वैज्ञानिक प्रभावों के विषय में अधिक जानकारी नहीं है।"

‘‘आपकी क्या राय है, डॉ. पांडे?'' वह तीसरी तरफ मुड़ा।

डॉ. पांडे ने जवाब दिया, "मैं भी डॉ. मोहसिन जैसी ही बात कहूंगा।"

बाकी डॉक्टर भी चुप थे, इसलिए खान ने आगे कोई सवाल नहीं पूछा।

"क्या हमारी आँखें कभी वापस नहीं आएगी, डॉ. नॉर्मन?", श्री सेठी ने निराश स्वर में डॉ. नॉर्मन से पूछा।

"क्यों नहीं, क्यों नहीं...इसके लिए हर संभव प्रयास किया जाएगा,"
डॉक्टर ने उसे झूठी तसल्ली देते हुए कहा। लेकिन वह ठंडी आह भरकर रह गया।

खान ने अपना सारा काम लगभग पूरा कर लिया था।
उस समय परिस्थिति का और अधिक अध्ययन करना संभव नहीं था, इसलिए उसने डॉ. नॉर्मन, चौकीदार और श्री सेठी और श्री अरशद तथा बाकी डॉक्टरों से विदा ली और वहां से चला गया।
इस दौरान बाले चुप रहा।
बरामदे में उतरते ही उसकी जुबान खुल गई।

"आप शायद मुझे अपना अर्दली समझते हैं?" उसने गरम लहजे में कहा।

"यह तुम्हारी हीन भावना है। तुमने सचमुच बहुत विनम्र स्वभाव अपना लिया है"
खान ने मुस्कुरा कर कहा.

"इस सुअर पर लानत हो,,जो अब आपकी सेवा में उल्लू की तरह केवल अपनी आँखें खोलकर उपस्थित रहे।"
बाले ने खुद को दो तीन मोटे, लेकिन सभ्य प्रकार के गाली दिए।

"तुम एक ही समय में उल्लू और सुअर कैसे हो सकते हो? क्या तुम कोई नई तकनीक लेकर आए हो?"
खान ने कार में बैठते हुए पूछा और फिर कार को फिर से चालू कर दिया।

"यह सब आपकी कुसंगति का प्रभाव है," बाले ने रोते ढंग से बात कहते हुए मुंह घुमा लिया

"ओह हाँ," खान चौंका, उसे कुछ याद आया। उसे नहीं पता था कि उसके दिमाग में क्या विचार आया, इसलिए उसने अपनी कार के डैशबोर्ड में लगे वायरलेस कम्युनिकेशन सेट का स्विच

ऑन किया और एक हाथ से पास के डिब्बे में रखा माउथपीस उठाकर कर मुंह से लगा लिया दिया और दूसरे हाथ से कार का स्टीयरिंग व्हील पकड़ रखा था।

17

"हेलो, पुलिस मुख्यालय ...पुलिस मुख्यालय हेलो "

"पुलिस मुख्यालय, विशेष संदेश शाखा, हैलो, पुलिस मुख्यालय बोल रहा हूँ," डैशबोर्ड से एक धीमी आवाज़ आई।

"हेलो, खान हियर, गार्डेड प्रॉपर्टी रूम पर कड़ा पहरा लगा दिया जाए फौरन,,,मैसेज फॉर इंस्पेक्टर राजेंद्र" गार्डेड प्रॉपर्टी रूम पर कड़ा पहरा लगा दिया जाए इट्स अर्जेंट"
खान ने अपने निर्देश दोहराए।

"मैसेज रिसीव्ड,,,,, ओके सर," डैशबोर्ड से फिर से आवाज आई और खान ने स्विच बंद कर दिया और माउथपीस रख दिया।

"क्या पुलिस मुख्यालय में भी चोरी का खतरा है?" बाले ने व्यंग्यात्मक ढंग में पूछा।

खान ने जवाब दिया, "अब मुझे तुम्हारे लिए खतरा है। तुम्हारे जैसे युवा मूर्खों का अक्सर चोर सर्दियों में अचार बनाते हैं।"

"शायद आपको अभी मेरी प्रशंसा करने के लिए सही शब्द नहीं मिल रहे हैं।"

"खैर, बस ऐसे ही अपने दिल को तसल्ली दे लो”

"लेकिन यह गार्डेड प्रॉपर्टी रूम की रखवाली क्यों ?"

"सलाज़ार के शरीर के बाकी अंग वहाँ रखे हुए हैं।" खान को उसको बात याद दिलाया।

"वे बेकार हड्डियाँ?" बाले ने विषैली मुस्कान के साथ कहा।
"कुछ बेकार वस्तुओं की उपयोगिता जब सामने आती है तो बुद्धि कीर्तन करने लगती है बेटे" खान ने कार अपने बंगले की ओर मोड़ते हुए कहा।

18

सालाजार की हड्डियाँ

"इस मुर्दे के पिंजर की चोरी के बारे में आप क्या सोचते हैं?" उसने खान के कमरे में सोफे पर बैठते हुए पूछा।

"यही कि चोर तुम्हारी तरह मूर्ख नहीं था, वह सपाट जूते और दस्ताने पहनकर आया था, वरना तुम उसके पैरों की धूल झाड़ते देखे जाते,"

खान ने मेज पर पड़ी ऐशट्रे को अपनी ओर खींचते हुए कहा।

"तो आपका मतलब है कि आप कहीं छुपकर उसे देख रहे थे? यह कहते हुए बाले ने बुरा सा मुँह बनाया.

"तुम्हारा मूर्ख दिमाग और क्या सोचेगा?' खान ने उसी अंदाज में जवाब दिया।

"ठीक है, यह तो ठीक है, लेकिन आपने यह तीर किस आधार पर मारा?" बाले ने कहा।

"दरवाजे पर, मेज पर, दूसरे कमरे के दरवाजे पर, अंदर के शीशे के केस पर कहीं भी किसी के उंगलियों के निशान नहीं थे और दूसरे कमरे में फर्श पर जमी धूल की एक पतली परत में एक जगह जूते का निशान बन रहा था"

खान ने बताना शुरू किया।

"लेकिन आपने इसका प्रिंटआउट या फोटो नहीं लिया?"

"यह आवश्यक नहीं था, मैंने बस इसे मापा था।"

"ठीक है, मान लेते हैं कि चोर जूते और दस्ताने पहने हुए था, लेकिन इससे हमें क्या सुराग मिलता है?" बाले ने पूछा।

"यह एक अच्छा सवाल था। अच्छा, बाले अगर ऐसा जूता तुम्हारे सिर पर रख दिया जाए, तो कितने बाल बचेंगे?"

"मुझे यह सम्मान नहीं चाहिए, यह सम्मान तो आप को ही मिलनी चाहिए"

बाले ने अपनी उदासीनता व्यक्त की।

"ठीक है, यह बाद में देखा जाएगा, पहले तुम कहीं से ऐसा ही कोई जूता ढूंढ़कर लाओ।"

"मैं? ओह, मैं समझ गया। शायद वह कोई खास किस्म का आदमी है"

"बिल्कुल.... बराबर पैर के तलवे और एड़ी सपाट हो ऐसे जूते या तो स्कीपर या केवल पर्वतारोही ही पहनते हैं"
खान ने कहा।

"हालांकि दोनों का इस स्थान से कोई संबंध नहीं है"

"नहीं, बाले इस प्रकार के जूते की तलाश करो। इस जूते की बनावट एक अलग प्रकार की है, इसलिए इससे सुराग में मदद मिल सकती है।"

"बहुत बढ़िया... आज मैं बाटा से लेकर पटेल ब्रदर्स तक की दुकानों पर जाकर देखूंगा। भगवान आपको मनचाही चीज दे, मैं आपकी प्रिया का ओह , सारी प्रिय जूता ढूंढ कर लाऊंगा और आपकी सेवा कर सकूंगा"

"लाऊंगा नहीं.... लाना ही है"

मैं यह नहीं कर सकता, वह करता है।

"तो, क्या आपको लगता है कि मैं अलादीन के चिराग का जिन्न हूँ या सिंड्रेला के राजकुमार का उल्लू मंत्री?"

"दोनों ही रूप में तुम बदमाश लगोगे, अच्छा होगा कि समझदारी से बात करो"

"उचित है ...यह सेवक अपनी सेवा से पछताता हुआ, सिंदबाद का रूप धारण करके आपके जूते की खोज में निकलेगा"बाले ने बात को मानते हुए कहा

फिर ठंडी सांस ले कर बोला, "काश, आप सिंड्रेला होते तो, कितना अच्छा होता...वह जूता आसानी से मिल जाता,"

"अब यहाँ से भाग ही जाओ, तुम नहीं तो मैं तुम्हारा भेजा ठीक कर दूँगा"

"बहुत अच्छा, सरकार , शासक का परिवार, बड़े ही नामदार, काला बुखार, फीका खुमार" वह दरवाजे की ओर चलते हुए बड़बड़ाया।

20

खान ने उसे डांटते हुए कहा, "मैं इस समय इस बचकानी बकवास के मूड में नहीं हूं।"

"मैं भी अभी काम करने के मूड में नहीं हूं।"

"तो चले जाओ यहाँ से, मेरा समय बर्बाद मत करो"
खान ने कहा और गुस्से में घूंसा बना लिया
"अरे, यह बात है," बाले ने कहा और बाहर चला गया।

****

दोपहर का खाना खाने के बाद खान भी अपनी गाड़ी लेकर निकल पड़ा ,कुछ देर तक विभिन्न इलाकों से कार घुमाने के बाद जब वह शाम चार बजे पुलिस मुख्यालय पहुंचा तो वहां सीआईडी के अधीक्षक भाईजी भी मौजूद थे।

"क्यों, इस गार्डेड प्रॉपर्टी रूम पर पहरा क्यों है? क्या साला ज़ार की हड्डियों को भी डर लगने लगा है?" भाईजी ने खान से हाथ मिलाते हुए कहा।

"डर तो नहीं, लेकिन उनके गायब हो जाने का खतरा जरूर है।"

खान ने जवाब दिया.

भाईजी ने अविश्वास से कहा, "किस में इतनी हिम्मत है कि वह पुलिस मुख्यालय में घुसकर चोरी कर सके।"

"जो लोग गार्डों को अंधा कर सकते हैं और उसके पिंजर को उड़ाकर संस्थान से बाहर निकाल सकते हैं," अधीक्षक खान ने कहा,
"वह यहां भी पहुंच सकते हैं।"

"लेकिन इसका क्या होगा? सालाजार की कहानी तो बहुत पहले ही समाप्त हो चुकी है।"

"मुझे भी यह बात अभी समझ में नहीं आई, लेकिन क्या यह अजीब नहीं है कि उसका पिंजर क्रियाशील होने लगा था? अगर आठ डॉक्टर किसी मरे हुए व्यक्ति को अपनी आँखों से देखते,

अगर मैंने छाती के उस हिस्से को बिना अंगों के जीवित और धड़कते हुए न देखा होता तो शायद आज भी मुझे इस बात पर यकीन करना मुश्किल होता, लेकिन वे आठ उच्च और गंभीर वैज्ञानिक एक ही समय में किसी भ्रम का शिकार नहीं हो सकते कुछ विचित्र तो जरूर हो रही होंगी और देर-सवेर कोई अद्भुत घटना जरूर घटेगी" खान ने भविष्यवाणी की ।

"जो भी हो, दोस्त, कभी-कभी तुम जो कहते हो, वह सिर्फ़ तुम ही समझ सकते हो, पहले कुछ नहीं हुआ, विशेषतयाः सालाज़ार के मामले में, बहुत कम लोग जानते हैं कि उसका व्यक्तित्व वास्तव में कितना रहस्यमय था,,"

यह कहते हुए अधीक्षक भाई जी उठे और अपनी पतलून की दोनों जेबों में हाथ डालते हुए बरामदे की ओर चल दिए।

खान अपने कमरे से बाहर निकले और प्रॉपर्टी रूम की ओर चल दिए।

प्रॉपर्टी रूम में ड्यूटी पर तैनात हथियारबंद कांस्टेबल ने उन्हें देख लिया, और सब सावधान हो गए
सब-इंस्पेक्टर इसरार अहमद मौजूद थे।

"सब ठीक है? कोई नई बात तो नहीं?" खान ने असरार से पूछा।

"जी,,, अभी तक कुछ नहीं हुआ है, हड्डियां अंदर सुरक्षित हैं और कमरे पर कड़ी निगरानी रखी जा रही है" इसरार अहमद ने कहा।

उसके बाद खान अंदर गया जहां अलग स्टील के केस में सालाजार की हड्डियों को अपनी आंखों से देखने के बाद उन्हें उन्हें कुछ आवश्यक निर्देश दे कर वापस चला आया।

दोपहर हो चुकी थी बाले को दुकान-दुकान जाकर जूते ढूंढते हुए उसने बाटा से लेकर फ्लेक्स और हिमालय स्टोर तक ढूँढा, लेकिन खान के निर्देशानुसार उसे कहीं भी फ्लैट जूते नहीं मिले।

सदर बाजार में बाटा शूज स्टोर का सेल्समैन उसे बहुत देर तक क्रेप और गेम्स शू के अनगिनत

22

डिज़ाइन दिखाने के बाद, नाराज़ हो गया।

" हर किसी जूते की एड़ी में हल्का सा गढ़ा होता ही है,तुम्हें आखिर क्या चाहिए? "- उसने थके हुए स्वर में कहा।
"फ्लैट जूते का मतलब ये तो है नहीं कि बिना एड़ी वाले जूते हों"

"अरे, तुम अभी भी नहीं समझे, मेरे भाई," बाले ने कहा। " मेरा बॉस ऐसा जूता मांगता है जो तुम्हारे सिर पर पड़े तो तुम्हारे पूरे सिर में एक जैसा डिज़ाइन बन जाए,"

बाले ने दोनों हाथ हिलाते हुए कहा और उठ खड़ा हुआ।

"मेरे सिर के ऊपर "- सेल्समैन कुछ कठोर स्वर में बोला।

"सच में नहीं, मेरे भाई... मैं तो बस एक उदाहरण दे रहा था, तुम बुरा मत मानो " बाले ने उसे बहलाना चाहा, पर वह उसे खा जाने वाली निगाहों से देखता रहा और वापस चला गया। शायद वह कंपनी के आदेश से मजबूर था कि ग्राहकों के साथ नरमी से पेश आए, वरना वह उसे कच्चा ही चबा जाता।

स्टोर् से निकलकर वह सदर बाज़ार की चौड़ी सड़क पर चलने लगा।

सड़क पर चलते हुए उसकी नज़र अचानक एक दुकान के साइनबोर्ड पर पड़ी, जिस पर लिखा था, स्केटिंग स्टोर्स।
अंदर घुसते ही उसे दरवाज़े पर फ़िट हो रहे जूतों के बीच एक नए डिज़ाइन का जूता दिखा।
उसने उन्हें फिर से देखा।

इन जूतों का निचला हिस्सा बिल्कुल चिकना था, एड़ी और तलवे की तरह, सब एक जैसे चिकने और चमकदार।
उसने उन्हें पहनकर देखा।

उनमें चलने पर कोई आवाज़ नहीं आ रही थी। उनका ऊपरी हिस्सा सफ़ेद कैनवास का था। जूते मुलायम और हल्के थे।

वाले ने बड़े अनमने भाव से अपनी जेब पर रोते हुए एक जोड़ी जूते खरीदे, जिसके लिए उसे 20 रुपये देने पड़े।
वह जूते लेकर सीधे खान के बंगले की ओर चल पड़े, लेकिन बंगले पर पहुंचकर उस ने पाया कि सुपरिंटेंडेंट खान पुणे चले गए हैं।

23

खान के अचानक पुणे चले जाने से वह परेशान था।
उसने घर के नौकर गुलाम रसूल से फिर पूछा कि क्या उसने कोई निर्देश दिया था, लेकिन गुलाम रसूल ने अनभिज्ञता दर्शाया।

धैर्य का घूंट पीने को मजबूर होकर बाले ने मान लिया कि यह पैसे किसी दोस्त को उधार दिए गए हैं।
उसने कपड़े बदले और टहलने चला गया।
उसके शाम के मनोरंजन का केंद्र मुख्यतः एवरग्रीन होटल था, जहाँ उसे मिस शीला पेगी का नृत्य बहुत पसंद था, जो जेम्स वाल्टर के ऑर्केस्ट्रा के साथ प्रदर्शन करती थी।
और केवल नृत्य ही नहीं, बल्कि उसे यह युवा, सुंदर और गोल चेहरे वाली नर्तकी भी बहुत पसंद थी।
वह वहाँ केवल एक दर्शक, एक अजनबी के रूप में जाता था, और आज तक कोई यह पता नहीं लगा पाया था कि वह कौन था।
शीला पेगी जब उसे देखती तो मुस्कुराती, और बाले कभी-कभी सबकी नज़रों से बचकर उसका मज़ाक भी उड़ाता, लेकिन वह उसे एक ज़िंदादिल नौजवान समझती थी।
वह उसके रूप-रंग से परिचित हो गई थी, लेकिन उससे अधिक निकटता का अवसर अभी नहीं दिया था।
अक्सर, जब वह नृत्य करते हुए उसके करीब आती, तो वे दोनों एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराते और बाले का मन प्रफुल्लित हो जाता।

शीला नाच रही थीं और जेम्स वाल्टर का ऑर्केस्ट्रा संगीत हॉल में बिखरा हुआ , उस के नृत्य के साथ झूम रहा था।
कुछ लोग खाते हुए नाच रहे थे, कुछ लोग शराब पीते हुए, लेकिन बाले जबरदस्ती झूम रहा था।

नृत्य समाप्त हो गया, ऑर्केस्ट्रा शांत हो गया, लेकिन वह अभी भी उस कुर्सी पर बैठा था, झूम रहा था।

"क्या तुम्हें मेरा डांस बहुत पसंद आया?"
शीला की आवाज सुनाई दी।
"डां....स, ओह हाँ, क्या कहने आपके डांस के,,, मिस..? "
वह अपना सर खुजाते हुए उसके नाम के बारे में सोचने लगा.

"शीला". वह .हँसकर बोली, "जैसे बेचारों को मेरा नाम भी नहीं पता।"

24

" तुम्हारा नाम जेम्स वाल्टर का ऑर्केस्ट्रा की कसम, तुम्हारा नाम हमेशा मेरे दिल में रहता है" बाले अपनी असलियत पर आ गया ।

"देखो, हम अभी एक दूसरे को बहुत अच्छी तरह से परिचित नहीं हैं" वह थोड़ा गंभीरता से बोली ।

"परिचित?... तुम भूल गई होंगी, वरना मैं तुम्हें तुम्हारे पिछले जन्म से जानता हूँ, जब तुम पहली बार मरूद्यान(नखलिस्तान/मरुस्थल के बीच के बने प्राकृतिक हरित क्षेत्र) में पैदा हुई थी"

"मरुद्यान में?" वह उसके बगल वाली कुर्सी पर बैठ गई, और उसकी बातचीत में दिलचस्पी लेते हुए बोली।
"हाँ, हाँ, इंग्लिश्तान(इंग्लैंड) जैसा एक देश है।" बाले ने निश्चिंतता के साथ उत्तर दिया।

"ओह, लेकिन मैंने इसका नाम आज ही सुना"

"वह सब याद थोड़ी रहता है ,यह बातें पिछले जन्म की हैं,,मैंने पूरी लगन और ध्यान से सब कुछ पता लगाया है,, मुख्य बात यह है कि अगर कोई व्यक्ति पिछले जन्म में गधा रहा हो, तो अगले जन्म में भी वह निश्चित रूप से इंसान बनेगा"

बाले उसे अपनी भाषा में समझने लगा

"गधा?" शीला ने उसकी बकवास से झल्ला कर कहा।

"अ र र र, हाँ, हाँ, एक सरल, महान और संभ्रांत पशु जो होता है, इसी के लिए उसको दूसरे जन्म में अच्छा पद मिलता है।"

"तो तुम्हारा मतलब है कि तुम पिछले जन्म में गधे थे?" वह हँसी।

"कुछ ऐसे भी थे हम तुम , कालू धोबी के घाट पर बंधे ही रहते थे।"

"ऐसा लगता है कि तुम्हें अपने पिछले जीवन की बहुत सी बातें याद हैं।"

"पिछला जन्म? अरे, मुझे अपने पिछले सात जन्मों की कहानियाँ याद हैं,, एक जन्म

में शेर था, दूसरे में हाथी था, और तीसरे में बारहसिंघा था..??"

"चौथे में गधा और पांचवें में उल्लू" शीला ने बाकी सारी गणना निसंकोच हो कर की ।

"तुमने बहुत जल्दी सब कुछ समझ लिया," बाले ने झेंप मिटाते हुए कहा।

"तुम हमेशा मुझे क्यों घूरते रहते हो?" शीला ने बातचीत की दिशा बदलते हुए पूछा।

"आए हाय, इस सादगी के लिए कौन नहीं मरेगा? हे भगवान, तलवारों से लड़ते हैं पर हाथ भी नहीं, आई एम सॉरी हाथों में तलवार भी नहीं" बाले ने ठंडी साँस लेकर कहा, साथ ही एक शहर भी सुना दिया।
पर शीला बोलते-बोलते आश्चर्य से दरवाजे की ओर देखने लगी।

बाले ने भी देखा।
एक मध्यम आयु का, और औसत कद काठी का, अच्छी तरह से तैयार आदमी, जो पहनावे से कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति लग रहा था, प्रवेश कर रहा था।
उसने हॉल में इधर-उधर देखा और फिर उसकी नज़र, सभी को पार करते हुए, शीला पर जा टिकी।
शीला एक विनम्र सेविका की तरह उठी और धीरे-धीरे उसके पास चली गयी।

"मुझे अच्छा नहीं लगता कि तुम ऐसे आदमी से मिलो" उस आदमी ने शीला को धीरे से, लेकिन कठोर स्वर में डांटा।
जिस पर शीला ने चुपचाप उसके चेहरे को देखा और अपना सर झुका लिया।

वह आदमी काउंटर के पास आया और पीछे मुड़ा।
उसने धीमी आवाज़ में मैनेजर से बात की।

और फिर वह सीढ़ियाँ चढ़ने लगा।

"डार्लिंग, इस चौकीदार ने क्या कहा?" बाले ने शीला के पास आकर पूछा।

"चुप रहो," शीला ने उसे डांटा और बिना उसकी ओर देखे चली गई।
वह उस आदमी के पीछे पीछे सीढ़ियों पर चढ़ने लगी।

बाले इसे सहन नहीं कर सका।
पैगी ने तोते की तरह अपनी आँखें फेर ली थीं, लेकिन मिर्च उसकी नसों और मांसपेशियों में जलन मचा रही थी।
वह होटल से बाहर आया और गार्डन से होता हुआ पीछे की तरफ पहुँच गया।

26

यहाँ उसने देखा, इमारत के पीछे लोहे की एक गोलाकार सीढ़ी थी जो हर मंजिल से होकर जाती थी।
वह इसके द्वारा दूसरी मंजिल पर पहुँचा और दरवाज़े में घुस कर एक संकरा और अँधेरा गलियारा पार किया, जिसके बारे में उसने अनुमान लगाया कि वह होटल के हॉल के ऊपरी भाग के पास था।
एक कमरे के दरवाज़े आधे बंद थे, लेकिन बिजली की तेज़ रोशनी दरवाज़े से छनकर बाहर आ रही थी।
उसने झाँककर देखा तो वही आदमी सोफ़े पर बैठा शराब पी रहा था।
सामने तिपाई पर स्कॉच व्हिस्की की एक बोतल खुली पड़ी थी।
उसके बगल में सोडा की एक बोतल और शायद मछली के कबाब की एक प्लेट रखी थी, शायद इसलिए क्योंकि वे त्रिकोणीय थे।
शीला उसके बगल में उसी सोफ़े पर बैठी थी। उसका सर उस आदमी की गोद में था और वह उसके रेशमी बालों में उंगलियां घूमते हुए वह धीरे-धीरे बोल रहा था।

"पेगी डार्लिंग, मैं नहीं चाहता कि तुम ऐसे घटिया आदमी से मिलो।"

"घटिया" शब्द सुनते ही बाले के मुंह बिगड़ गया। अगर जिज्ञासा न होती, तो वह शायद जंगलीपन कर चुका होता लेकिन बड़े संयम के साथ, दृश्य देख रहा था।

शीला ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "मैं उसे किसी सर्कस का जोकर समझती थी।"

"हुंह" बाले ने अपने होंठ सिकोड़ लिए।
" और यह साला चीन के राजकुमार जैसा है" उसने धीरे से अपने आप से कहा।
तभी किसी के पदचाप सुनकर वह जल्दी से पीछे हट कर अंधेरे में हो गया।

कोई सीढ़ियों से ऊपर आ रहा था।
अंधेरे में उसका रूप दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन वह एक छोटा आदमी था जिसके कदम तेज़ी से बढ़ रहे थे।
वह उसी कमरे के दरवाज़े पर रुका और धीरे से तीन बार दरवाज़ा खटखटाया।

"अंदर आओ"
भीतर से आवाज़ आई।
और अगले ही पल वह अंदर घुस गया।
फिर वह अंधेरे से निकलकर दरवाज़े तक आया और अब चाबी के छेद (कीहोल) से उसने अंदर का दृश्य देखा।

27

वह नवागंतुक उस आदमी के सामने विनम्रता और आदर भाव से खड़ा था।

"काम हो गया, सर," वह कह रहा था।

"कहाँ रखा है?"
"रूहअफजा वाले बंगले में"
नवागंतुक ने जवाब दिया।

"बहुत बढ़िया।" पहला व्यक्ति खुश होता हुआ बोला।
नवागंतुक ने कुछ उस व्यक्ति को दिया जिसे उसने सावधानी से अपनी जेब में रख लिया।

"अब तुम जा सकते हो" उसने नवागंतुक से कहा ,और नवागंतुक ने फिर सर झुकाया और पीछे मुड़ गया।
बाले फिर दरवाजे से दूर चला गया।
और वह आदमी कमरे से बाहर निकलक रदरवाजा बंद करके सीढ़ियों की तरफ चला गया, ।
इस परिस्थिति में बाले उसका पीछा नहीं कर सका।
वह जल्दी से गलियारा पार करके इमारत के पीछे की गोलाकार सीढ़ी की तरफ भागा और जल्दी से सीढ़ियाँ उतरा, फिर बगीचे को पार करके होटल के दरवाजे पर पहुँचा ही था कि तभी उसने अंदर से एक छोटे कद के आदमी को निकलते देखा।
बाले एक पौधे की आड़ में बैठ गया।
आदमी ने इधर-उधर देखा और फिर होटल परिसर से बाहर चला गया।
बाले अब भी उसका पीछा कर रहा था, लेकिन जब वह एक बिजली के खंभे के नीचे से गुजरने लगा, तो रोशनी में उसका चेहरा कुछ हद तक साफ हो गया।
बाले ने ध्यान से देखा और उसे पहचानने की कोशिश की, लेकिन आगे फिर अंधेरा था।
थोड़ी दूर पर सड़क के किनारे एक कार खड़ी थी, जो उसी पल स्टार्ट हो गई और जैसे ही बाले ने उसे देखा, आदमी ने उसका पिछला दरवाजा खोला और अंदर घुस गया।
कार स्टार्ट होकर आगे बढ़ने लगी और जब तक बाले उसके करीब पहुँचता। उसकी गति तेज़ हो चुकी थी

बाले होटल परिसर में वापस भागा और पार्किंग शेड से अपनी मोटरसाइकिल निकाली और अंदर ही से उसे स्टार्ट किया।
उसकी मोटरसाइकिल भी परिसर से निकल कर सड़क पर दौड़ने लगी।

28

और जल्द ही वह सीधे समतल रोड पर जाकर एक लंबी कार को देख लिया।
लगभग दो लंबे रास्ते तय करने के बाद वह उसके बराबर में पहुँच जाता है।
 कार बहुत तेज़ नहीं चल रही थी।
उसका संकेत मिलते ही ड्राइवर ने कार रोक दी। बाले ने पास जाकर ड्राइवर के चेहरे पर लाइट डाली, लेकिन वह कोई और था।
एक अधेड़, सीधा-सादा आदमी।
 बाले फिर टॉर्च की मदद से कार की सीटों को देखने लगा। लेकिन उसे आश्चर्य हुआ कि वहाँ कोई नहीं था।

"जो इसमें बैठा था वह कहाँ गया?" बाले ने उससे आदेशात्मक स्वर में पूछा।

"इसमें...?" "क्या?" कब?"" ड्राइवर ने ध्यान भोलेपन से पूछा।

"अभी, कुछ देर पहले?"

"मैं समझा नहीं , सर,,आपको ज़रूर कुछ भ्रम हुआ होगा ,,इसमें कोई नहीं था।"

"मैंने अपनी आँखों से होटल के पास इस कार में एक आदमी को बैठते देखा है।"

"ओह, वह कोई बहुरूपिया था, सर, किसी कारणवश उसने कार की पिछली सीट का एक ओर का दरवाजा खोला, अंदर गया और दूसरी तरफ का खोल कर बाहर निकल गया,,,शायद वह पागल था कोई," ड्राइवर ने जवाब दिया।

"क्या वह उतर गया?" बाले को आश्चर्य हुआ "तो उसने धोखा दिया, कमीना" वह बड़बड़ाया।
"यह कार किसकी है?" उसने पूछा।

"गाड़ी कस्टम विभाग के अधीक्षक की है।" ड्राइवर ने कहा।
" ओह, ठीक है जाओ" बाले ने झेंपते हुए कहा । और वह खुद मोटरसाइकिल पर बैठ गया और होटल की ओर चल पड़ा।
लेकिन होटल पहुँच कर उसे पता चला कि पैगी के साथ जो आदमी था

29

इस कमरे में शराब पीने वाला आदमी पहले ही जा चुका था।
होटल मैनेजर ने बाले को यह भी बताया कि इस आदमी का नाम परेरा है और वह शीला पैगी का खास दोस्त है।
वह कभी-कभी उससे मिलने आता था।
मैनेजर की जानकारी के अनुसार, उस समय पेगी उसके साथ कहीं गई हुई थी।
पैगी रात के दो बजे तक वापस नहीं आई और बाले दो घंटे तक उसके लौटने का इंतजार करने के बाद वापस लौट आया।

वह वास्तव में उस समय परेरा से खासा नाराज था और उसकी कोई कमजोरी पकड़ना चाहता था ताकि कम से कम उसके साथ रोमांस न हो पाने का कुछ बदला तो लिया जा सके।
वैसे, परेरा का व्यक्तित्व अब उसकी नजरों में बहुत रहस्यमय नहीं था, क्योंकि मैनेजर ने यह भी कहा था कि वह कोई बुरा आदमी नहीं लगता।
वह एक अच्छी जगह नौकरी करता है और उसका व्यवहार भी अच्छा है।

रात को वह यह देखने भी थाने नहीं गया कि शायद उसके लिए सुपरिंटेंडेंट खान का कोई संदेश आया है या नहीं।
वह तीन बजे वापस अपने घर लौटा और थककर बिस्तर पर गिर पड़ा और वह वही कपड़े पहन कर सो गया।

*

प्रॉपर्टी रूम की सुरक्षा में तैनात दो हथियारबंद सिपाही दरवाज़े के पास औंधे मुँह पड़े थे और कमरे का दरवाज़ा खुला था।
इंस्पेक्टर असरार प्रॉपर्टी रूम का निरीक्षण कर रहे थे और कुछ सिपाही बाहर खड़े थे, तभी डॉक्टर आ गए।
एक सिपाही ने पुलिस मुख्यालय के पास की डिस्पेंसरी से डॉक्टर को बुलाया था।
डॉक्टर ने दो मिनट में दोनों गार्ड को होश में ला दिया, लेकिन जैसे ही उन्होंने अपनी आँखें खोलीं, वे सदमे में निर्वात में देखने लगे।

सर, वार्डन, मुखिया, वे सब डर में थे।
"साहब,दारोगा जी,,हेड साहब..." वह घबरा कर चीखे
"क्यों, क्या बात है?" इंस्पेक्टर इसरार ने पास आकर पूछा। गार्ड कोई उत्तर देने के स्थान पर

जवाब देने के बजाय वह हाथ टटोलने लगा। "मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा, सर। क्या लाइटें बंद हैं, सर?" गार्ड ने पूछा।

"सुबह हो गई है," असरार ने जवाब दिया।

"सुबह हो गई, लेकिन मेरी आँखें?" और वह घबरा कर बार-बार अपनी आँखें मलने लगा।
डॉक्टर ने आँखें खोलकर उसकी आँखों को देखा।
उसकी आँखों की रोशनी चली गई थी।

"वे अंधे हो गये हैं," डॉक्टर ने धीरे से कहा।

"अंधे?"
दोनों कांस्टेबल एक साथ चिल्लाए और उनमें से एक फिर बेहोश हो गया।
इस बीच, बाहर बरामदे से सिपाहियों की एड़ियों की खटकने की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

तभी हॉल के दरवाजे पर खड़े सार्जेंट को सावधान हो गया ।
सुपरिंटेंडेंट खान आ चुके थे।

"क्या बात है?" उसने अंदर आते ही पूछा। इंस्पेक्टर इसरार और अन्य अधिकारी और कांस्टेबल सभी सावधान थे।

इंस्पेक्टर असरार ने लज्जित स्वर में कहा, "सलाज़ार की हड्डियाँ गायब हो गई हैं, दो कांस्टेबल अंधे हो गए हैं।"

"मुझे पहले से ही संदेह था कि चेस्ट केस के बाद अब उसके हड्डियों के गायब होने की बारी है,, कांस्टेबलों को अस्पताल ले जाओ।"
उसने असरार अहमद को निर्देश दिया और खुद प्रॉपर्टी रूम में घुस गया।

वह अकेले ही काफी देर तक कमरे का निरीक्षण करता रहा, लेकिन वहाँ कुछ भी उल्लेखनीय नहीं था, सिवाय इसके कि बक्से से सालाजार की हड्डियाँ गायब थीं।
वापस लौटते हुए, वह फिर से दरवाजे के पास चौंक गया।
दहलीज से करीब एक फुट पीछे जूते का वही धब्बा था जो दहलीज के पास अभी भी बिखरी हुई हल्की धूल में एक साफ दिखाई दे रहा था। खान ने तुरंत अपनी जेब से मेजर टेप निकाला और ऊपर से उसका नाप लिया।
फिर उसने एक नोटबुक निकाली और उसमें कुछ लिखना शुरू कर दिया।

31

"वही है "
वह बड़बड़ाया. और नोटबुक जेब में रख कर बाहर आ गया. फिर उस के निर्देशानुसार कमरे को बंद कर दिया गया और वह अपनी कार में बैठ गया और अपने बंगले की ओर चल दिया ।

@@@

"जूता हाज़िर है, जहांपनाह " बाले ने अनादर प्रवेश करते हुए कहा।

उस समय दीवार घड़ी पर दस बज रहे थे और उसने कुछ देर पहले ही अपना नाश्ता ख़त्म किया था।
"अपना सिर भी हाजिर करो" खान ने सोफे पर करवट बदलते हुए जवाब दिया

" आप ही मेरे सर हैं" . बाले ने उत्तर दिया.

"लेकिन ये वो जूता नहीं है. तुमने बेकार में बीस रुपये बर्बाद कर दिये"

"बीस रुपया. परमपूज्य, मैंने इसे ब्लैक मार्केट से 35 रुपये में खरीदा था"

बाले ने दो टूक जवाब दिया.

"तभी तो बनाने वाले ने अंदर कीमत भी लिख दिया जिससे कि तुम जैसे हरामखोरों की दाल ना गले"

"अच्छा , आपको भरोसा नहीं तो चलिए तीस ही दे दीजिए"

"यह बेकार है, इसे वापस कर आओ।”

"अरे वाह मै खुश हुआ,, पूरा दिन खानदानी चमार की तरह जूते सूंघते हुए बिताया और अब मैं वापस कर आऊं"

"उल्लू, यह तलवे में सिलाई किया हुआ है और उन चिन्हों में तलवे और एड़ी दोनों समान हैं" खान ने उसे जूते का निचला भाग दिखाते हुए कहा।

यह स्केटिंग जूता है और वह..." यह कहते हुए खान सोच में पड़ गया।

बाले ने टेढ़ा मुंह बनाने के साथ उत्तर दिया, "मैं किसी शू कंपनी का एजेंट नहीं हूं जो जूतों के प्रकार जानता हो।"

"नहीं, तुम दुष्ट लोगों के देवता हो, नासमझ।" खान ने तीखी निगाहों से उसे घूरते हुए यह कहा, फिर गहरी सोच में डूब गया।

"आप शायद तानसा झील के आसपास घूमने गए होंगे," बाले ने अनुमान लगाया।

"कल रात तुम कहाँ थे?" खान ने उसकी बात अनसुना करते हुए पूछा।

"मैं शीला का डांस देखने गया था"
"धिक्कार है तुम पर, तुम बहुत बिगड़ गए हो।"

"नहीं, बिल्कुल नहीं,, दरअसल, मेरा प्रेम का प्रतिद्वंद्वी एक संदिग्ध जानवर है, मैं उसकी दुखती नस को पकड़ने की कोशिश कर रहा था"

"मैं बस काम के बारे में सुनना चाहता हूँ।"

"ठीक है, मैं अल्लाह के नाम से शुरुआत करता हूँ।" यह कहते हुए बाले ने खान को रात की पूरी घटना बता दी।

खान ने पूछा, " उन्होंने क्या कहा,,, रूह अफ़जा वाले बंगले में?"
" जी हाँ।"

"रूहअफ़ज़ा....."
ख़ान सोचने लगा।

"हमदर्द फार्मेसी में फोन करके पता कीजिए, हो सकता है कि उन्होंने शरबत रूह अफज़ा के लिए बंगला बनवा रखा हो" बाले ने अपनी राय दी।

"बकवास बंद करो, तुम्हे एक महत्वपूर्ण काम करना है।" खान ने फिर से उसकी बात अनसुनी करते हुए कहा

33

"बताओ आप? मेरे कान आपके पास ही हैं" बाले ने यह वाक्य उसके कान के पास इस तरह से कहा कि खान भी हंस पड़ा।
लेकिन उसके तुरंत बाद वह गंभीर हो गया।

खान ने निर्देश दिया, "तुम किसी तरह मेडिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट के स्टोरकीपर से पता लगाओ कि छह महीने पहले सरकारी वैज्ञानिक अनुसंधान प्रयोगशाला से जो एक तोला रेडियम मंगवाया गया था, वह किसके लिए और किस उद्देश्य से था। यह भी पता लगाना कि इस समय स्टॉक में रेडियम की कितनी मात्रा है और है भी या नहीं।"

"एक तोला रेडियम," बाले ने दोहराया। "तो आपको कैसे पता कि रेडियम वहीं से मंगवाया गया था?" उस ने पूछा।

"यह बहुत कीमती धातु है और सीमित मात्रा में विशेष प्रयोगों के लिए ही प्राप्त होती है। जब मैंने चिकित्सा संस्थान में जांच की तो स्टोरकीपर ने साफ मना कर दिया कि संस्थान के पास न तो रेडियम है और न ही इसे लाया गया है। इसके बाद मैंने सरकारी वैज्ञानिक अनुसंधान प्रयोगशाला में जाकर जांच की तो स्टोर जारी करने के रजिस्टर में चिकित्सा अनुसंधान संस्थान के नाम पर 6 महीने पहले की तारीख का एक तोला रेडियम दर्ज था। इसके अनुबंध पर स्टोरकीपर के साथ-साथ संस्थान के अधीक्षक के भी हस्ताक्षर हैं।"

"तो फिर आप इस स्टोरकीपर को कानून के कटघरे में क्यों नहीं लाते?"

"वे दोनों सरकारी एजेंसियां हैं और जब तक हमें उनमें से किसी की भी रिपोर्ट नहीं मिलती और जांच करने के लिए नहीं कहा जाता, हमें उनके मामले में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं है। इसके अलावा रिलीज के रजिस्टर में एक गुप्त प्रयोग का भी जिक्र है,"
खान ने जवाब दिया, "इसलिए, हम इस संबंध में कोई जांच पड़ताल भी नहीं कर सकते।"

"ऐसी स्थिति में, वह मुझे यह सब क्यों बताएगा श?"

"तुम्हे उसके साथ एक खतरनाक डाकू की तरह व्यवहार करना होगा।

34

" इसका मतलब जबरदस्ती ?"

"बिल्कुल"

"और अगर मुझे गिरफ्तार कर लिया गया तो?"

"दस दिन तक शासकीय अतिथि गृह में आराम करना।"

"आप अजीब कर्तव्य सौंपते हैं।"

"बेटा, अगर तुम जासूसी करना चाहते हो तो तुम्हें पापड़ तो बाले ना ही होगा।"

"बेहतर है, तो क्या मुझे अपना नाम सुल्ताना डाकू रखना चाहिए? मुझे लगता है डाकू गब्बर सिंह ज्यादा सही लगेगा".

"फिर वही बकवास"

"हाँ, बकवास ठीक रहेगा।"

"मेरा भेजा चाटो नराधम, मुझे शांति चाहिए।"

"पुलिस वालों को दो ही प्रकार से शांति मिलती है, या तो मरने के बाद या फिर जन्म से पहले"

"ठीक है, अब तुम यहाँ से चले जाओ, नहीं तो,,,,," खान ने उठकर यह कहा।"

"बहुत अच्छा, बहुत अच्छा," उस ने कहा और तुरंत चला गया।

35

सालाज़ार

शहर से करीब 12 मील दूर, एक कच्ची सड़क के किनारे, एक दीवार के अंदर आधा मील लंबा बगीचा फैला हुआ था।

इस बगीचे में, चारों कोनों पर चार पुराने तालाब थे, जो गंदे बरसाती पानी से भरे हुए थे और काई से ढके हुए थे।

इन तालाबों के आस पास कुछ बड़े तालाब थे, जिनमें संतरे के पेड़ों की झाड़ियां सी उग आई थीं।

बगीचे के सारे रास्ते वीरान हो गए थे और उन पर हरी घास उग आई थी।

ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने लंबे समय से उनकी देखभाल नहीं की हो।

संतरे के पेड़ों के बाद रास्ते थे और उनके बाद जंगली पौधों की उलझी झाड़ियाँ उग आई थीं, जिनके बीच में लंबे आम के पेड़ अपनी बाहें फैलाए लंबे समय से खड़े थे।

यह हरा-भरा क्षेत्र चारों तरफ से बंद हो गया था और उस पुराने ढंग के बंगले तक पहुँच गया था जो सालों से बिना रंग के दीवारों से सटा हुआ खड़ा था।

इसकी छत काफी ऊँची थी, जिस पर अंग्रेजी टाइलें लगी हुई थीं और उनके बीच से दो चिमनियाँ निकली हुई थीं।

ऐसा लग रहा था जैसे इस बंगले में सालों से कोई रहता ही न हो, और अगर रहता भी हो तो शायद कभी-कभार आता हो, और वह भी बंगले और बगीचे की बिल्कुल भी परवाह न करते हुए। बाहर से देखने पर यह अंदाज़ा लगाना मुश्किल था कि इसमें कोई रहता भी है।

इस बंगले को कभी एक अंग्रेज कर्नल ने बनवाया था लेकिन बाद में इसे नवाब सफदर यार जंग ने खरीद लिया।

पहले वे खुद यहां रहते थे, लेकिन उनकी मौत के बाद उनके बेटे यार जंग ने इसे छोड़ दिया और शहर में रहने लगे और तब से यह वीरान और उपेक्षित पड़ा है।

उस समय बंगला और उसके आस-पास का क्षेत्र दोपहर के सन्नाटे में डूबा हुआ था।
 उसके आस-पास लगभग एक मील तक कोई बस्ती नहीं थी, सिवाय उन खेतों के जो उस पार के छोटे से गांव शशीपुर के किसानों और जमींदारों के थे।
समय की अपेक्षा के विपरीत, बल्कि उस समय की अपेक्षा के विपरीत, इस बंगले के बाहरी शेड में एक लंबी कार खड़ी थी, जिसकी खिड़कियां भी बंद थीं।
बंगले का बाहरी बरामदा सुना था, लेकिन अंदर से बहुत धीमी-धीमी आवाजें आ रही थीं।
बरामदे में बने दरवाजों में से एक अंदर के बड़े और ऊंची छत वाले हॉल में खुलता था, और इस हॉल में ही एक मंजिल थी, जो ऊपर-नीचे होकर दक्षिण की ओर मुड़ती थी। सीढ़ियों के पास एक छोटा दालान था जो दूसरे बड़े कमरे में खुलता था।

उस समय यह कमरा विभिन्न वैज्ञानिक प्रयोगात्मक उपकरणों और अन्य वस्तुओं से सुसज्जित प्रतीत होता था।

मेज़ के बीच में पाँच-छह फ़ीट लंबी टेबल पर एक आदमी सफ़ेद कपड़े पहने झुका हुआ था, उसका चेहरा सफ़ेद रूमाल से ढका हुआ था। सिर्फ़ उसकी आँखें खुली थीं।
 उसके पास एक और आदमी हाथ में कुछ औज़ार लिए खड़ा था और मेज़ पर सालाज़ार का अपहृत चेस्ट केस रखा धड़क रहा था।
 उसके सिरहाने सालाज़ार की खोपड़ी और हाथ अलग-अलग रखे हुए थे, उसके हाथ और पैर की हड्डियाँ भी थीं।
 ये हड्डियाँ पहले जितनी मोटी नहीं थीं, लेकिन फिर भी जुड़ी हुई थीं।
 कपड़े से वह आदमी डॉक्टर जैसा लग रहा था। उस समय उसने सालाज़ार की खोपड़ी को माथे के पास से खोलकर दो टुकड़ों में काट दिया था और ऊपर से कमरे के अँधेरे वातावरण

को रोशन करने वाले 5, 000-वाट पावर के शेड लैंप की तेज़ रोशनी में वह अंदर सुरक्षित मस्तिष्क ग्रंथि के साथ कुछ छेड़ छाड़ कर रहा था।
कई मिनट तक व्यस्त रहने के बाद उसने खोपड़ी को फिर से पहले जैसा किया, जिससे गर्दन की हड्डी अभी भी जुड़ी हुई थी।
उसने अभी चैन की साँस ली ही थी कि खिड़की के पास एक छोटी सी मेज़ पर लाल रेडियो फोन बॉक्स की आवाज़ सुनकर वह रुक गया।
वह मेज के पास गया और नंबर तीन वाले बॉक्स को देखने लगा।

जो नंबर गिर गया था।
बॉक्स से जुड़े एक लचीले तार से एक छोटा गोल माउथपीस जुड़ा हुआ था।
उसने उसे उठा लिया।

"हेलो, येस स्पीकिंग"

तीसरे नंबर के छोटे से गोल डिब्बे से आवाज़ आने लगी, "वह बड़ा चूहा आया था.... शायद आपसे मिलने,,,, ,अब वह वापस चला गया है,,,, लेकिन संदेह है।"

"कोई बात नहीं, तुम उस पर नज़र रखो, कोई भी मेरे काम में हस्तक्षेप नहीं कर सकता।"
डॉक्टर ने
उत्तर दिया.

"ठीक है बॉस," दूसरी तरफ से जवाब आया और उसी समय तीसरा नंबर, जो अपने बॉक्स से बाहर गिर गया था, फिर अपनी जगह पर आकर अटक गया।

डॉक्टर ने अपना माउथपीस नीचे रखा और टेबल से थोड़ी दूर दीवार पर लगे इलेक्ट्रिक कॉल बाले सेट पर दूसरे नंबर का बटन दबाया।

फिर उसने अपनी जेब से रूमाल निकाला, माथे से पसीना पोंछा और बड़ी मेज के पास एक ईजी चेयर पर लेट गया।

दो मिनट भी नहीं बीते थे कि कमरे का दरवाजा खुला और कोई अंदर आया।

वह एक औसत कद और वजन का आदमी था।

"बंगले के बाहर जो रूहअफजा का बोर्ड लगा है उसको हटा कर वहां पर आराम बाग का पत्थर वाला बोर्ड लगा दो," उस ने आदेश दिया।

आगंतुक ने आज्ञाकारिता में सिर हिलाया।

डॉक्टर ने पूछा, "क्या आराम बाग के नाम के लिए पत्थर तैयार है?"

"जी वह बाहर रखा हुआ है।"

"तो इसे तुरंत बदल दो ,,और हाँ,,, तुम्हें पता है कि इसे पुराना कैसे दिखना चाहिए?"

"आप निश्चिंत रहो।" यह कहते हुए उसने फिर से अपना सिर झुकाया और फिर पीछे मुड़ कर वापस चला गया

"देव, अगर मेरे प्रयोग सफल हो गए तो पूरी दुनिया चौंक जाएगी।" डॉक्टर ने अपने असिस्टंट से कहा.

"उसे क्या नाम से पुकारा गया था?" उसने पूछा। "लेकिन अगर वह ख़तरनाक निकला तो क्या होगा?" सफ़ेद कपड़ों वाला स्टंटमैन, जिसे वह विशालकाय कहता था।

मैं उसके मस्तिष्क की अवचेतन और स्मृति कोशिकाओं को पंगु बना देता हूँ।

इसीलिए मैंने उसके ऑपरेशन करवाया। मुझे यकीन है कि अब वो सोच भी नहीं पाएगा।

"वह केवल समझेगा और आज्ञा मानेगा," डॉक्टर ने सफल मुस्कान के साथ कहा।

"और आप इसका क्या करेंगे?"

जब आप इसे देखेंगे, तो आप हफ़्तों तक हैरान और आश्चर्यचकित रहेंगे।

"क्या कोई और अनुभव है?"

"एक बिल्कुल नया, दुनिया का सबसे अछूता अनुभव," डॉक्टर हँसे। और उसके बाद वे अपने काम पर वापस लौट गए।

@@@@

फ़्रीज़ रोड पुलिस स्टेशन के आस-पास का इलाका रात 11 बजे के बाद आमतौर पर शांत हो जाता था। उस इलाके में रात में कोई फ़ैक्टरी नहीं चलती थी, इसलिए रातें इतनी शांत और सुकून भरी होती थीं कि सरकारी बिजली की मंद रोशनी में अक्सर दूर तक देखा जा सकता था।

टपकते तारकोल से बनी चौड़ी, पक्की सड़कें और दोनों ओर देवताओं की तरह ऊंचे खड़े खामोश घर, प्राचीन पत्थर की इमारतें, किसी महल का मॉडल लग रही थीं।

गश्ती कांस्टेबल, मुँह से सीटी बजाते हुए, खुले मैदान से गुजरा और एक छोटे से कमरे में प्रवेश किया।

वह एक गली में मुड़ा। दूर से, उसी गली में, एक अधेड़ उम्र का आदमी फुटपाथ पर, गहरे विचारों में डूबा हुआ, हाथ में एक छोटा सा कपड़े का थैला लिए चला आ रहा था। स्थानीय निवासी

39

कुत्ते अपने बेचैन दिमाग़ों में खामोश रात के रोमांस पर कोई फ़िल्मी गाना गाने लगे। लेकिन वह अपनी ही धुन में खोया हुआ था। उसने कुत्तों की रोने पर ध्यान ही नहीं दिया। बीच से फुटपाथ को चीरती हुई एक अँधेरी गली भीतरी शहर की घनी आबादी में जा रही थी।

गली के मोड़ पर एक साया टिमटिमाया और फिर सिमटकर अँधेरे में बदल गया। एक आवारा कुत्ता, बंद होटल के दरवाज़े के नीचे सिर छिपाए, आने वाले की तरफ देख लेता था आने वाला आदमी फुटपाथ से उतरकर बीच सड़क पार करने लगा।

अचानक अँधेरे से एक काला हाथ उठा और उस आदमी की गर्दन पकड़ ली। वह बाज़ के पंजों में फँसे कबूतर की तरह फड़फड़ाने लगा और उसका थैला उसके हाथ से गिर पड़ा।

काला हाथ उसकी नाक तक पहुँचा। उसके रूमाल में कुछ सफ़ेद चीज़ मिली। कुछ सेकंड बाद, वह आदमी बेहोश हो गया और उस अनजान काली परछाईं की बाहों में गिर पड़ा। और दो मिनट बाद, एक काली परछाईं पीठ पर एक बड़ा भूरा बैग लिए, अंधेरी गली में चली आ रही थी। आवारा कुत्ते अभी भी गा रहे थे और गश्ती सिपाही, आधी रात की इस नीरस ड्यूटी की बोरियत दूर करने के लिए मंद रोशनी वाले कमरे में सीटी बजाते हुए, फिर से सड़क पर आ गया।

@@@@

अगली सुबह, फ्रीयर रोड पुलिस दो लापता लोगों की तलाश कर रही थी। एक पढ़ा-लिखा युवक था जो शहर की एक बड़ी फर्म में क्लर्क था, और दूसरा एक अधेड़ उम्र का आदमी था जो एक सेठ परिवार यहाँ से काम खत्म करके करके लौट रहा था। उनके परिवारों ने

पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराई गई कि वे कल शाम से लापता हैं। उनके दफ्तरों से पूछताछ करने पर पता चला कि उनमें से एक सिनेमा का आखिरी शो देखने गया था। दूसरा अपने सेठ के घर से सुबह साढ़े तीन बजे लौटा था, लेकिन दोनों कल रात से अपने घर नहीं पहुँचे थे।

पुलिस ने उन्हें तमाम इलाकों और संभावित जगहों पर ढूँढ़ने के बाद, निराश होकर उनके परिवारों को भरोसा दिलाया था कि जैसे ही उन्हें पता चलेगा, उन्हें सूचित कर दिया जाएगा। पुलिस खुद भी गुमशुदगी की इन खबरों को लेकर ज़्यादा गंभीर नहीं थी, क्योंकि गुमशुदा बच्चे

नहीं, बल्कि कई बच्चों के पिता थे। हो सकता था कि वे किसी ख़ास काम से अचानक कहीं बाहर चले गए हों।

लेकिन तीसरे दिन, सुबह-सुबह रामघाट थाने में दो लोगों के लापता होने की रिपोर्ट दर्ज कराई गई। उनके रिश्तेदार रोते हुए उन्हें थाने ले गए। बड़ी मुश्किल से उन्हें यह आश्वासन देकर चुप कराया गया कि पुलिस जल्द ही उन्हें ढूंढ लेगी।

प्रेस अभी तक इन खबरों को कोई महत्व नहीं दे रहा था। और फिर कोई आश्चर्य की बात भी नहीं थी, लेकिन चूँकि दो दिनों में ऐसे चार लोग अपने घरों से गायब हो गए थे, इसलिए कुछ पुलिस अधिकारियों ने इस मामले पर गंभीरता से विचार करना शुरू कर दिया। लापता लोगों के बारे में लोगों के बयानों से पता चला कि वे अपने पारिवारिक जीवन में व्यस्त साधारण लोग थे, और शायद जवाब मिलने से पहले बिना सूचना के कभी अपने घरों से बाहर नहीं निकले थे।

उन्होंने उसके लौटने का दो दिन तक इंतज़ार किया, लेकिन चौथे दिन भोला नाथ टैंक इलाके से एक और व्यक्ति के लापता होने की सूचना मिली। ऐसी ही पाँच घटनाएँ पहले भी हो चुकी थीं।

41

शहर में कहीं भी कोई शव नहीं मिला, कोई सुराग नहीं मिला जिससे किसी के अपहरण, आत्महत्या या हत्या का संदेह हो सके।

ये घटनाएँ पुलिस के लिए और भी ज़्यादा महत्वपूर्ण होती जा रही थीं क्योंकि ये सभी रात में घटित होती थीं। लापता लोगों के परिजन दिन-रात थानों के चक्कर लगाकर पुलिस को परेशान कर रहे थे। लेकिन ये मामले अभी तक उच्च अधिकारियों तक नहीं पहुँचे थे।

अधीक्षक खान इन दिनों एक अजीब प्रयोग में व्यस्त थे और अपने खाली समय में फ्लैट शू की तलाश में थे।

वह पेगी से फिर मिला, लेकिन व्यर्थ। वह रहस्यमयी व्यक्ति होटल में फिर कभी नहीं दिखा और पेगी ने उसे बस यह कहकर टाल दिया कि वह मेरा पुराना दोस्त है। उसने बाले को और कुछ नहीं बताया और बाले को उसमें कोई दिलचस्पी नहीं दिखी, लेकिन इस बार भी वह किसी चतुर जासूस जैसा लग रहा था।

@@@@@@@

शाम ढल रही थी। सुपरिंटेंडेंट खान अपने बंगले के बरामदे में आरामकुर्सी पर बैठे फुर्सत के पल बिता रहे थे। उनका ग्रेहाउंड कुत्ता पास ही बैठा नीले आसमान में शायद अनजान आत्माओं को घूर रहा था, तभी भीतरी हॉल से बाले की आवाज़ सुनाई दी। शायद उन्हें ग़ुलाम रसूल पर गुस्सा आ रहा था कि उन्होंने इतनी कम चाय बना दी कि वह खत्म हो गई। फिर, हमेशा से ज़्यादा भारी कदमों से चलते हुए, वे बरामदे में आ गया।

"ओह, तुम यहाँ?" उसने बनावटी आश्चर्य से कहा। लेकिन खान ने उसकी बात अनसुनी कर दी।

खान ने कुछ जवाब नहीं दिया.

मुझे लगा कि अब आप तीसरा प्रयोग कर रहे होंगे। यह कहकर वह सामने वाली दूसरी कुर्सी पर बैठ गया।

"मैंने सुना है कि इन दिनों तुम्हारा प्यार बहुत ज़ोरों पर है?" खान ने संक्षेप में पूछा।

आपकी प्रार्थना है। बाले ने दोनों हाथ मिलाए।

पेगी अच्छी औरत नहीं है.

आप अपनी आँखों से देख रहे हो, वरना वो कितनी खूबसूरत है, जैसे...

तुम्हारा सिर ---

"आप शायद गायब होने वाले केस के बारे में चिंतित हैं।" बाले ने कहा, "शायद आप कुछ भूल रहे हैं।"

मैं ऐसे छोटे-मोटे मामलों में नहीं पड़ना चाहता।

"पाँच पत्नियाँ, के पाँच पति, दूध पिलाये बिना गायब हो गए हैं, और आप उन्हें छोटी बात समझ रहे हैं?"

"मूर्ख मत बनो, मुझे ऐसी घटनाओं में कोई दिलचस्पी नहीं है। यह सिविल पुलिस का काम है। वे इसे स्वयं कर लेंगे," खान ने सिर हिलाते हुए जवाब दिया।

"मैंने सुना है कि आपने इंस्पेक्टर डिसूजा को यह काम सौंपा है?"

हाँ, यह पर्याप्त है.

"और मेरे लिये क्या फैसला है?"

तुम सिनेमा के सामने शर्बत बेचो । अब तुम्हें मुझे हर कदम बताना होगा।

"क्या ऐसा होगा?" उसने खान की ओर मुंह बनाते हुए कहा।

"ओह, तो इसका मतलब है कि मैं आज़ाद हूँ?"

"बिल्कुल नहीं, और आपको पैगी के इस दोस्त के बारे में पता लगाने की ज़रूरत है। हो सकता है कि उस रात सालाज़ार की हड्डियों के गायब होने और होटल में उसके अपने आदमी से हुई बातचीत के बीच कोई संबंध हो।"

"वह बदकिस्मत व्यक्ति दशमलव बिंदु से पहले शून्य की तरह गायब हो गया है। पैगी भी। कुछ नहीं बताती

43

"तो फिर जासूसी का शौक छोड़ दो और पान की दुकान खोल लो।"

आपकी सलाह अच्छी है, लेकिन अगले जन्म के लिए।

अच्छा, चलो मैं तुम्हें एक खतरनाक प्रयोग दिखाता हूँ। यह कहकर खान खड़ा हो गया। बाले उसके पीछे था। वे दोनों हॉल से होते हुए, पिछले कमरे को पार करते हुए, पिछले गलियारे में आ गए। यहाँ बाले यह देखकर चौंक गया कि दो बिल्लियाँ पास के दो खंभों से बंधी हुई थीं और एक-दूसरे पर गुर्रा रही थीं, लेकिन वे एक-दूसरे को देख रही थीं।

बाले ने पूछा, "ये कौन सी विपत्तियाँ हैं जो तुम्हें रुला रही हैं?"

" वे अंधी हैं।"

"और आप शायद उन्हें अंधों के स्कूल में भेजने की योजना बना रहे हैं?"

उल्लू ही रहोगे । यह वही अनुभव है जिससे प्रॉपर्टी रूम के गार्ड और संस्थान के स्टंटमैन अंधे हो गए थे।"

"और वह कृत्य भी आपका था, भगवान क्षमा करे।"

"वह हरकत चाहे किसी की भी हो, यह तो बाद में पता चलेगा। साहब, आपको उपनगरीय इलाकों में रूह अफ़ज़ा नाम का कोई बाग़ ढूँढ़ना चाहिए। मैंने शहरी इलाकों में रिसर्च की है, यहाँ उस नाम का कोई बाग़ नहीं है।"

इससे भी बेहतर है कि मैं जंगलों की धूल छान लूंगा, आप बस मुट्ठी भर लिली के फूल दे दो। बाले ने अंततः आज्ञाकारिता में अपना सिर झुका लिया।

यह विचार ही मुझे चक्कर में डालने के लिए काफी है। खान ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

"आपने मुझे इस अनुभव के बारे में नहीं बताया?"

यह रेडियम टॉर्च है, जो उस समय का सबसे उन्नत और खतरनाक आविष्कार था और आप इसे देखकर आश्चर्यचकित हो जायेंगे। "फार्मूला तो बहुत सरल है ।"

"तो आप भी वैज्ञानिक हैं?"

"बुद्धि को काम पर लगाने का दूसरा नाम विज्ञान है, बेटा। अच्छा, अब तुम जाओ, चाय पियो, मुझे शांति चाहिए।"

"मैं देख रहा हूँ कि आपका अलगाववाद हताशा की हद तक पहुँच रहा है।"

तो क्या मैं तुम्हें गोद में बिठाकर प्यार करूँ?

"लाहूल वालाक़त। फिर वही बेवकूफ़ी भरा मज़ाक।"

"बेवकूफ़ मज़ाक बेवकूफ़ लोगों के साथ ही करने चाहिए, चलो, अब दूर हो जाओ यहाँ से"

कौन सी दफा है ?

"बाहर निकल, कमीने। मैंने भारतीय दंड संहिता में ऐसा कोई लेख नहीं पढ़ा।"

"अरे, आजकल तुम बहुत बकवास करने लगे हैं।"

"आपकी संगति का ही असर है।"

"यूं नहीं मानोगे," खान मुस्कुराते हुए अपनी सीट से खड़े हुए।

बाले तुरंत बाहर निकल गया और खान किसी गंभीर विचार में डूबे हुए गलियारे में टहलने लगे।

@@@@

रात का अँधेरा फैल रहा था और गहराता जा रहा था। तारे आसमान में बिखर गए थे।

ज़मीन पर एक गहरा, स्वप्निल सन्नाटा पसरा हुआ था। गायब होने के बाद से, हर इलाके से कुछ पुलिस अधिकारी रात में शहर में गश्त भी करने लगे थे।

45

उस समय, शहर की बड़ी घड़ी में 2:30 बज चुके थे।

इंस्पेक्टर डिसूजा आज शहर के मध्य क्षेत्र में अपनी जीप से गश्त कर रहे थे। सड़क पर कुछ राहगीर दिख रहे थे , वरना हर जगह सन्नाटा था ।

अचानक किसी की भयभीत चीख सुनकर इंस्पेक्टर डिसूजा ने अपनी तेज गति से चलती कार रोक दी।
सेंट्रल एरिया पुलिस के गश्ती सिपाही आवाज़ सुनकर दौड़े। डिसूज़ा भी जल्दी से अपनी जीप घुमाकर सिपाहियों के पीछे दौड़ने लगा।

एक अंधेरी गली के मोड़ के पास, एक आदमी जमीन पर पड़ा था और एक परछाई उससे कुछ गज की दूरी पर दौड़ती हुई दिखाई दे रही थी।

"उसका पीछा करो," डिसूजा ने गाड़ी से उतरते ही सिपाहियों को आदेश दिया, और दो सिपाही तुरंत उस साये के पीछे दौड़ पड़े। साया भटककर दूसरी गली में चला गया। आधी रात में गलियाँ और सड़कें सुनसान थीं। वैसे भी, सर्दियों में लोग जल्दी सो जाते थे।

लेकिन गली में दौड़ते पुलिस सिपाहियों के भारी बूटों की आवाज़ सुनकर कई आदमी नींद से जाग गए। उसी समय पुलिस की सीटियाँ बजने लगीं। दूसरी गलियों और सड़कों पर सो रहे पुलिस के सिपाही भी ज़ोर से उठ बैठे और इधर-उधर देखने लगे। गलियाँ पार करके सिपाही सड़क पर आ गए। दूसरी गलियों के पहरेदार भी उनके पास आ गए।

एक हेड कांस्टेबल ने पूछा, "क्या आपने कोई परछाईं दौड़ती हुई देखी?"

वहाँ कोई नहीं था, केवल सीटियाँ सुनाई दे रही थीं।

पता नहीं कहाँ गायब हो गई, फिर से खोजो। हेड कांस्टेबल ने निर्देश दिया।

46

लेकिन वह कौन था?

मुखिया ने कहा, "वहां जरूर कोई खतरनाक चोर होगा।"

और उसके निर्देश पर सब इधर-उधर बिखर गए। हेड कांस्टेबल इंस्पेक्टर डिसूजा को रिपोर्ट देने वापस गया। तब तक ज़मीन पर पड़ा आदमी उठ चुका था। इंस्पेक्टर डिसूजा उसके ऊपर झुके हुए थे। एक कांस्टेबल पीछे खड़ा था। वह आदमी घबरा रहा था, , इधर-उधर भाग रहा था।

वह... वह... वह कुछ कहना चाहता था।

"वह कौन था?" डिसूजा ने पूछा।

कौन? यह कहते हुए उस आदमी का चेहरा और भी डर गया । --वह...वह आदमी नहीं था। यह कहते हुए उसने अपने एक हाथ से अपना गला सहलाना शुरू कर दिया।
वो आदमी नहीं था... वो... उफ़, मैं कैसे बताऊँ कि वो कितना डरावना था। वो डरा हुये स्वर मैं बताने लगा.

"तो फिर वह क्या बला थी?" डिसूजा चौंका।

वो एक भूत था... मरा हुआ। उसके सिर और हड्डियों के सिवा कुछ नहीं था। --ये कहते हुए उसकी आँखें सिकुड़ी हुई थीं। उसकी आँखें बहुत डरावनी और चमकदार थीं और उसके माथे के नीचे गहरे काले गड्ढों से झाँक रही थीं। ---उसके हाथ, जिनसे उसने मेरा गला पकड़ा था, बहुत सख्त थे, बस हड्डियाँ थीं। हे भगवान... भगवान जाने वो किसकी आत्मा थी। "ये कहते हुए उसका गला रुँध गया।

"मुझे लगता है कि उसे नींद में चलने की बीमारी है।" हेड कांस्टेबल ने अपने साथी से कहा।

मैं सच कह रहा हूँ। यकीन मानिए, मैं सच कह रहा हूँ। मैं अपने काम से लौट रहा था जब उसने इस गली में चलते हुए मेरी गर्दन पकड़ ली। अगर मैं चीख ना मारता और किसी के दौड़ते हुए कदमों की आहट न सुनता, तो शायद... मैं --- ये कहते-कहते रुक गया ।

"यह तो अजीब है।" डिसूज़ा ने सिर हिलाया और कहा, "ठीक है, अब तुम पुलिस स्टेशन जाओ, वहाँ से तुम्हें पुलिस सुरक्षा में तुम्हारे घर ले जाया जाएगा। और हाँ, ऐसे हालात में इतनी रात को बाहर निकलना बंद करो।" डिसूज़ा ने उसे हिदायत दी। चेहरे पर उम्मीद और निराशा के भाव लिए वह उठा और डिसूज़ा की जीप में बैठ गया।

तलाश जारी है, लेकिन अभी तक उसका कोई सुराग नहीं लगा है। हेड कांस्टेबल ने बताया , उसने करीब आकर कहा.

"यह आदमी जो कह रहा है, अगर उसे मान लिया गया, तो तलाशी बेकार हो जाएगी। फिर भी कोशिश करो। मैं पुलिस स्टेशन जा रहा हूँ," डिसूजा ने उसे निर्देश दिया।

हेड कांस्टेबल ने ध्यानपूर्वक जवाब दिया और डिसूजा की कार फिसलन भरी सड़क पर आगे बढ़ने लगी।

@@@@

"क्या इस आदमी की गर्दन पर कोई निशान था?" सुपरिंटेंडेंट खान ने इंस्पेक्टर डिसूजा से पूछा। डिसूजा आज सुबह-सुबह आ गए थे। उनका आना अप्रत्याशित था। इसलिए खान बिना कपड़े बदले ही बाहर आ गए। डिसूजा के चेहरे पर चिंता के भाव देखकर, वह समझ गए कि ज़रूर कुछ खास होगा और फिर सोफ़े पर आराम से बैठकर इंस्पेक्टर डिसूजा ने रात की घटना का पूरा ब्यौरा सुनाया, जिससे वह सोच में पड़ गए।

"इस आदमी को कोई नुकसान नहीं पहुँचा था, इसलिए उस पर कोई ध्यान नहीं दिया गया।" डिसूजा ने कहा।

48

"अच्छा, तुम्हें उसका पता तो पता है न?"

हाँ

तो उसे एक घंटे में पुलिस मुख्यालय बुलाओ, मैं वहां पहुंच जाऊंगा।

खान ने निर्देशित किया।

"बहुत अच्छा," डिसूजा ने विनम्रता से उत्तर दिया।

"लो, चाय पियो," खान ने तिपाई पर रखी ट्रे की ओर इशारा करते हुए कहा। गुलाम रसूल जाकर ट्रे उसके सामने रख चुका था। उम्मीद के विपरीत, बाले आज सुबह आठ बजे तक सोता रहा, और खान ने अभी तक उसकी ओर ध्यान नहीं दिया था। अधीनस्थ अधिकारी होने के बावजूद, डिसूजा सुपरिंटेंडेंट खान के प्रति उतना ही समर्पित था जितना वह खुद उसके प्रति। और खान शुरू से ही उसे अपने किसी भी अधीनस्थ अधिकारी से ज़्यादा प्यार करता था। वह डिसूजा को तब से जानता था जब डिसूजा पुलिस मुख्यालय में क्लर्क थे और इंस्पेक्टर खान खुद उस समय सब-इंस्पेक्टर थे। तब से वे दोस्त बन गए थे, लेकिन बाद में, हज़ूर अहमद खान तरक्की करते हुए सुपरिंटेंडेंट के पद तक पहुँच गए, और डिसूजा ने भी क्लर्क की ज़िंदगी को अलविदा कह दिया, और सब-इंस्पेक्टर के पद के लिए आवेदन किया। नतीजा सफल रहा,

क्योंकि डिसूजा खुद भी एक असाधारण प्रतिभा के धनी थे। हालाँकि, उन्हें अभी तक उभरने का मौका नहीं मिला था। हालाँकि, यहाँ से वे धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे और आज पुलिस हलकों में उन्हें बहुत सम्मान की नज़र से देखा जाता था। उस समय उन्हें सीआईडी शाखा में सुपरिंटेंडेंट ख़ान और इंस्पेक्टर फ़ैज़ के बाद तीसरा सबसे काबिल पुलिस अधिकारी माना जाता था। वैसे, सार्जेंट बाले भी शैतान की तरह मशहूर थे, लेकिन उनका ज़िक्र हमेशा सुपरिंटेंडेंट ख़ान के साथ ही होता था। अब तक उन्होंने कोई ऐसा व्यक्तिगत कारनामा नहीं किया था जिसका इनाम सिर्फ़ उन्हें ही मिलता। वैसे, आधे से ज़्यादा

49

वह जासूस बन गया था, और अगर उसने हर खूबसूरत लड़की के प्रति आकर्षित होने की आदत विकसित नहीं की होती, तो अब तक वह काफी प्रगति कर चुका होता।

डिसूज़ा के जाने के बाद, ख़ान टहलते हुए बेडरूम में पहुँचा। वह बिस्तर पर लेटा हुआ था, सुबह की ठंड से काँप रहा था, और कंबल बिस्तर से फिसलकर ज़मीन पर गिर गया था।

बाले --खां ने आवाज लगाई, लेकिन वह घोड़े बेच चुका था और सो रहा था।

"गुलाम रसूल, एक जग पानी लाओ," खान ने नौकर को पुकारा।

"गुलाम रसूल, मेरे लिए एक कप चाय लाओ," उसने अपना सिर ऊंचा उठाते हुए चिल्लाया।

"ओह, तो तुम अब तक बेड टी का इंतज़ार कर रहे थे?"

"मैं सपने का आनंद ले रहा था, ।" मुस्कुराते हुए उसने नीचे उतरते हुए और गाउन पहनते हुए कहा।

"तुम दिन-प्रतिदिन आलसी होते जा रहे हो।"

आपकी प्रार्थनाओं के कारण शाही परिवार की सभी सात पीढ़ियाँ इस दुनिया में नहीं रहीं।

"आप ही एकमात्र व्यक्ति हैं जो गलती से खो गए।"

"अपमान, आज सुबह तुम ये कौन से बुरे शब्द कह रहे हो?"

"अरे बेइज्जती के बच्चों, तुम्हें पता है शहर में कैसा अँधेरा फैला हुआ है?"

"बिजलीघर ज़रूर फेल हो गया होगा।"

"सालज़ार वापस जीवित हो गया है,बरखोरदार ---खान ने कुर्सी पर बैठते हुए कहा।

साला ज़ार? बाले ज़ोर से उछल पड़ा। उसकी आँखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं। यह क्या मामला है? ज़िंदा लाश वाले केस के मामले में, दलाई लामा की आत्मा शरीर में प्रवेश करती थी, अब यह किसकी आत्मा है?"

"उन्होंने वैज्ञानिक तरीकों से अपने लिए शाश्वत जीवन प्राप्त कर लिया था। हो सकता है कि हमने उन्हें मृत्यु समझ लिया हो," खान ने सोचते हुए कहा।

"यह तर्क अपने मूल स्वरूप में नहीं है।"

"यह तथ्य कि संस्थान में उनकी छाती हिल रही थी, इस बात का संकेत है कि उनकी जान नहीं गई थी, बल्कि यह कि एक गंभीर सदमे के कारण उनकी गतिविधियां बंद हो गई थीं।"

"लेकिन इसकी संरचना टुकड़ों में बिखर गई थी?"

"उसकी हड्डियों और उनके चारों ओर लिपटी मोटी, विशिष्ट नसों में रक्त का निरंतर प्रवाह था जो कभी रुकता ही नहीं था। यह संदिग्ध है कि किसी ने किसी तरह उसके सभी अंगों को फिर से जोड़ दिया हो। इसके बिना, उसका जीवित रहना असंभव होता।" खान छत की ओर देखते हुए बड़बड़ाने लगा।

"यदि यह संभव है, तो निश्चित रूप से यह कार्य कोई महान वैज्ञानिक ही कर सकता है।"

मैं चार दिन से इस रिसर्च में लगा हूँ। लेकिन जो भी हो, इसे हमारे हाथों कोई नहीं बचा सकता।

"क्या आपको किसी पर शक है?"

यह संभवतः संस्थान के उन डॉक्टरों में से एक था, जिन्हें सुपर और सालाजार के वक्षस्थल में अमरता के वैज्ञानिक निहितार्थों पर शोध करने का काम सौंपा गया था।

क्या वे सभी ?

जब सालाज़ार की छाती धड़क रही थी, तो कुछ डॉक्टरों ने सोचा कि उसके डायाफ्राम का ऑपरेशन किया जाना चाहिए, लेकिन..."

लेकिन क्या ?

51

"डॉ. नॉर्मन ने उन्हें ऐसा करने से रोका था। उन्होंने उन्हें शांत होने तक इंतज़ार करने की सलाह दी थी, और उसी रात छाती का केस गायब हो गया।"

"तो आपका मतलब डॉ. नॉर्मन है?" बाले कहना चाहता था।

"सिर्फ़ शक है, कोई सबूत नहीं?" ख़ान ने बीच में ही टोकते हुए कहा। "संस्थान के निदेशक मंडल ने सरकारी वैज्ञानिक अनुसंधान प्रयोगशाला से एक तोला रेडियम मँगवाया था और संस्थान के रिकॉर्ड के अनुसार, इसका इस्तेमाल कुछ रेडियो संचालन प्रयोगों के लिए किया गया था।"

"आपने इन प्रयोगों पर शोध किया होगा?"

" नहीं। ऐसे प्रयोगों में उच्च-स्तरीय आधिकारिक गोपनीयता शामिल होती है और केंद्र सरकार की अनुमति के बिना इस संबंध में कोई कदम नहीं उठाया जा सकता। मैंने पुलिस आयुक्त के माध्यम से अनुमति मांगी है।"

तो क्या रेडियम टॉर्च ...?

तुम्हें अभी इस बारे में चुप रहना होगा। हमें सबसे पहले सालाजर का सुराग लगाना है , । ये वो बाला झाई जिस पर काबू करने में पसीने आने लगते हैं ।

"वे पहले ही आ चुके हैं।"

"अब वह पहले से भी अधिक खूनी साबित हो सकता है?"

यह मुमकिन नहीं है, लेकिन सालाज़ार का असली जुनून खूबसूरत महिलाओं के खिलाफ था। वह अपने मनोवैज्ञानिक जुनून के चलते सिर्फ़ खूबसूरत लड़कियों को ही मारता था।

और इस बार तो वो सिर्फ़ आदमियों को मार रहा है। -- बाले ने कहा । यह भी हो सकता है कि कोई साज़िशकर्ता के भेष में पुलिस को गुमराह करने की कोशिश कर रहा हो -

52

खान ने स्वयं अपने शब्दों से इनकार किया।

"यह भी संभव है, वह भी संभव है, तो यह ऊँट किस करवट बैठेगा?" बाले ने अपनी गर्दन दोनों ओर झुकाते हुए पूछा।

"चुप रहो, बेटा। कभी-कभी जल्दबाज़ी नुकसानदेह हो सकती है," खान ने उठते हुए कहा। बाले भी कमरे से बाहर आ गया और थोड़ी देर बाद हाथ-मुँह धोकर नाश्ते की मेज़ पर बैठ गया।

जब वे दोनों बंगले से निकले, तब तक नौ बज चुके थे। खान अपनी लंबी काली कार खुद चला रहा था। जब उसकी कार शहर की विभिन्न सड़कों को पार करते हुए पुलिस मुख्यालय में दाखिल हुई, तो इंस्पेक्टर डिसूजा वहाँ इंतज़ार कर रहे थे।

क्या वह आदमी आ गया?”

"हाँ, यह कार्यालय में है।"

"तुम उसे प्रोजेक्शन रूम में ले आओ।" यह कहकर खान बड़े हॉल को पार करके तेज़ कदमों से जाँच कक्ष में दाखिल हुआ। बाले चुपचाप उसके पीछे-पीछे चला। जैसे ही वह एक मेज़ पर बैठा, उसने कॉल बेल बजाई। तुरंत एक हेड कांस्टेबल सामने आया। उसने सलामी दी और सावधान मुद्रा में खड़ा हो गया।

"सार्जेंट इसरार से कहो कि वह रिकॉर्ड रूम से सालाज़ार की फ़िल्म की एक कॉपी लेकर तुरंत आ जाए। और हाँ, उसे प्रोजेक्शन रूम ऑपरेटर के पास भेज दो," ख़ान ने आदेश दिया। और हेड कांस्टेबल मुड़कर चला गया।

कुछ ही मिनटों बाद, वे एक अंधेरे प्रक्षेपण कक्ष में थे, जो चारों ओर से बंद था।

53

पुलिस, आरामदायक कुर्सियों पर बैठी, सामने लगी छोटी सी सफेद स्क्रीन पर सालाज़ार की फिल्म देख रही थी, जो सुपरिंटेंडेंट खान ने मेडिकल डॉक्टर से हासिल की थी और जिसकी एक प्रति उन्होंने मुख्यालय के रिकॉर्ड ऑफिस में रखी थी। फिल्म में सालाज़ार के अमरत्व प्राप्ति के वैज्ञानिक प्रयोग के तुरंत बाद के परिवर्तन और उसके बाद की घटनाओं को दिखाया गया था। जैसे ही सालाज़ार अपने अंतिम और सबसे भयानक रूप में स्क्रीन पर प्रकट हुआ, प्रोजेक्शन रूम में एक भयानक चीख गूंज उठी। खान ने इशारा किया और फिल्म रोक दी गई और

बिजली का स्विच ऑन कर दिया गया। कमरा रोशन हो गया। आगे की सीट पर वह आदमी बैठा था जिस पर रात में हमला हुआ था। उसकी आँखें डर से खुली हुई थीं और चेहरा पीला पड़ गया था।

काफी देर बाद उसे होश आया।

सब कुछ वैसा ही था। वही भयावह साया, वही आकृति। उसकी आँखें उसी तरह घूर रही थीं, अपनी कोठरियों में। वह बुदबुदाया, लगभग चीखते हुए।

सुपरिंटेंडेंट खान ने इंस्पेक्टर डिसूजा को इशारा किया और डिसूजा उस आदमी को अपने साथ बाहर ले गए। कुछ देर बाद सुपरिंटेंडेंट खान भी बाहर आ गए। वह आदमी जाँच कक्ष में एक कुर्सी पर लेटा हुआ था, फैला हुआ। खान उसके पास खड़ा था। इशारा पाकर, बाले ने कमरे की बड़ी खिड़की के पर्दे उठाए और खान उसकी गर्दन को ध्यान से देखने लगा। वह शायद गला घोंटने के निशान ढूँढ रहा था, लेकिन अब वे निशान मिट चुके थे।

कार्यालय में कुछ महत्वपूर्ण कागजात देखने तथा डिसूजा को कुछ आवश्यक निर्देश देने के लिए बाद में खान ने बाले को वहीं छोड़ दिया और खुद आईजी से मिलने चले गए।

54

बंदरों का एक पार्सल

"हैलो, स्वीटी," बाले ने ने कहा, पेगी को झील के किनारे सीमेंट के चबूतरे पर, अपनी उम्मीद के विपरीत, खड़ा देखकर वह चौंक गिया । शीला पेगी उसे यहाँ देखकर थोड़ी घबरा गई , लेकिन

फिर जल्दी से संभल गई और मुस्कुराते हुए चुपचाप उसके चेहरे को देखने लगी। प्यार भरे भाव के साथ, वह स्टील पाइप की बाड़ के पास खड़ी हो गई।

"क्या तुम्हारा वो उल्लू का पट्ठा साथ नहीं आया?" बाले ने पूछा।

"वह तुम्हें ढूंढ रहा होगा," पेग्गी ने हंसते हुए जवाब दिया।

"क्यों?" बाले ने मासूम चेहरा बनाते हुए पूछा।

"कहता था, 'मैं इस दुखी प्रेमी की हड्डियों का लेप बनाऊंगा और उसकी आंखों पर लगाऊंगा।'"

"ओह, तो मुझे तुमसे प्यार करना ही होगा, डार्लिंग," बाले ने जवाब दिया।

"तुम्हारा पुलिस से कोई संबंध तो नहीं है न?"

"पुलिस? बाले उछल पड़ा? मैं पीढ़ियों से पुलिस का पारिवारिक दुश्मन रहा हूँ। तुम्हें ज़रूर कुछ ग़लतफ़हमी हुई है, मेरी जान प्यारे," बाले ने तुरंत अपनी हालत पर काबू पाते हुए कहा।

"आपने कितना भोंडा शब्द इस्तेमाल किया है," उसने कुछ शब्दों में कहा।

"हमारा उठना बैठना ऐसा ही है, क्या किया जाए ?"

"होटल मैनेजर कहता , 'आप ज़रूर कोई पुलिसकर्मी होंगे।'"

बकता था, दिन में साला-सपने देखता है । मैं दिल्ली की जामा मस्जिद के नीचे

पुलिसवालों का अचार बनाकर बेचा करता था। किस्मत का फेर मुझे तुम्हारे प्यार के चक्कर में यहाँ खींच लाया।"

" आदमी दिलचस्प हो ।"

"तुम ने दिल चिपका कर देखा ही कहाँ है ।"

"अगर वह यहाँ आएगा, तो तुम्हारा भुरता बना देगा।"

"और मैं उसके लिए ऑमलेट बनाऊंगा .

"इतना बहादुर तो नहीं हो ।.

ग़लत फहमी है तुम्हारी , नहीं हैं, वरना मैं रुस्तम बिन कहसम बिन सोहराब के परिवार का एक सौ एक सौवाँ फ़रज़ंद याने बेटा हूँ... आई एम सोरी , चश्मे चिराग हूँ।

कितना अच्छा होता अगर "नूर चश्मा" कहते! पैगी के मोती जैसे दाँत चमकने लगे।

"प्रिय, क्या आज तुमने कुछ पी तो नहीं ली है ?"

"मुझे तो तुम पिये हुये लग रहे हो। अरे, देखो, वो आ रहा है। तुम अभी यहाँ से चले जाओ।" बोलते-बोलते वह घबरा गई।

"अरे, क्या तुम मुझे चूहा समझती हो? आने दो साले को ।"

प्लीज़, डिअर , मेरी खातिर। मैं चाहतीहूँ कि तुम ज़िंदा रहो। वो उसकी खुशामद करने लगी .

पर आज मैं प्रेम का शिकार बन कर ही रहूँगा। बाले वहाँ जम गया ।

भगवान के लिए, यहाँ से चले जाओ। उसने उसे डाँटा, पर बाले टस से मस न हुया ।

इतने में बीच पक्की सड़क पार करने वाला पास आया। वही गठीला शरीर वाला एक स्वस्थ आदमी था जिसे बाले ने होटल में देखा था। वह दूर से बाले को गुस्से भरी निगाहों से घूर रहा था। पेगी आगे बढ़कर उसके पास गई।

"तुमने उससे फिर बात की," उसने पेग्गी से गहरी आवाज में कहा।

"मैं आपकी राह देख रही थी , और वह खुद ही आकर वहाँ खड़ा हो गया।"

मैं आज इसका दिमाग ठीक कर दूँगा।' यह कहते हुए वह पेग्गी को एक तरफ धकेल बाले के करीब आया ।

"सावंत , पेग्गी पीछे से चीखी ।"

"ओह, तो तुम सावन हो। मुझसे मिलो, मुझे भादों कहते हैं ।" बाले ने अपना एक हाथ आगे बढ़ाया।

"बेवकूफ " सावंत का मुक्का हवा में उठा, लेकिन उससे पहले ही बाले का मुक्का उसकी खोपड़ी पर इतनी ज़ोर से लगा कि वह चीख़ते हुए ज़मीन पर गिर पड़ा। बाले उछला और फिर उसकी छाती पर चढ़ गया और दो-तीन और मुक्के मारे, लेकिन वह बाले से कहीं ज़्यादा बड़ा और ताकतवर था। उसने एक ज़ोरदार मुक्का मारकर बाले को पीछे धकेल दिया और अगले ही पल, बाले के ज़ोरदार मुक्के ने उसे दिन में तारे दिखा दिए। अगर उसने उसे फिर से मारा होता, तो बाले शायद ज़मीन पर गिर पड़ता, लेकिन ऐन मौके पर एक पुलिस हवलदार आया और उसने सावंत का हाथ थाम लिया।

"आप लोग बहुत बुरी तरह लड़ रहे हैं?" सार्जेंट ने कहा।

सावंत ने सार्जेंट से कहा, "यह बदमाश मेरी पत्नी को छेड़ रहा था।"

नहीं, नहीं, यह खुद ... बाले कहना चाहता था कि सावंत ने उसे फिर मुक्का तान दिया । वह भागा और सार्जेंट ने फिर से उसका हाथ पकड़ा । ।

"क्या यह सच है?" सार्जेंट ने पेगी से पूछा। उस ने अजीब निगाहों से बाले और फिर सावंत की तरफ देखा और चुपचाप हाँ में सिर हिला दिया।

"अरे, चलो मेरे साथ पुलिस स्टेशन चलते हैं।" सार्जेंट ने बल्ले का कॉलर पकड़ लिया।

"अरे भाई, तुम मेरा गला क्यों घोंट रहे हो?" बाले बड़बड़ाया, लेकिन फिर कुछ सोचकर वह उसके साथ चला गया।

"हाथी के दाँत के बच्चे, मैं तुम्हें फिर से समझूँगा।" उसने चलते हुए कहा। उन्होंने पलटकर सावंत को फिर चुनौती दी।

"अरे, सीधे चलो, वरना," सार्जेंट ने फिर से उसका कॉलर पकड़कर उसे हिलाया। पेगी और सावंत वहीं खड़े रहे। और बाले सार्जेंट के साथ प्लेटफार्म से उतरकर सड़क पार करके अपनी जीप की तरफ़ बढ़ गया। सार्जेंट ने उसे अंदर धकेल दिया और खुद गाड़ी चलाने लगा।

"अरे, अच्छे पुलिस वाले भाई, तुम मुझे कहाँ ले जा रहे हो?" उसने सार्जेंट से पूछा.

" नरक में"

"लेकिन वह बहुत दूर है। इस नरक में अकेले रहना कितनी शर्म की बात है।"

"चुप रहो," सार्जेंट ने उसे डांटा।

"अरे, इतना सुहाना मौसम, इतनी रोमांटिक जगह और तुम यार कैसे अखरोट हो " बाले ने उसकी ओर झुकते हुए अंतिम शब्द कहे।

"तुम्हारा कोई पेंच ढीला तो नहीं है ?" सार्जेंट ने दिलचस्पी से उसकी ओर देखा।

"अब ढीला कहाँ है? उसे इंडियन ऑटोमोबाइल वर्कशॉप में कस दिया गया था ।"

"अब बैठ जाओ, वरना मुझे तुमसे निपटना पड़ेगा।"

अरे तानाशाह, तू कितना क्रूर है, हम कितने वफादार हैं और हम अपनी जान देते हैं, और तुम आँखें दिखाता है," बाले ने व्यंग्यात्मक मुद्रा बनाते हुए कहा।

"ओह, शायर की दुम , तुम चुप रहोगे या नहीं?"

" नहीं बैठूंगा। किस भारतीय दंड संहिता में चुप बैठना लिखा है?"

"यह तो अजीब उल्लू है।" सार्जेंट हँसा।

"ठीक है, अब गाड़ी रोको, हम बहुत दूर आ गए हैं। बाले अचानक बोला , और गंभीर हो गया

क्या मतलब है तुम्हारा? हवलदार ने उसे अजीब निगाहों से देखा और पूछा। जवाब में, बाले ने जेब से अपना पहचान पत्र निकाला और उसे दिखाया। उसे देखते ही वह चौंक गया।

"अरे, आप।" उसने तुरंत गाड़ी के ब्रेक लगा दिए।

"हाँ। वह आदमी संदिग्ध है। मैं उसका पीछा कर रहा हूँ," बाले ने जवाब दिया।

मुझे क्या पता था? सार्जेंट ने माफ़ी मांगी।

तुमने बहुत अच्छा किया। उस समय उसके रास्ते से हटने का यही सबसे अच्छा तरीका था।

बाले ने उतरते हुए जवाब दिया।

“क्या मैं आपकी कुछ मदद कर सकता हूँ?” सार्जेंट ने पूछा।

मैं अकेले ही टीम का नेतृत्व करने के लिए पर्याप्त हूँ, ज़रूरत पड़ी तो आपको बता दूँगा। बाले ने हाथ मिलाते हुए कहा.

मेरा नाम हीरा सिंह है।

मुझे पता है। स्नान मुस्कुराया।

"अगर आप मुख्यालय वाले नहीं जानेंगे, तो कौन जानेगा?" हीरा सिंह ने हँस कर जवाब दिया। और फिर धीरे-धीरे अपनी जीप आगे बढ़ा दी। बाले कुछ देर वहीं खड़ा रहा,

वह सोचता रहा, फिर वह सड़क से नीचे ढलान पर वापस चला गया।

☆

59

अजीब हरकत है ! बाले सुपरिंटेंडेंट खान के सामने सुबह का अखबार पकड़े हुए बड़बड़ाया

"शायद तुम बंदरों वाली खबर पढ़ने के बाद ऐसा कह रहे हैं?" खान मुस्कुराया।

"आप बहुत बुद्धिमान हो, लेकिन बंदरों का यह पार्सल गोदी से गायब कैसे हो गया?" बाले ने पूछा।

" बंदर ही आकार गायब कर गए होंगे, उन्हें ऑस्ट्रेलिया भेजा जा रहा था। अपनों की हमदर्दी कौन नहीं रखता?"

आप गंभीर नहीं हो। बस मज़ाक कर रहे हो। बाले ने तुनक कर कहा

मैं बिल्कुल गंभीर हूँ बेटा, लेकिन तुम बंदर के चक्कर में मत पड़ना। किसी कारोबारी का काम हो .

"तो क्या मुझे यहीं बैठकर मक्खियाँ मारनी चाहिए?" बाले ने चिढ़कर कहा।

मुझसे यह छिपाने की कोई जरूरत नहीं है कि तुम पेगी के रिश्ते अपनी दुश्मन रुसियाका से पीछा कर रहे हो

"अल्लाह आप को समझे, आप तो पूरी दुनीया की खबर रखते हैं ?"

"जासूस बहुत पैनी नज़र रखते हैं , समझे बरखुरदार ?

"तो बांदा वाकई पैनी नज़र वाला हो गया है।"

बकवास मत करो "

"सीआईडी के लोग जादूगरों की तरह हैं।"

"खैर , अपना काम करो।" यह कहकर खान खड़ा हो गया। उसकी कार बाहर लॉन में इंतज़ार कर रही थी।

वह उसमें बैठ गया
और बाले गंभीरता से सोचते हुए रह गया कि आखिरकार,

अधीक्षक खान आजकल उसे नज़रअंदाज़ क्यों कर रहा है? इस एहसास के साथ उसके दिल और दिमाग़ में एक हल्की सी उदासी छा गई। पर फिर भी, शायद अपने दिल को यह तसल्ली देने में कुछ फ़ायदा हो, वह भी उठ खड़ा हुआ।

##############

खान की कार डॉक पारसल कार्यालय के बाहर खड़ी थी और वह अंदर कंसाइनमेंट क्लर्क से बात कर रहे थे।

"ये बन्दर कहाँ से भेजे गये थे?"

"मथुरा से आए था। उसे रेलवे द्वारा गोदी ले जाया गया था," क्लर्क ने हिचकिचाते हुए उत्तर दिया।

वे कब गायब हो गए? "

"उसका पिंजरा कल शाम को गोदी शेड में रखा गया था, पर सुबह गायब था।"

क्या यहाँ रात को गार्ड नहीं रहते?

"जी रहते हैं, लेकिन उनका एक गार्ड भी लापता है।"

इसका नाम क्या है

गुल मुहम्मद खान"

"हमममम ... शेड की अच्छी तरह से तलाशी ली है?"

पोर्ट ट्रस्ट पुलिस ने तलाशी ली थी, लेकिन कुछ खास नहीं मिला। बस पिंजरे की तलाश कर रहे थे।"

"इसमें कितने बंदर थे ?"

"आठ"

61

"उन्हें कहाँ भेजा जा रहा था?"

मेलबर्न सर्जिकल अनुसंधान संस्थान को

हम्म -- यह कहकर खान दफ्तर से बाहर चला गया। फिर वह शेड में घुस गया और उसका निरीक्षण करने लगा। लेकिन वहाँ कुछ भी खास नहीं मिला। पता नहीं वह यहाँ क्यों आया था, वरना वह आमतौर पर किसी भी गैर-रहस्यमय मामले में दखलअंदाज़ी नहीं करता और यह मामला इतना मामूली था कि इस पर ज़्यादा सोचने की ज़रूरत ही नहीं थी। शायद इसीलिए उसने क्लर्क से बस कुछ ही सवाल पूछे। शेड से बाहर आकर वह गोदी का चबूतरा पार करके वापस लौट ही रहा था कि एक पठान चौकीदार की आवाज़ ने उसका ध्यान खींचा। वह एक साथी चौकीदार को पुकार रहा था।

"ओह खलील खान, और अज़ारी। यह गुल मोहम्मद खान गड्ढे में पड़ा है।"

उसकी आवाज़ सुनकर एक और चौकीदार दौड़ा। गुल मुहम्मद का नाम सुनकर सुपरिंटेंडेंट ख़ान भी मुड़े। वे सब प्लेटफ़ॉर्म के अंत में शेड के पास एक गड्ढे के चारों ओर इकट्ठा हो गए थे। ढलान पर एक गड्ढा था, जिसमें शायद गोदाम का कचरा फेंका जाता था। यहाँ, एक बड़े चीथड़े के डिब्बे की आड़ में, एक पठान चौकीदार पड़ा था। उन्होंने मिलकर उसे उठाया। उनमें से एक उसकी नब्ज़ जाँचने लगा।

वह अभी ज़िंदा है, वह अभी ज़िंदा है। उसने कहा। और फिर जैसे ही उसने उसे हाथ-पैरों से देखा, उसे पकड़कर प्लेटफ़ॉर्म पर ले आया। सुपरिंटेंडेंट ख़ान उसके पास आया। उसे देखते ही उसने उसके दोनों पैर पकड़ लिए और सीधा खड़ा हो गया।

सर... ये ---एक घबराहट में कुछ कहना चाहता था।

लगता है वह बेहोश है। खान ने खुद मुस्कुराते हुए कहा।

"लो, इसे सूँघा दो ।" खान ने अपनी जेब से एक सफ़ेद शीशी निकाली। जैसे ही उसने उसे खोला और सूँघाया , पहरेदार ने घुरघुराहट की और आँखें खोलीं, लेकिन वह कुछ डरा हुआ सा इधर-उधर आँखें घुमाने लगा ।

62

"ओह गुल मुहम्मद खान, उठो," खलील खान ने पुकारा।

"हे भगवान, यह कितनी अंधेरी रात है," वह बुदबुदाया।

"ओह, अभी रात नहीं है, अभी तो सुबह के दस बजे हैं," खलील खान ने घड़ी दिखाते हुये कहा।

दिन के दस बजे? " गुल मुहम्मद ख़ान उछल पड़े। लेकिन ख़ुदा की क़सम, हमें कुछ दिखाई नहीं दे रहा। अँधेरा है। उन्होंने अपने साथियों को हाथों से दूर धकेलने की कोशिश करते हुए जवाब दिया। दोनों ख़ान आश्चर्य से एक-दूसरे को देखने लगे।

"ये तो अंधे हो गए हैं," सुपरिंटेंडेंट खान ने गुल मुहम्मद के पास आकर कहा।

अंधा? गुल मुहम्मद चीखा , या खुदा , रहम , या अल-रहमान अल-रहमीन।

"तुम उस गड्ढे में कैसे गिरे?" अटेंडेंट खान ने पूछा।

"गड्ढे में? गड्ढे में कैसे? उम्म, मैं गोदाम में ड्यूटी पर था।"

"क्या कल रात कुछ हुआ था?"

ओ हाँ, कल आधी रात को, काले कपड़े पहने दो आदमी अंदर आए। हमने उसको टोका तो -- ... भगवान की कसम, वो... हाँ, वो क्या चमक थी - उसकी कुछ रोशनी बिजली की तरह हमारी आँखों पर पड़ी और... और , अब हमें कुछ भी पता नहीं है।

अच्छा, इन्हें अस्पताल ले चलो। खान ने इतना कहा और पलट गया ।

गुल मुहम्मद खान अपने अंधेपन के बारे में सोच कर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। उसके साथी उसे दिलासा दे रहे थे। सुपरिंटेंडेंट खान ने चौकीदार के गायब होने की खबर पहले ही पढ़ ली थी और जैसे ही वह वहाँ से गुज़रा, उसने उसे देखना चाहा, लेकिन गुल मुहम्मद खान अंधा हो गया और बंदरों का पैकेट गायब हो गया।

इस घटना ने उसे झकझोर दिया। अब उसे मामले पर अलग ढंग से विचार करना था।

################

शाम को वह पुलिस मुख्यालय से जल्दी घर लौट आया। लेकिन बाले अभी तक नहीं आया था। उस समय खान का मन थोड़ा व्याकुल था। रेडियम प्रयोगों के अनुसंधान के लिए केंद्र सरकार से अभी अनुमति नहीं मिली थी। इस बीच, संस्थान मामले की आड़ में वह एक बार डॉ. रमन और अन्य डॉक्टरों से मिला था, लेकिन उनमें से किसी ने भी उसे पहले से सामने आई बातों से ज़्यादा कुछ नहीं बताया।

सारी जाँच अब पूरी गोपनीयता के साथ चल रही थी। सालाज़ार के ज़िंदा होने की ज़रा सी भी भनक पुलिस को तब तक नहीं लगी थी जब तक कि सुपरिंटेंडेंट ख़ान ने ख़ुद अपनी जाँच पूरी करके इसकी पुष्टि नहीं कर दी। जितनी भी गुमशुदगी हुई थी, उनमें कुछ भी सनसनीखेज नहीं था। कुछ संबंधित शहरों की पुलिस से भी उनकी तलाश करने का अनुरोध किया गया था, लेकिन अभी तक उनका एक भी सुराग नहीं मिला था।

शाम बीत गई और रात हो गई, लेकिन बाले नहीं आया। नौ बजे तक उसका इंतज़ार करने के बाद, खान अपने पढ़ने के कमरे में गया और अलमारी खोली, किताबों के पीछे से एक बक्सा निकाला, बक्से में से कुछ निकाला, जेब में रखा, अलमारी बंद की और कमरे से बाहर निकल गया।

"गुलाम रसूल, अगर बाले आए तो उसे सर्किट हाउस पुलिस स्टेशन भेज देना।" यह कहकर उन्होंने अपना ओवरकोट पहना और बाहर निकलकर अपनी कार में बैठ गए।

☆☆

64

बाले का अपहरण

सुबह-सुबह डेली स्टैंडर्ड अख़बार ने तहलका मचा दिया। अपने ताज़ा समाचार कॉलम में उसने दो लोगों के रहस्यमय ढंग से लापता होने और एक की मौत की ख़बर दी थी, और जो मरा था उसकी गला घोंटकर हत्या की गई थी। उसका शव माधवगंज की एक गली में पड़ा मिला। उसकी आँखें धँसी हुई थीं और जीभ भी कुछ बाहर निकली हुई थी। पुलिस ने घटनास्थल और आस-पास के इलाकों में तलाशी ली, कई गुंडों को गिरफ़्तार किया, लेकिन अभी तक कोई संतोषजनक नतीजा नहीं निकला था। डेली स्टैंडर्ड ने अपने कॉलम में पुलिस को खूब फटकार लगाई थी। उसने इसे वयस्कों के अपहरण की सातवीं घटना माना था और पुलिस की लापरवाही और कुप्रबंधन की कड़ी आलोचना की थी।

जब आईजी का फोन आया तो सुपरिंटेंडेंट खान बैठे-बैठे अखबार पढ़ रहे थे।

"ये क्या अंधेर मच रहा है, मिस्टर खान?" आईजी ने पूछा। उसका स्वर कुछ कड़वा था।

खान ने जवाब दिया, "आप पुरुषों के लापता होने की बात कर रहे हैं, लेकिन ये मामले अभी तक मेरे ध्यान में नहीं लाए गए हैं।"

 नहीं हुए हैं, इसलिए अब किए जा रहे हैं। आपको तुरंत अपने लोगों को जाँच में लगाना चाहिए। ऐसी घटनाओं को आगे बढ़ने का समय नहीं दिया जा सकता। लापता लोगों का जल्द से जल्द पता लगाना होगा।

" बेहतर है," खान ने विनम्रता से जवाब दिया। आईजी ने रिसीवर नीचे रख दिया और टेलीफोन लाइन कट गई।

65

अब आराम करना बेवकूफी होगी। खान अपनी कुर्सी से उठते हुए बड़बड़ाया। फिर उसने ऊंची आवाज में बले को बुलाया।

"वे अभी तक नहीं आये हैं, महोदय," गुलाम रसूल ने आगे आकर उत्तर दिया।

" नहीं आए?" खान ने सोचा। --अभी तक नहीं आया। वह बड़बड़ाया। फिर वह चौंककर लंबे-लंबे कदम उठाता हुआ कमरे से बाहर आ गया। ड्राइवर दालान में बैठा ऊँघ रहा था।

कार निकालो -- खान की आवाज सुनी और वह नींद से उछलकर स्टूल से नीचे उतर आया।

☆☆

थाने पहुँचकर खान ने इलाके की सभी पुलिस चौकियों और थानों में फ़ोन करके बाले के बारे में पूछा, लेकिन हर जगह से अनभिज्ञता जताई गई। जो भी हो, बाले का गायब होना चिंता का विषय ज़रूर था। हो सकता है कि बाकियों की तरह उसका भी अपहरण कर लिया गया हो। खान ने डिसूज़ा से भी पूछा, लेकिन डिसूज़ा को भी कुछ पता नहीं था। वह काफ़ी देर तक अपने

दफ़्तर में अकेले बैठा सोचता रहा, फिर उसने अर्दली को फ़ोन करके सार्जेंट असरार को बुलाने को कहा। असरार उस समय नीचे था, सूचना मिलते ही वह पहुँच गया।

"असरार, चलो होटल चलते हैं और शीला पेगी से बाले के बारे में किसी तरह पता लगाने की कोशिश करते हैं। तुम बेहतर समझ सकते हो कि क्या तरीका अपनाना है," खान ने आदेश दिया।

"बहुत अच्छा," असरार ने कहा, ध्यान आकर्षित करते हुए और तुरंत कमरे से बाहर निकल गया।

66

हथियारबंद बंदरों का जुलूस

शहर में कुछ दिनों से अजीबोगरीब घटनाओं का सिलसिला चल रहा था। बंदरों के पार्सल के गायब होने का राज़ पोर्ट ट्रस्ट से छिपा न रह सका और किसी तरह यह खबर प्रेस तक भी पहुँच गई। अखबार वालों ने "गजब का दौर " और "पुलिस कहाँ सो रही है" जैसी सुर्खियाँ बनाकर टिप्पणियाँ शुरू कर दीं। डॉ. सालाज़ार के संदूक और हड्डियों के गायब होने की बात अभी भी पूरी गोपनीयता में रखी गई थी और पुलिस कमिश्नर ने इस बारे में "खुदा खबर" के संपादकों से वादा लिया था कि जब तक पुलिस पूरी जाँच-पड़ताल न कर ले, तब तक यह खबर जनता तक न पहुँचने दी जाए, वरना बेवजह दहशत फैल जाएगी। वादे के मुताबिक, अखबार इस मामले में सहयोग कर रहे थे और अभी तक किसी ने इस पर कोई राय ज़ाहिर नहीं की थी।

अधीक्षक खान अकेले ही बंदरों के गुम हुए पैकेट का पता लगाने में व्यस्त थे। वे रात के अंधेरे में गोदी तक पहुँचने के हर संभव रास्ते की जाँच कर रहे थे। उन्होंने अपने आदमियों के ज़रिए आसपास के लोगों को भी रात में गोदी की ओर जाते किसी आदमी या मालवाहक ट्रक के बारे में बताया, लेकिन किसी को कुछ पता नहीं चला।

सार्जेंट असरार सुबह बाहर गए थे और दो बजे लौटे। उन्हें बस इतना पता चला कि एवरग्रीन होटल में पेगी के साथ एक लंबा-चौड़ा, हट्टा-कट्टा आदमी था, जो काफ़ी गंभीर लेकिन खूँखार लग रहा था। हालाँकि, एक बार वे दोनों हॉल के बाहर बरामदे में बैठकर किसी नए शिकार के बारे में बात कर रहे थे, और इसी सिलसिले में उस आदमी ने एक ऐसा वाक्य कहा था जिससे बाले के बारे में कुछ पता चलता था।

मुझे शक है, डार्लिंग, --वह आदमी कह रहा था कि वह कोई पुलिसवाला होगा।

67

"तो क्या हुआ? अब वह वहाँ से बचकर भी नहीं निकल पाएगा, फिर क्या होगा?" पेगी ने कहा।

उसके बाद, वे किसी और विषय पर बात करने लगे और वह आदमी देर रात तक होटल में पैगी के साथ रहा, लेकिन सार्जेंट असरार पैगी के चरित्र को भी नहीं समझ पाए। क्योंकि वह उस आदमी के इतने करीब होने के बावजूद, उसके प्रति सतर्क लग रही थी। लगभग डेढ़ बजे, वह आदमी एवरग्रीन होटल से बाहर आया। उसी समय, कहीं से एक गहरे नीले रंग की कार होटल के पीछे आकर खड़ी हो गई। जैसे ही वह आदमी बाहर निकला, कार का दरवाज़ा खुल गया और जैसे ही वह अंदर गया, कार चल पड़ी।

क्या पैगी उसके साथ नहीं गई?’ खान ने पूछा।

जी नहीं।

"तुम इस आदमी का पीछा करते।"

"मैं भी यही चाहता था, लेकिन जब मैं होटल से बाहर आया और अपनी मोटरसाइकिल उठाई, जो एक पेड़ की छाया में खड़ी थी, तो उसके दोनों पहियों में हवा नहीं थी।"

"वे बहुत चतुर लोग हैं। अच्छा, क्या तुम्हें कुछ और पता चला?"

असरार ने कहा, " जब वह व्यक्ति होटल के पिछले दरवाजे से बाहर निकल रहा था, तो कार में से किसी ने कहा, 'आओ देव ।'"

देव ---ख़ान ने दिमाग़ पर ज़ोर डाला, फिर जेब से एक नोटबुक निकाली और ये नाम लिखा।

खैर, अब आप जा सकते हैं। अगर किसी चीज़ की ज़रूरत हो, तो मैं आपको फ़ोन कर दूँगा। खान ने असरार को इजाज़त दे दी। और वह मुस्कुराया, सलाम किया और बाहर चला गया। और खान भी खड़ा हो गया। आज बाले के गायब होने से उसकी तबियत खराब थी। इसलिए वह अपनी गाड़ी लेकर शहर की गश्त पर निकल पड़ा।

68

वह आधी रात तक अलग-अलग इलाकों की सड़कों पर घूमता रहा। फिर उसने देखा कि हर इलाके में गश्त कर रही पुलिस पिछली रात की तुलना में काफ़ी सतर्क और सजग लग रही थी।

जो अधिकारी या सिपाही उसे या उसकी गाड़ी को पहचानते थे, वे उसे देखते ही ध्यान देने लगते थे, और जो नहीं पहचानते थे, वे बस देखते ही रह जाते थे।

गश्त के दौरान उन्होंने कई बार वायरलेस पर अलग-अलग स्टेशनों से गेंद के बारे में पूछताछ भी की, लेकिन किसी को इसकी जानकारी नहीं थी। रात के दो बजे जब वे घर लौटे, तो बहुत थके हुए थे। गुलाम रसूल बिना कुछ खाए ही सो गए थे। खान के आते ही वह ज़ोर से उठ बैठे, लेकिन उस समय खान को भूख नहीं थी। उन्होंने कपड़े बदले और सीधे अपने शयनकक्ष में चले गए।

अगली सुबह जब वह उठा, तो गुलाम रसूल ने नाश्ता मेज़ पर रख दिया था। वह मुस्कुरा रहा था।

वह अपने कपड़े धोने बैठ गया।

"बाले से कोई समाचार या फोन आया है?" उसने नौकर से पूछा।

गुलाम रसूल ने जवाब दिया, "कल से कुछ नहीं, साहब।"

यह अजीब बात है? वह बड़बड़ाया। लेकिन उम्मीद के विपरीत, गुलाम रसूल को पता नहीं कायोन हंसी आ रही थी , और वह अपना मुंह दबाने की कोशिश कर रहा था। खान ने देखा।

"क्या बात है, गुलाम रसूल?" उसने गंभीरता से पूछा।

"श्रीमान, श्रीमान," ---एक बन्दर ----उस ने पागलों की तरह हँसते हुए कहा।

"क्या हुआ?" खान ने फिर पूछा।

"सर, मैं आज सुबह अंडे खरीदने के लिए बाजार गया था और एक अजीब बंदर देखा।"

ओह ---खान दिलचस्पी से सुनने लगा।

साहब , वो आज सुबह-सुबह इधर निकल आया। उसने कमाल का खेल दिखाया । मैंने इतना ट्रेनिंग वाला बंदर कभी नहीं देखा, सर्कस में भी नहीं।

69

"आखिर तुमने ऐसा क्या देख लिया?"

साहब, वो बड़े ही अदब से लोगों का अभिवादन करता है, हाथ मिलाता हैं, मेज़ पर बैठकर चाय पीता हैं और दो पैरों पर चलता हैं। जब आप बात करते हैं, तो वो सबकी बात सुनता हैं और जवाब में सिर हिलाता हैं। उनकी सारी हरकतें मर्दों जैसी हैं। गुलाम रसूल ने अपनी हँसी रोकने की कोशिश करते हुए कहा।

" दिलचस्प खबर है। वह कहाँ है?"

वह सड़कों पर टहल रहा है।

"कोई सभ्य बंदर होगा ।" खान हँसा और अपना नाश्ता खत्म करने लगा।

करीब 9 बजे नाश्ता आदि समाप्त करने के बाद उन्होंने अपने कपड़े बदले और अपनी कार से सेंट्रल स्टेशन
पुलिस स्टेशन की ओर चल पड़े।

माधव गंज क्षेत्र से गुजरते हुए, जब उनकी कार बाजार से गुजर रही थी, तो एक समय ऐसा आया कि गाड़ी को एक निश्चित स्थान पर रुकना पड़ा। आगे लोगों की भारी भीड़ थी। वे किसी बात पर बड़े चाव से हँस रहे थे। खान ने अपनी गाड़ी एक तरफ़ लगाई और ख़ुद बाहर निकलकर भीड़ को चीरता हुआ आगे पहुँच गया। उसने देखा कि यह लाल बंदरों का एक जुलूस था। उसमें कुल पंद्रह बंदर थे और वे आम सैनिकों की तरह दो पंक्तियों में सड़क पर मार्च कर रहे थे। उनके कंधों पर सैनिकों की तरह बंदूकें थीं। आगे एक बंदर था जो शायद उन सबका नेतृत्व कर रहा था। लोग उन्हें चारों तरफ़ से घेरकर देख रहे थे। और जनता कभी उन्हें आगे बढ़ने की जगह देती तो कभी रोकती। एक बार जब हँसती भीड़ ने उनका रास्ता रोका तो सामने वाला बंदर उनके पास आ गया। कुछ बच्चे और कुछ कायर डर के मारे भाग गए, लेकिन वह बंदर लोगों के पास गया और इशारों से उनसे जाने देने की विनती करने लगा।

लगता है कोई सर्कस आया है, और अपनी परेड के लिए बंदरों की फौज लेकर आया है। भीड़ में से किसी ने अनुमान लगाया।

"वाह, लेकिन वे तो बिल्कुल पुरुषों की तरह व्यवहार कर रहे हैं," दूसरे ने कहा।

उनमें से एक ने, उसकी हंसी को भांपते हुए, बंदर के पास जाकर अपना हाथ बढ़ाते हुए कहा, "नमस्ते, प्रिय मित्र, कैसे हो?"

जवाब में, बंदर ने उसका रूप देखा और हाथ मिलाने के लिए हाथ बढ़ाया। बाकी बंदर मुँह खोलकर हँसने लगे, जिस पर बंदर ने ऊँची आवाज़ में उन्हें डाँटा ।

"लगता है किसी पाप की वजह से तुम इंसान से बंदर बन गए हो?" किसी और ने अपनी राय ज़ाहिर की, तो बंदर ने ना में सिर हिला दिया। उसने अपनी बंदरगिरी नहीं छोड़ी।

"तो बंदर से आदमी बन गए होगे?" आदमी फिर बोला। बंदर ने सहमति में सिर हिलाया।

खान इन गतिविधियों को बड़े ध्यान से देख रहा था। खुदा भी उनकी कुछ हरकतों पर हँसा। जैसे, एक बंदर अपना कान खुजला रहा था, लेकिन जैसे ही उसके सेनापति ने उसे डाँटा, उसने तुरंत अपना हाथ हटा लिया और सावधान हो गया, लेकिन उसी समय खान उनके कंधों पर रखी बंदूकों को देखने लगा। वह खुद उस बंदर के पास आया और उसने उससे बंदूक लेने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन बंदर ने सिर हिलाकर मना कर दिया।

यह नजारा देखने के लिए लोगों की भीड़ बढ़ती जा रही थी। सड़क खचाखच भर गई थी। कमांडिंग ऑफिसर ने आगे खड़े आदमी को एक तरफ धकेल दिया और शायद अपने साथी बंदरों को वार करने का इशारा करते हुए आगे बढ़ने लगा, लेकिन इस बार कुछ साहसी लोग आगे आ गए थे, उन्होंने रास्ता नहीं दिया। आगे खड़ा बंदर उन्हें कई तरह से अपनी बात समझाने की कोशिश कर रहा था।

लेकिन वे उसकी हर हरकत पर हँसते रहे।

अचानक, शायद बंदर को गुस्सा आ गया। उसने अपनी आवाज़ से साथी बंदरों को ललकारा और फिर अपनी बंदूक सीधी करके गोलियाँ चलानी शुरू कर दीं। दो-तीन गोलियाँ चली ही थीं कि पब्लिक अपनी हँसी भूलकर सिर पर पैर रखकर भागने लगी, और बंदर इधर-उधर दौड़-

दौड़कर गोलियाँ चला रहे थे। सुपरिंटेंडेंट खान जैसे ही अपनी गाड़ी में बैठे, उन्होंने वायरलेस पर सेंट्रल पुलिस स्टेशन के डिसूजा को तुरंत पुलिस दस्ता बुलाने के लिए कहा। और फिर वह गाड़ी से उतरकर पिस्तौल लेकर आगे आए, लेकिन जब उन्होंने देखा कि बंदरों की बंदूकों में सिर्फ़ बारूद भरा हुआ है। उनके थूथनों से सिर्फ़ लपटें और धुआँ निकल रहा था और वे ज़्यादातर समय थूथन ऊपर की ओर करके ही गोलियाँ चला रहे थे, तो उनके चेहरे पर एक रोमांचक विचार कौंध गया। वह अपनी मुस्कान और एक रोमांचक विचार को रोक नहीं पाए।

जनता डर के मारे भाग खड़ी हुई। कुछ दूर तक रास्ता साफ़ हो चुका था, लेकिन सेंट्रल पुलिस स्टेशन से एक पुलिस ट्रक और दो गाड़ियाँ आ पहुँचीं, जिनमें इंस्पेक्टर डिसूज़ा, डीएसपी भाईजी और सब-इंस्पेक्टर के अलावा बाईस हथियारबंद सिपाही सवार थे। सबने अपनी-अपनी बंदूकें और पिस्तौलें उठा लीं।

"उनकी ज़रूरत नहीं पड़ेगी, ये भी अच्छे जोकर हैं। ऐसे ही पकड़ लीजिये ।"

"लेकिन उनके पास तो बंदूकें हैं..." भाईजी कहना चाहते थे।

खान ने हंसते हुए कहा, "उन बंदूकों में केवल बारूद भरा हुआ था।"

लेकिन उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि गिरफ़्तारी के दौरान किसी भी बंदर ने विरोध नहीं किया। सभी बंदरों ने अपनी बंदूकें नीचे फेंक दीं और हाथ ऊपर उठा दिए। और जब पुलिस ने उनके पीछे संगीनें लगा दीं, तो वे शरीफ़ कैदियों की तरह दो पैरों पर चलकर पुलिस ट्रक की तरफ़ बढ़े। एक सब-इंस्पेक्टर के इशारे पर वे ट्रक में चढ़ गए और बैठ गए। और खान, भाई जी

और बाकी लोग वहाँ खड़े अजीब निगाहों से उसकी हरकतें देख रहे थे।

आम अपराधियों की तरह, उन्हें नियमों के अनुसार डिटेंशन सेंटर में बंद कर दिया गया। वे काफ़ी गंभीर थे, लेकिन कुछ देर बाद, अधीक्षक खान के निर्देश पर, उन्हें कई डिटेंशन रूम में बाँट दिया गया। सेंट्रल पुलिस स्टेशन के बाहर, लोगों के समूह इन अजीबोगरीब बंदरों को देखने आ रहे थे, और पुलिस कांस्टेबल लोगों से तितर-बितर होने का अनुरोध कर रहे थे। कई पुलिसकर्मी खुद भी डिटेंशन रूम की सलाखों में झाँकने का मौका ढूँढ़ रहे थे। बंदर अंदर शांति से बैठे थे, लेकिन एक बार उनकी हँसी निकल गई जब उन्होंने एक कमरे में एक बंदर को रोते और दूसरे को दिलासा देते देखा।

इस बीच, डीएसपी भाईजी के दफ़्तर में सुपरिंटेंडेंट ख़ान, भाईजी और डिसूज़ा बैठे कुछ बातें कर रहे थे। लगभग दस मिनट बाद जब वे बाहर आए, तो सबके चेहरों पर मुस्कान थी।

डिसूज़ा ने एक हेड कांस्टेबल की ओर इशारा किया और उसके कान में कुछ फुसफुसाया। कांस्टेबल मुस्कुराया, सिर हिलाया और चला गया।

डिसूजा के निर्देश पर जब दोपहर में बंदरों को खाना दिया गया, तो उन्होंने सिर हिलाकर मना कर दिया। दूसरी बार, प्रयोग के तौर पर, उन्हें सामान्य इंसानों वाला खाना दिया गया और वे बड़े संतोष के साथ खाने बैठ गए। आज सेंट्रल पुलिस स्टेशन अपने आप में एक सर्कस सा लग रहा था। दूसरे इलाकों से भी पुलिसवाले इन अजीबोगरीब बंदी बंदरों के बारे में सुनकर उन्हें देखने आ रहे थे, और कांस्टेबल को बार-बार उनसे दूर हटने का अनुरोध करना पड़ रहा था। इन बंदरों को चार अलग-अलग कोठरियों में रखा गया था, जिनमें से दो में पाँच, एक में तीन और दूसरी में सिर्फ़ एक।

जिस कमरे में दो बंदर थे, उस पर पुलिस का कोई खास पहरा नहीं था। कभी-कभी कोई सिपाही उसके पास से गुज़रता और अंदर बैठे बंदर उसे हैरानी से देखते रह जाते। सब खामोश और उदास थे। पुलिस ने अपनी हिरासत में इससे ज़्यादा सभ्य कैदी पहले कभी नहीं देखे थे। शाम होते ही उस तरफ़ से कुछ शोर सुनाई दिया। यह कमरा बिल्कुल आखिर में था। उसके बाद एक बड़ा पत्थर का आँगन था, जिसके चारों ओर बरामदे थे और बरामदों में रिज रोड पर तैनात स्थाई सिपाहियों की अकबरी झोपड़ियाँ थीं। और आँगन के दूसरे छोर पर एक दरवाज़ा था जो कोतवाली के पीछे एक चौड़ी सड़क पर खुलता था। यह दरवाज़ा अक्सर खुला ही रहता था। आखिरी कमरे के दरवाज़े पर एक जूता टँगा हुआ था, वह ज़्यादा भारी नहीं था। एक बार उसका सिपाही कमरे के पास एक स्टूल पर बैठ गया और शायद अपनी जेब से नसवार की डिब्बी निकालने लगा। उसकी लापरवाही में, डिब्बे के साथ ताले की चाबी भी गिर गई, लेकिन उसने ध्यान नहीं दिया। उसने अपनी नसवार फेंक दी और फिर उठकर आगे चल दिया।

चाबी गिरने के बाद से ही दोनों बंदर उसे घूर रहे थे। उनमें से एक ने तुरंत हाथ बढ़ाकर उसे उठा लिया, फिर सलाखों से लिपट गया और एक हाथ से उसे ताले में डालने की कोशिश की, लेकिन पहरेदार के कदमों की आहट सुनकर उसने जल्दी से अपना हाथ खींच लिया। पहरेदार कंधे पर बंदूक रखे कमरे के सामने से गुज़रा, और बंदर ने फिर कोशिश की, जो आखिरकार कामयाब रही और ताला खुल गया। उसने धीरे से ताला हटाया और कुंडी खोली और एक हाथ से सलाखों वाला दरवाज़ा थोड़ा सा खोला ताकि वह बाहर देख सके। कोई ध्यान नहीं दे रहा था। इसलिए, वे दोनों आगे-पीछे, आगे-पीछे कदम रखते हुए चले, और फिर धीरे से दरवाज़ा बंद करते हुए, वे आँगन के पार पिछले दरवाज़े की ओर भागे।

ड्यूटी पर तैनात हेड कांस्टेबल साँस रोके सब कुछ देख रहा था। वह मुस्कुराया और खड़ा हो गया।

और उसने तुरंत स्थानीय पुलिस को फोन किया और इंस्पेक्टर डेविस को उनके भागने की सूचना दी।

@@@@@@@@@@@@

आज की घटना ने सुपरिंटेंडेंट खान को एक नई दुविधा में डाल दिया था। सेंट्रल पुलिस स्टेशन से लौटते हुए वे सीधे रिकॉर्ड ऑफिस गए।

खैरियत है?

खान ने कहा, "रिकॉर्ड कार्यालय के मुख्य सहायक जो सालाजार संदूक मामले में अंधा हो गए थे , उनका पता बताएं।"

"अभी लीजिये," एचए ने जवाब दिया। और पाँच मिनट भी नहीं बीते थे कि वह अंदर से एक कागज़ का टुकड़ा ले आया जिस पर उनके पते लिखे थे।

और कुछ?"

"बस , इसके लिए धन्यवाद," खान मुस्कुराया।

एचए ने टिप्पणी की, "इन दिनों अजीब चीजें हो रही हैं।"

"देखते जाओ , यह दुनिया एक अजायब खाना है," खान ने जवाब दिया, अपनी टोपी ली और फिर हाथ मिलाते हुए बाहर चले गए।

उन्होंने सबसे पहले सेठी से संपर्क किया। सेठी एड मैस्टन रोड पर एक फ्लैट में रहते थे।

काफ़ी इलाज के बाद भी उसकी आँखों की रोशनी में बस थोड़ा सा फ़र्क़ आया। बहुत मामूली, पर वो अब भी लगभग अंधा था। उसने सेठी से कुछ सवाल पूछे, जिनका उसे संतोषजनक जवाब नहीं मिला, और उसे दिलासा देते हुए, वो उसे छोड़कर आर्थर रोड स्थित अरशद के घर चला गया।

अरशद के परिवार के सदस्य उसकी काली, सुंदर कार को दरवाजे पर खड़ी देखकर आश्चर्यचकित हो गए।

उस समय अरशद अभी भी घर पर ही था। उसकी दृष्टि में कोई बदलाव नहीं आया था।

75

अधीक्षक खान का समाचार सुनकर वह धड़ाम से उठ बैठे।

"वे कहाँ हैं? उन्हें बुलाओ, जल्दी बुलाओ।"

खान ने धीरे से कहा, "मैं तुम्हारे पास ही हूं।"

ये क्या हुआ, खान साहब? मैं अंधा क्यों हो गया? कितना ज़ालिम इंसान है।

खान ने कहा, "चिंता मत कीजिए, वह जल्द ही अपने अंतिम अंजाम को पहुंच जाएंगे। और आप लोगों को जल्द ही आधिकारिक उपचार के लिए अमेरिका भेजने की व्यवस्था की जा रही है।"

"बहुत बहुत धन्यवाद," अरशद ने कृतज्ञता भरे स्वर में कहा।

खान ने उनसे पूछा, "याद कीजिए, क्या आपके निदेशक मंडल के किसी डॉक्टर ने कभी आपको दिए गए व्याख्यान में ब्रेन सर्जरी का जिक्र किया था?"

ब्रेन सर्जरी? हाँ, इस पर कई बार चर्चा और शोध हो चुका है।

इसमें कुछ खास है? ज़रा सोचिए।

"हाँ," उसने सोचा। "ऐसा नहीं है, लेकिन एक बार डॉ. नारमन----वह कहते-कहते रुक गया।

"हाँ, हाँ, डॉ. नारमन ने क्या कहा?"

उन्होंने कुछ नहीं किया, लेकिन उन्होंने यह ज़रूर कहा कि उनका इरादा मस्तिष्क-बदलाव , यानी बुद्धि के आदान-प्रदान का प्रयोग करने का है। उनका सिद्धांत था कि शारीरिक अंग मस्तिष्क के आदेशों का पालन करते हैं।

अरशद ने कहा.

इसके बाद?"

उसके बाद बात आई गई हो गई और आगे कोई बातचीत नहीं हुई। "अच्छा, बहुत हो गया। अच्छा, अब मैं चलता हूँ। तुम्हारे इलाज का इंतज़ाम जल्द ही हो जाएगा।"

"सब ठीक हो जाएगा।" खान ने उसकी पीठ थपथपाई और उसे दिलासा दिया, फिर उससे हाथ मिलाया और बिना चाय लिए ही बाहर चला गया। तब तक रात हो चुकी थी, और उसे बहुत कुछ सोचना था और बहुत कुछ करना था।

वह बाजार से घर की ओर जा रहे थे, तभी डैशबोर्ड में लगे वायरलेस संचार बल्ब में लाइट निकलने लगी।

"हेलो," उसने अपना माउथपीस निकाला और उसे अपने मुंह में लगा लिया।

"हम डी सूजा बात कर रहे हैं," बोर्ड से आवाज आई।

मैं खान बोल रहा हूँ, "हैलो, हाँ कहो?"

"मैं इन दो बंदरों का पीछा करते हुए शहर के बाहर आराम बाग़ नामक एक बगीचे में पहुँच गया हूँ। इस बगीचे के बीचोंबीच एक पुराना बंगला है। वे बंदर उसी में गए हैं। इसके अंदर कई लोग घूमते-फिरते दिखाई दे रहे हैं, लेकिन उनके चेहरे पहचान में नहीं आ रहे, वे अपना आधा चेहरा ढके हुए हैं।"

"क्या तुम अंदर नहीं जा सकते?"

"वे बहुत सतर्क लोग हैं, जब वे कोई शोर सुनते हैं तो ध्यान से सुनते हैं।"

"ठीक है, तुम वापस आ जाओ, लेकिन दमन गाँव की पुलिस चौकी से दो होशियार सिपाहियों को लेकर इस बाग की निगरानी की ज़िम्मेदारी उन्हें सौंप दो ताकि अगर इसी दौरान वहाँ कुछ नया हो, तो वे हमें बता सकें," ख़ान ने निर्देश दिया। "मैं एक बड़ी हस्ती की गिरफ़्तारी का वारंट लेने की कोशिश कर रहा हूँ," ख़ान ने आगे कहा।

"ठीक है, मैं आ रहा हूँ," डिसूज़ा ने जवाब दिया। और फिर बातचीत बंद हो गई।

############

77

बाले की मरम्मत

आराम बाग (रूह अफ़ज़ा) पर छापा मारने के बाद जब कुछ नहीं मिला, तो सुपरिंटेंडेंट ख़ान भी थोड़ी देर के लिए उलझन में पड़ गए। उन्हें यकीन था कि डॉ. नॉर्मन और उनका रहस्यमय मुख्यालय यहीं है, लेकिन वहाँ कुछ पुराने फ़र्नीचर और बेमतलब के सामान के अलावा कुछ नहीं था। हालाँकि, अगर इस बात की किसी तरह पुष्टि हुई भी, तो बस इतनी कि बंगले के अंदर बरामदे के पास वाला कमरा और उससे लगा हुआ हॉल, दोनों ही इतने साफ़ थे मानो यहाँ कुछ समय पहले कोई रहा हो। जबकि ख़ान को नवाब सिकंदर मिर्ज़ा के बेटे से पता चला था कि बंगला काफ़ी समय से वीरान पड़ा है। बाग से एक मील दूर गाँव वालों से पूछताछ करने पर सिर्फ़ इतना पता चल पाया कि रात के अँधेरे में गाँव के पास से गुज़रने वाली कच्ची सड़क पर कुछ मोटरबाइकें गुज़री थीं। वे कहाँ से आई थीं और कहाँ चली गईं? किसी को पता नहीं था। अब कच्ची सड़क पर मोटरबाइकों के पहियों के निशान ढूँढ़ना बेकार था, क्योंकि पुलिस की गाड़ियाँ भी उसी रास्ते से आई थीं और अगर निशान वहाँ होते , तो गायब हो चुके होंगे ।

हालाँकि रहस्यमय अपराधी बिना किसी नुकसान के बच निकला था, खान को बस यही अफ़सोस था कि नॉर्मन की गिरफ़्तारी का वारंट हासिल करने के बजाय, उसने पिछली रात रूह अफ़ज़ा पर छापा क्यों नहीं मारा, जिससे उसे इतना समय मिल जाता। खान इस स्थिति से कभी निराश नहीं हुआ, लेकिन पुलिस के लिए यह शर्म की बात थी कि इतनी सावधानी से अपराधी

को घेरने के बावजूद, पुलिस उसे काबू में नहीं कर पाई, और रात में पहरा देने वाले उनके दो कांस्टेबल भी अंधे हो गए।

78

लौटते वक़्त वो बहुत परेशान था। इंस्पेक्टर डिसूज़ा भी उसके साथ थे। और वे दोनों शांत थे.

खान ने कहा , "अगर हमने रात में छापा मारा होता तो?"

लेकिन किसे पता था कि वह होशियार हो जाएगा और फिर शीघ्र ही उसका वारंट जारी कर दिया जाएगा? डीसूजा ने उत्तर दिया.

मालूम होता है उसे हमरी सब बात पता चल जाती है - खान ने शक जाहिर किया

मुझे भी इस पर शक है,'' डिसूजा ने कहा।

चलो पुलिस मुख्यालय चलते हैं, मैं थोड़ी देर में पहुँचता हूँ। तभी खान ने गाड़ी रोक दी। डिसूजा उस गाड़ी से उतरकर पीछे से आ रही अपनी गाड़ी में बैठ गए, और खान ने शहर में घुसते हुए अपनी गाड़ी दूसरी सड़क पर मोड़ दी। पुलिस की गाड़ियाँ आगे बढ़ गईं।

खान ने अपनी कार कर्जन रोड स्थित एक पेट्रोल पंप पर खड़ी की और मैनेजर से आठ गैलन पेट्रोल भरवाने का आदेश देकर फुटपाथ पर चलते हुए बड़े से पोस्ट एंड टेलीग्राफ भवन की ओर चल पड़ा। इधर-उधर देखने के बाद, वह अंदर गया। अंदर काफी भीड़ थी, लेकिन वह

किसी तरह उससे बचता हुआ पूछताछ कार्यालय के पास बने सार्वजनिक टेलीफोन कॉल स्टैंड में घुस गया और शीशे का दरवाजा अंदर से बंद कर लिया। पैसे अंदर रखकर डायल घुमाने पर उसे दूसरी तरफ कनेक्शन मिल गया।

हेलो , असरार... हाँ, मैं खान बोल रहा हूँ। तुम्हें तुरंत डॉ. नॉर्मन के बंगले पर पहुँचना चाहिए और किसी तरह पता लगाना चाहिए कि वह कब से घर से गायब है... क्या, बाले ?... हाँ, उसका अभी तक पता नहीं चला है। भगवान जाने उसे क्या हुआ, लेकिन अगर वह मिल गया, तो मैं उसे पीट-पीटकर मार डालूँगा। तुम मुझे मुख्यालय से वायरलेस पर सूचना दो। नहीं, नहीं, वह... शहर नहीं छोड़ सकता। सभी सीमा चौकियों पर कड़ी निगरानी है। अच्छा, जल्दी से कोशिश करो।"

79

यह कहते हुए खान ने रिसीवर नीचे रख दिया और बूथ से बाहर निकलकर पेट्रोल पंप पर वापस चला गया।

##########

"क्या आप ने उसे कैद कर लिया है?"

हम... उसने मेरे नियम के विरुद्ध एक आदमी का गला घोंटकर हत्या कर दी। मैं चाहता हूँ कि सब कुछ मेरी मर्ज़ी से हो।

"लेकिन अगर उसने कोई गड़बड़ कर दी तो क्या होगा?"

"मैंने इसकी याददाश्त मिटा दी है। तुम्हें उसकी चिंता करने की ज़रूरत नहीं है।" माइक्रोफ़ोन से एक भारी आवाज़ आई और मेज़ पर झुका हुआ हट्टा-कट्टा आदमी थोड़ा घबरा गया।

"अब्बास, मेरा यह मतलब नहीं है। लेकिन अब पुरुषों का अपहरण कौन करेगा?"

"अभी हमारे पास तीन बंदर मौजूद हैं, और कल शाम जूनागढ़ से तीन और पहुँचेंगे। इनके भेजे बदलने के लिए हमें उनतीस नए लोगों की ज़रूरत होगी। और एक वो पोलिस वाला भी मौजूद है "

उनतीस आदमी? वह आदमी लगभग उछल पड़ा।

"मैं कायरों से ऐसा काम नहीं लेता। तुम इन तीन बंदरों को समझाओ कि लोगों का अपहरण कैसे किया जाता है। वे तुमसे बेहतर करेंगे।" अदृश्य की आवाज़ मुखौटे के फ्रेम में गूंज उठी।

ओके , बॉस । यह कहकर उस आदमी ने स्विच बंद कर दिया और अपनी जगह से उठकर बेसमेंट पार करते हुए बाहर चला गया। इस समय, अंदर के सत्रह कमरों को छोड़कर, हर जगह सीलन की गंध फैली हुई थी। कभी-कभी छत से एक अजीब सी आवाज़ आती, मानो कोई नदी बह रही हो।

80

वह अनजान जगह कई मंज़िल के घेरे में दूर-दूर तक फैली हुई थी। उसमें कुछ बड़े कमरे थे जिनकी दीवारें बेतरतीब थीं और दो-तीन संकरे रास्ते थे जो आगे जाकर साफ़-सुथरे और सजे-धजे कमरों से जुड़ते थे। वह एक गलियारा पार करके एक बड़े कमरे में पहुँचा।

" पैगी... पैगी डार्लिंग," उसने पुकारा, और कुछ सेकंड के बाद, दूसरे गलियारे से एक मधुर प्रतिक्रिया आई।

"येस डियर , " पैगी एक खूबसूरत आसमानी नीले रंग की फ्रॉक पहने बाहर आई। उस पल वह बहुत खूबसूरत लग रही थी। लंबा आदमी उसे मोहक निगाहों से घूर रहा था।

"कल तुम्हारे प्रेमी सादिक की बारी है।" उसने पैगी से कहा।

"क्या कल और ऑपरेशन होंगे?"

हाँ, तीन नये बन्दर मिल रहे हैं।

"च च -- बेचारा गरीब उल्लू, " पेगी ने मुस्कुराते हुए कहा, जब उसने सामने की ओर देखा, जहाँ कई बंद कोठरी बनी हुई थीं और उनमें कई आदमी ठूँसे हुए थे। उनकी दाढ़ियाँ बढ़ी हुई थीं, उनके चेहरे बिगड़े हुए थे, और उनके कपड़े फटे हुए थे। आखिर में, एक अकेला आदमी पिंजरे में बंद था। उसकी दाढ़ी भी बढ़ी हुई थी।

"मैं अभी वापस आता हूँ, बशर्ते तुम इन पागलों को उनका खाना दो।" यह कहकर वह आदमी लंबे कदम बढ़ाता हुआ दूसरे संकरे गलियारे में चला गया। पेगी ने दिल थाम देने वाले अंदाज़ में सिर हिलाया। कोठरियों में अजीब सी हँसी गूँजने लगी। वह सिर हिलाते हुए आखिरी कोठरी के पास पहुँची।

"नमस्ते, मेरे प्यारे सार्जेंट," उसने सलाखों के सहारे झुकते हुए कहा।

"कहो, जानेमन ," कैदी ने अंदर से तीखी आवाज़ में जवाब दिया।

"क्या आपका मूड ठीक हो गया है या अभी भी कुछ कसर है?"

"हा हा, तुम अपने प्यार में इतनी ज़लील और अपमानित हुये और हमसे पूछ रही हो?"

"तुम यूं बाज़ न आओगे ।"

"बाज़? जानेमन , बाज़ बड़ा जानवर तो होता है, पर अपनी योग्यताएँ तो उल्लू तक ही सीमित होती हैं।"

"अजीब जोकर हो तुम, मौत के सामने भी अपनी हरकतों से बाज़ नहीं आते ।

फिर वही बाज़, चाहो तो हमें शिकरा कह सकती हो।"

"सुनो, बाले ।"

अरे, तो तुम्हें हमारा नाम भी पता है। शाबाश, मेरे प्यारे। आखिर "क्यों नहीं, आग दोनों तरफ बराबर जल रही है और फायर ब्रिगेड कहीं नहीं है।"

"अपनी चोंच बंद करो, कल तुम मर जाओगे।"

"कल आएगा न? फिर आज से तुम्हारे नाम पर फ़ातेहा क्यों पढ़ूँ?"

सुनना है तो सुनो, वरना मैं चला जाऊंगी।

ठीक है, कह ही डालो , मैं हमदर्दी से सुनूंगा।

"हमदर्दी की दुम, यदि आप अपनी जान बचाना चाहते हैं, तो अभी यहां से निकल जाओ ।"

"इस समय? और वह दरिंदा जो सफ़ेद वस्त्र में आया था?"

"मैं तुम्हारी जगह एक और पागल बंद कर दूँगी , यह बिल्कुल तुम्हारी तरह दिखता है।"

सहमत, लेकिन एक शर्त पर?

"ओह, जल्दी बताओ, क्या बात है?"

"यही कि तुम अगले जन्म में मुझसे ज़रूर इश्क़ करोगे।"

"पाजी," वह चिल्लाई। "जल्दी बाहर आओ," उसने कमर से

एक चाबी निकाली और जल्दी से दरवाज़ा खोला। बाले बाहर निकला, एक लंबी साँस ली और फिर पेगी को घूरने लगा।

"पेगी डार्लिंग," उसने बड़े ही रोमांटिक लहजे में कहा। पेगी का चेहरा गुस्से से लाल हो गया, लेकिन इससे पहले कि वह कुछ कह पाती, बाले ने अपना हाथ उसके मुँह पर रख दिया और दूसरे हाथ से उसे पकड़कर ज़मीन पर पटक दिया। पेगी को समझ नहीं आ रहा था कि वह आवाज़ क्यों नहीं निकाल पा रही थी। बाले ने अपनी कमर में बंधी एक मज़बूत लेकिन पतली लंबी रस्सी निकाली और पेगी की साड़ी का किनारा फाड़कर उसके मुँह पर बाँध दिया, और रस्सी से उसके हाथ और फिर पैर बाँध दिए। वह सवालिया निगाहों से उसे देखती रही, लेकिन वह मुस्कुरा रहा था।

"मेरी प्यारी, यही तो मुहब्बत का क्लाइमेक्स है।" यह कहते हुए उसने पैगी को दोनों हाथों से उठाया और उसे अपनी कोठरी में बंद कर दिया, बाहर से दरवाज़ा बंद कर दिया। पैगी ने खुद को इन बंधनों से आज़ाद करने की बहुत कोशिश की, लेकिन वह नाकाम रही।

"पैगी डार्लिंग, बाहर निकलने का रास्ता कहाँ है?" उसने पूछा। और जवाब में, पैगी ने गुस्से भरी आँखों से एक दिशा में इशारा किया। बाले ने उसके द्वारा बताई गई दिशा में एक अंधेरे और संकरे, बदसूरत रास्ते में प्रवेश किया। यह रास्ता एक गोल नहर की तरह था। वह रास्ते में दाखिल हुआ। यह धीरे-धीरे ऊपर उठ रहा था। उसने इसे सावधानी से पार किया और कुछ हद तक खुली जगह पर पहुँच गया। यहाँ उसने ताज़ी हवा में नए जीवन का अनुभव किया और यह देखकर हैरान रह गया कि वह एक पुरानी नहर के अंत में बने बिजली स्टेशन के पास खड़ा था। इस बिजली स्टेशन का लंबे समय से उपयोग नहीं किया गया था। इसकी इमारत भी वीरान थी और नहर में साफ पानी की जगह अब कीचड़ था।

लेकिन अचानक बाले के दिमाग में फिर एक ख्याल आया। ज़रूर ये वही लोग हैं। मन ही मन बुड़बुड़ाते हुए वह पीछे मुड़ा और संकरी पगडंडी पार करके बालकनी वाले कमरे में वापस चला गया।

पेगी अभी भी अपने कमरे में बंधी हुई थी। बाले ने देखा कि दूसरे कमरों में कैदी थके-हारे चुपचाप बैठे थे। लेकिन उसे देखते ही वे बंदरों की तरह चीखने-चिल्लाने लगे।

"ये पागल हो गए हैं, आज़ादी के लिए बेताब हैं," बाले बुदबुदाया, और फिर उसने उन कमरों के दरवाज़े खोल दिए। सभी कमरों में एक ही चाबी काम कर रही थी, लेकिन उसने देखा कि कोई

भी बाहर नहीं आ रहा था। उसने सोचा कि शायद ये लोग मुझे भी इस समूह का सदस्य समझते हैं। इसलिए वह एक कमरे में घुस गया और चिल्लाया।

"चलो, जल्दी से यहाँ से भाग जाओ, वरना कोई आ जाएगा। रास्ता सामने है।" उसकी आवाज़ सुनकर वह चौंककर उठा और उसे अजीब नज़रों से घूरने लगा।

खून। उनमें से एक उस पर झपटा।

खून, खून... खून, खून। दूसरा चिल्लाया और उसे टक्कर मार दी। और फिर सब लोग उस पर गिर पड़े।

वे गिर पड़े और उनके कपड़ों पर खरोंच भी आ गई।

अरे, कमबख्तों , मैंने तुम्हें आज़ाद कर दिया है। बाले ने चीख कर कहा

आज़ाद हे हे हे हो हो हो। उनमें से एक हँसा और फिर कमरे से बाहर बदरो की ओर दौड़ा। उन्हें भागते देख दूसरे कमरे में मौजूद कैदी भी भागने लगे। बाले के शरीर पर उनके नाखूनों के ज़ख्म थे। उसे इस दशा पर आश्चर्य हुआ। आख़िरकार, उसने कुछ उदास होकर अपने पुराने फटे कपड़े समेटे, कमरे से बाहर निकला और बाहर चला गया।

############

पागल मार्च

फटे कपड़े पहने, बड़ी दाढ़ी वाले और अजीबोगरीब चेहरे बनाते पागलों का एक जुलूस जब समस्तीपुर के पूर्वी इलाके से शहर में दाखिल हुआ, तो उन्हें देखने के लिए दोनों तरफ लोग जमा होने लगे। ये पागल सड़क पर उछल-कूद कर रहे थे। कोई सीटियाँ बजा रहा था, कोई धूल उड़ा रहा था। इसी बीच, एक पागल अचानक दूसरे के सिर पर चढ़ गया, दूसरा उसका भार सहन नहीं कर सका और दोनों गिर पड़े। लोग सहानुभूति में आगे आए थे, लेकिन जब उन्होंने देखा कि इन पागलों के सभी साथी चारों तरफ से झुककर तमाशा देख रहे हैं और गालियाँ बक रहे हैं, तो वे रुक गए। दोनों पागल पहले तो एक-दूसरे पर वार करते रहे, फिर जब फुटपाथ पर खड़े लोग नहीं हँसे, तो वे पब्लिक पर गिर पड़े। कोई किसी के कपड़े फाड़ने लगा, कोई मुँह नोचने लगा, कोई किसी को दौड़ाने लगा। थोड़ी ही देर में भगदड़ मच गई। उस दिशा में गश्त कर रहा एक पुलिस कांस्टेबल भी मौके पर मौजूद था, लेकिन उसके पास सिर्फ़ एक लाठी थी, जो उसके किसी काम की नहीं थी और उसे भी भागना पड़ा। ये पागल आदमी बंदरों जैसा व्यवहार कर रहे थे। सड़क के दोनों ओर की दुकानों में जो भी मिलता, उसे मुँह में डालने लगते। इस तरह यह तूफ़ान शहर के मध्य क्षेत्र तक पहुँच गया। तब तक सेंट्रल पुलिस स्टेशन और पुलिस मुख्यालय को सूचना मिल चुकी थी। दोनों तरफ़ से शांति पुलिस की गाड़ियाँ अलार्म बजाते हुए मौके पर पहुँच गईं। पागल पुलिस के साथ भी बंदरों जैसा ही व्यवहार किया गया। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना था कि जब वे बात कर रहे थे, तो बिल्कुल आदमियों की तरह। उनमें से एक ने इंस्पेक्टर डिसूज़ा के पास आकर बड़ी गंभीरता से कहा, "

यम हम हम यम छे... पूत पूआ। पोह पोह

मेरा नाम चेन हून चेन हून है। दूसरे फौरन पास आया और बोला।

"इन्हें पकड़ो," डिसूजा ने सिपाहियों को आदेश दिया। और इशारा पाते ही इन पागलों को लाठियों से घेरना शुरू कर दिया गया। बड़ी मुश्किल से वे कूदकर पुलिस की गाड़ियों में चढ़ गए। और जब उन्हें पकड़कर कस्टडी में बंद किया गया, तो वहाँ भी उन्होंने हंगामा जारी रखा। डिसूजा उन्हें कस्टडी में छोड़कर तुरंत सुपरिंटेंडेंट खान के बंगले की ओर चल पड़े। पूरा शहर इन बंदर जैसे पागलों की चर्चा से भर गया था। वे जहाँ से भी गुज़रते, लोग उनके बारे में बातें कर रहे होते।

जब डिसूजा ने सुपरिंटेंडेंट खान के बंगले पर गाड़ी रोकी और अंदर दाखिल हुए, तो बाहर से घंटी की आवाज़ सुनकर चौंक गए। गुलाम रसूल ने उन्हें बताया कि साहब रीडिंग रूम में हैं। डिसूजा बिना उनकी इजाज़त लिए खुद ही खान के रीडिंग रूम में पहुँच गए। खान ने उन्हें खुले दरवाज़े से देखा।

अंदर आओ, डिसूजा। उसने पुकारा और डिसूजा अंदर आया और उसका अभिवादन किया।

वह बाले को अजीब निगाहों से देखने लगा।

" क्या हुया ?" बाले ने उसकी ओर देखते हुए कहा।

"मैं देख रहा हूं कि आप चीन पू चीन पू क्यों नहीं करते," उन्होंने गंभीरता से उत्तर दिया ।

"यह क्य बाला है?" खान ने मुस्कुराते हुए पूछा।

नई मुसीबत। यह कहकर वह बैठ गया और पागलों वाली पूरी घटना कह सुनाई।

डिसूज़ा साहब, आप कुछ नया नहीं लाए हैं। ये पागल मेरे ही छोड़े हुये हैं । बाले ने कहा

तो फिर मुझे तुम्हें गिरफ़्तार कर लेना चाहिए था। डिसूज़ा मुस्कुराया। लेकिन तुम कहाँ थे, भले आदमी ?

86

"लाचार मरीज़ ए इश्क़ जो ठहरा। पैगी के चक्कर में वे डॉ. नारमन की जेल में पहुँच गए थे। अच्छा हुआ कि उन्होंने इसका भेजा किसी बंदर से नहीं बदल दिया ।"

बंदर भी मनुष्य की अंतिम प्रजाति ही है। किसी गधे ----

मिस्टर -- बाले ने उसे गंभीरता से घूरा ।

अरे भाई, मैं तुम्हें नहीं कह रहा हूँ। डिसूजा मुस्कुराए और बोले।

"अच्छा, सुनो, डॉ. नॉर्मन अपने साथियों से भी खुद को छिपाकर एक खतरनाक खेल खेल रहे हैं। वे एक ऐसे प्रयोग में सफल हुए हैं जिसमें जीवित प्राणियों के मस्तिष्क को बिना उनकी जान जोखिम में डाले सर्जरी के ज़रिए बदला जा सकता है, और उन्होंने पहला प्रयोग उन बंदरों पर किया जो गोदी से गायब थे।"

"तो ऐसा लगता है कि पार्सल गायब करने वाला व्यक्ति डॉ. नॉर्मन का आदमी था?"

"हाँ। और शहर से अगवा किए गए लोग भी उन पीड़ितों में से हैं जिनके संदेशवाहकों की जगह इन बंदरों ने ले ली है। बंदरों ने इंसानों जैसी बुद्धि हासिल कर ली है और इंसानों जैसा व्यवहार करने लगे हैं, और इंसानों ने भी बंदरों जैसा व्यवहार किया है, जैसा कि आप अभी देख रहे हैं," खान ने कहा। डिसूजा पूरी बातचीत हैरानी से सुन रहे थे।

लेकिन... डिसूजा इतना कहना चाहते थे कि खान ने बीच में ही टोक दिया।

"यह रहस्य सिर्फ़ डॉक्टर और उसके सहायक तक सीमित है, जिसे वह देव कहता है। यहाँ तक कि सालाज़ार को भी नहीं पता कि उसके ज़रिए लोगों का अपहरण क्यों किया गया।" खान ने कहा

"सालज़ार? तो वह सचमुच ज़िंदा हो गया?" डिसूज़ा आश्चर्य से उछल पड़ा।

87

"हाँ। प्रोजेक्शन रूम में सालाज़ार की फिल्म देखने के बाद, मुझे उस दिन संदेह हुआ था, उस आदमी ने पुष्टि की कि उसके हमलावर का स्वभाव ऐसा ही था।"

लेकिन यह आश्चर्यजनक है कि वह डॉ. नॉर्मन के लिए काम करेंगे। सालाज़ार स्वयं एक महान और अद्भुत वैज्ञानिक थे। बाले ने भी आश्चर्य व्यक्त किया।

तुम ने महज झक मारी है । बस इतना ही किया कि तुम्हें उसका प्रयोग शाला मिल गई । तुम पैगी के प्यार में कैदी बनकर गए और पागलों को आज़ाद करके लौटे, तीर चलाते हुए।

"नहीं, मैंने कुछ और किया है।"

वो भी सुनें.
कल जूनागढ़ से तीस बंदरों का एक पार्सल आ रहा है और उसके लिए उनतीस आदमियों का अपहरण किया जाएगा। तीसवाँ उन बदकिस्मत उनमें मैं था, जो बिना किसी नुकसान के बच गया । बाले ने बताया।

खान ने कहा, "हमें इसकी व्यवस्था करनी होगी।"

"लेकिन हम उसके नहर वाले ठिकाने पर छापा क्यों नहीं मारते?"

"यह बेकार है, वह बहुत सावधान व्यक्ति है। अब तक तो वह वहाँ से सब कुछ हटा चुका होगा। फिर भी, तुम्हें कोशिश करने की इजाज़त है -- खान ने जवाब दिया।

बहुत अच्छा, मैं कोशिश करूँगा। डिसूजा कुर्सी पर पहलों बदलते हुए कहा ।

"लेकिन इस सब मसखरी के पीछे आखिर उद्देश्य क्या है?" बाले ने पूछा।

यह तुमने बुद्धिमानी भरा सवाल किया है, लेकिन इसका उद्देश्य पागलपन के अलावा और कुछ नहीं है।
। वो अपना अजीब अनुभव सब पर थोपना चाहता है। या सच पूछो तो, ---

खान ने जवाब दिया, "उसका दिमाग खराब हो गया है।"

"आप ने मेरे अलजार वाले प्रश्न का उत्तर नहीं दिया?" बाले ने दोहराया।

खान ने कहा -- सालाजार एक महान वैज्ञानिक हैं, लेकिन डॉ. नॉर्मन ने उनके मस्तिष्क की स्मृति कोशिकाओं को निष्क्रिय कर दिया है, जिसके कारण इंसान अपने पिछले जीवन और खुद को भूल जाते हैं और केवल उनके निर्देशों का पालन करते हैं।

"इस तरह, वह इसके साथ खतरनाक काम करवा सकता है?"

शायद नहीं, क्योंकि डॉ. पब्लिक के साथ अपने पागलपन में एक अजीब वैज्ञानिक मज़ाक कर रहे हैं। वैसे, उनका इरादा आतंकवादी बनने का नहीं है। अगर उन्हें विध्वंसकारी विचार पसंद हैं,"सालज़ार को खून बहाने के लिए उसे कैद नहीं किया होता।"

"तो सालज़ार उसकी हिरासत में है?"

"हाँ, लेकिन मुझे यकीन है कि एक दिन उनकी याददाश्त की कमी दूर हो जाएगी," खान ने कहा। "और वह दिन डॉ. नारमन के लिए ही नहीं, बल्कि हम सबके लिए सबसे खतरनाक दिन होगा।" खान ने कहा।

तो हम सलाज़ार को पकड़कर उसका खात्मा कर देंगे। बाले ने अपनी राय दी।

जब हम उसे नहीं पकड़ सकते तो सालाज़ार को कैसे पकड़ेंगे? बच्चों का खेल है क्या ?" खान ने उत्तर दिया।

“तो अब हमें क्या करना चाहिए?” डिसूजा ने पूछा।

उनके नए निवास का पता लगाने के लिए जूनागढ़ सीमा पर गुप्त निगरानी रखनी होगी। खान ने कहा कि नए बंदर इधर से ही लाए जाने चाहिए।

डिसूजा ने कहा, "मुझे आश्चर्य है कि आपको यहां बैठे-बैठे सब कुछ कैसे पता चल गया। आपने तो रेडियम टॉर्च का रहस्य भी जान लिया।"

89

बेटा, मुझे खामोश बैठने की आदत नहीं है, मैं ये काम बहुत समय से कर रहा हूँ।और व्यस्त था ।

"और इन पागलों के साथ क्या किया जाना चाहिए?"

खान ने कहा, "ये वही लोग हैं जिनका अपहरण किया गया था। इन्हें या तो इनके प्रियजनों को सौंप दिया जाना चाहिए या किसी मानसिक संस्थान में डाल दिया जाना चाहिए। कम से कम मैं उच्च अधिकारियों को यही जवाब दूंगा।"

लेकिन वे बंदर भी हमारे कब्ज़े में हैं। बाले जल्दी से बोला। उन पर कोई नाम नहीं लिखा है, किसका दिमाग किसके सिर में है। और फिर शायद डॉ. नारमन ही उनके दिमाग को फिर से बदल सकते हैं। हो सकता है कि उन्होंने कुछ खास निशानियाँ छोड़ दी हों। खान ने जवाब दिया।

"यह तो वाकई एक अजीब समस्या बन गई है।" डिसूज़ा ने सोचा। "अच्छा, अब हमें जल्द से जल्द पता लगाना होगा कि डॉ. नॉर्मन कहाँ रह रहे हैं। हमें उन्हें जल्द से जल्द गिरफ़्तार करना होगा।" यह कहकर ख़ान खड़ा हो गया।

"मैंने जेल में बहुत दिन बिताए हैं, कम से कम मुझे माफ़ कर दो। कृपया मुझे तो माफ़ ही कर दो।" बाले हाथ झटकने लगा।

"मेरा क्या है? मैं पेग्गी को जेल भेज दूँगा।"

रुको, मैं जा रहा हूँ। आप सच में बहुत बेरहम हो। बाले भी उठकर साथ हो लिया ।

90

चेतावनी

अधीक्षक खान की जूनागढ़ सीमा से बंदरों के आयात का पीछा करते हुए डॉ. नॉर्मन को पकड़ने की कोशिश नाकाम रही। सुबह से शाम तक और फिर पूरी रात, खुफिया पुलिस के लोग ग्रामीणों के वेश में सीमा पर मौजूद रहे, लेकिन एक भी बच्चा चिड़िया उस तरफ से नहीं गुजरी। बस कुछ गाड़ियों में लकड़ियाँ और गुड़ की कुछ बोरियाँ एक ट्रक में भरकर अंदर ले जाई गईं।

डिसूजा ने बाले को साथ लेकर नहर के आश्रय स्थल पर छापा मारा और वहाँ कुछ टूटी कुर्सियों और कुछ कपड़ों के अलावा कुछ नहीं मिला। डॉ. नॉर्मन उम्मीद से ज़्यादा रहस्यमय होते जा रहे थे और पुलिस को लग रहा था कि इस बार उन्हें कोई अपराधी नहीं, बल्कि एक बेहद चालाक और अनुभवी शख्सियत बेवकूफ़ बना रही है, जिसे काबू करना आसान नहीं होगा। इन घटनाओं के बाद सुपरिंटेंडेंट खान भी ज़्यादा गंभीर होते जा रही थे । डॉ. नॉर्मन को अपने बंगले से गायब हुए दो-तीन हफ़्ते बीत चुके थे।

जूनागढ़ की सीमा पर दिन-रात पहरा देने के बाद जब ये लोग लौटे, तो खान की हालत बहुत खराब थी। शहर में दाखिल होते-होते धूप खिल गई थी, लेकिन उम्मीद के उलट, आज शहर का

माहौल थोड़ा उदास लग रहा था। लोग दो-चार के समूहों में बैठे आपस में बातें कर रहे थे। खान ने एक जगह गाड़ी रोकी और बाले को जाँच-पड़ताल करने के लिए दौड़ाया । पाँच मिनट बाद, वह सनसनीखेज खबर लेकर लौटा।

शहर में दहशत का माहौल है। आज रात अलग-अलग इलाकों से लगभग पचास लोग लापता हैं और सिर्फ़ एक बंदर पकड़ा गया है जो एक आदमी को थैले में डालकर अपनी पीठ पर लादकर भाग रहा था।-- बाले ने बताया।

91

पचास!’ डिसूजा उछल पड़ा।

"ओह, हमारा ध्यान भटक गया और उसने अपना काम कर दिया। कितनी बड़ी गलती है।" खान ने दुःखी होते हुए कहा.

" गलती?" बाले ने आश्चर्य से पूछा।

"हाँ - जोनागढ़ की सीमा से बंदर लाने का नाटक करके हम लोगों को बहुत बड़ा धोखा दिया गया। तभी मैं सोच रहा था कि पागलों के साथ तुम्हें भी वहाँ से इतनी आसानी से भागने का मौका कैसे मिल गया?"

"आपका मतलब है कि मुझे अवसर दिया गया?"

बिल्कुल। ये पागल बंदर उसके किसी काम के नहीं थे, बस बोझ थे। इसलिए उसने उन्हें भगा दिया और हमें गलत प्रोग्राम भी भेज दिया।

लेकिन उस ने अपने विशेष सहायक से यही कहा था , "

"वह बहुत चतुर दिमाग का है। वह अपने कार्यक्रमों से अपने निकटतम सहयोगियों को भी धोखा दे सकता है।"

खान ने कहा, "मुझे नहीं पता। बंदरों द्वारा अपहरण की घटनाएं भी हुई हैं।"

"तो अब? अगर अब पुलिस मुख्यालय पहुंच गए तो पुलिस कमिश्नर और आईजी तो हमारे टुकड़े-टुकड़े कार दंगे ," डिसूजा ने निराशा में कहा।

तुम लोग जाओ, मैं उस कमबख्त का किस्सा चुका कर ही आऊँगा । खान ने बिफरते हुए निर्णायक ढंग से कहा.

"तो हमें भी साथ ले चलो, हम पूरी सावधानी बरतेंगे," डिसूजा ने विनम्रता से कहा। दरअसल, उसे डर था कि पुलिस कमिश्नर नाराज़ हो जाएँगे।

"ठीक है, चलो।" यह कहकर खान ने कार घुमा ली और जिस रास्ते से आया था उसी रास्ते वापस लौट पड़ा।

###############

सुबह से ही पुलिस थानों में फ़ोन आ रहे थे और पुलिस अधिकारी समझ नहीं पा रहे थे कि क्या जवाब दें। शहर को एक कोने से दूसरे कोने तक छान मारा गया, लेकिन कोई सुराग नहीं मिला। सुपरिंटेंडेंट खान, बाले और डिसूज़ा के गायब होने से वरिष्ठ अधिकारी और भी परेशान हो गए।

ठीक दोपहर के समय, पुलिस मुख्यालय में सुपरिंटेंडेंट खान का संदेश वायरलेस पर पहुँचा। उस समय डीआईजी साहब कार्यालय में ही थे। वे स्वयं संचार सेट पर पहुँचे।

नमस्ते, मिस्टर खान - आप इस समय कहाँ हैं? उसने चिंतित स्वर में पूछा।

"मैं इस बदमाश के पीछे पड़ा हूँ और इसे गिरफ्तार करके ही लौटूँगा। लेकिन आपको शहर में दिखने वाले किसी भी बंदर को गोली मारने का आदेश देना होगा।"

डीआईजी ने कहा, "लेकिन क्या इससे हिन्दू लोग नाराज होंगे?"

खान ने जवाब दिया, "पब्लिक को लाउडस्पीकर के ज़रिए इन बंदरों की ख़तरनाक स्थिति के बारे में बताया जा सकता है।"

"ठीक है, मैं पुलिस कमिश्नर से परामर्श करूंगा, लेकिन ये घटनाएं?"

मैं इन लोगों को उसकी पहुँच से बचाने के लिए हर संभव प्रयास करूँगा।आप विशवास रखेँ ।"

"ओफो , ये अजीब हालात हैं। खुदा ही जाने, कैसे कैसे रंग बदल रहा है ज़माना ।" डीआई झुंझुला गए ।

मैं पुलिस मुख्यालय से वायरलेस संपर्क बनाए रखूँगा। ईश्वर की कृपा से, हम जल्द ही स्थिति पर नियंत्रण पा लेंगे। ---खान ने आखिरी शब्द कहे। इसके बाद, अचानक एक और अज्ञात संदेश बीच में आ जाने से संपर्क टूट गया।
डीआईजी चौंक गए। सेट से एक अज्ञात आवाज़ सुनाई दे रही थी।

नमस्ते, पुलिस मुख्यालय, मेरा भी संदेश लीजिए। मैं नॉर्मन बोल रहा हूँ। नमस्ते, अगर पुलिसवाले बहरे नहीं हैं, तो सुन लें।---- स्क्रीन से एक आवाज़ सुनाई दी। वहाँ मौजूद सभी पुलिस अधिकारी उसके चारों ओर इकट्ठा हो गए।

एक अधिकारी ने आश्चर्य से पूछा, " डॉ. नारमन बोल रहा है?"

यह मेरी चेतावनी है।" आवाज़ फिर सुनाई दी। "अगर पुलिस मेरे काम में ज़्यादा दखलअंदाज़ी करेगी, तो शहर में सिर्फ़ दो किस्म के ही लोग नज़र आएंगे। फिर से सुनो, एक बंदर, दूसरा पागल। संदेश खत्म, एक बंदर, दूसरा पागल।----ओवर

कनेक्शन टूट गया और सब लोग हैरानी से एक-दूसरे की तरफ देखने लगे। "हे भगवान, ये क्या हो रहा है?" डीआईजी दोनों हाथों से अपना सिर पकड़े कुर्सी पर बैठ गए।
##########

तीनों शहर से दूर एकांत जगह पर एक गाँव की झोपड़ी में बैठे थे। डिसूज़ा गहरे विचारों में डूबा था, खान पेंसिल से कागज़ पर कुछ लिख रहा था और सार्जेंट इसरार गाँव के चौराहे पर मिट्टी का बर्तन रखकर चाय बना रहा था। बाले कहीं गया हुआ था। चाय तैयार थी और वे उसे पीने बैठे, लेकिन बाले बहुत देर बाद लौटा। उसके हाथ में आज सुबह का अखबार भी था, जिसे उसने खान के सामने रख दिया और हाँफते हुए एक तरफ बैठ गया।

खान ने जो पहली हेडलाइन देखी, उससे वह चौंक गए। यह एक महिला की सनसनीखेज हत्या की नई रिपोर्ट थी। कल रात, पीडब्ल्यूडी के मुख्य अभियंता की युवा बेटी उर्मिला राजमेकर की गला घोंटकर हत्या कर दी गई। वह शहर की सबसे खूबसूरत लड़कियों में से एक थी, लेकिन उससे भी ज़्यादा चौंकाने वाली बात पुलिस द्वारा इस संबंध में की गई टिप्पणियाँ थीं। खान ने अखबार को ज़ोर से एक तरफ फेंक दिया।

आह, यह नई मुसीबत आ गई। वह बेचैन होकर उठ खड़ा हुआ।

"क्या हुआ?" डिसूजा ने आश्चर्य से पूछा।

"सालज़ार की याददाश्त ज़रूर वापस आ गई है। आज उसने अपने मनोवैज्ञानिक पागलपन के तहत अपना पहला खून बहाया है," ख़ान ने बड़बड़ाते हुए कहा।

इसे संभालना और भी मुश्किल होगा।' बाले ने भी दोनों हाथों से अपना सिर पकड़ लिया। उस वक़्त उनके चेहरों पर साफ़ दिख रहा था कि दस नहीं, बारह बज रहे हैं।

"तुमने क्या किया, बाले ?" खान ने पलट कर पूछा।

आपका अंदाज़ा सही निकला। देवंदर तो डॉ. नॉर्मन का असिस्टंट निकला। वो उसे देव कहते हैं। और यही देव खुद को एवर रग्रीन होटल में सावंत के नाम से मशहूर किए हुए था।

"यह कैसे?" डिसूजा ने पूछा।

"मैंने उसे पैगी के साथ कई बार देखा है। उसके नौकर ने मुझे उसकी जो तस्वीर दिखाई थी, उसमें और इसमें कोई फरक नहीं है ।"

"देवंदर कौन ?" डिसूजा ने पूछा।

एक राष्ट्रीय अस्पताल के सहायक सर्जन, जिनके खराब ऑपरेशन के कारण दो मरीज़ों की मौत हो गई थी, उस को निलंबित कर दिया गया था । उनका चरित्र भी अच्छा नहीं था। खान ने एक ही बार में सब कुछ बता दिया।

"लेकिन पैगी ने तो --?"

"इसे खुद उनके व्यक्तित्व के बारे में ज्यादा नहीं पता।"

तो फिर अब?”

वह रात में एक बार थोड़ी देर के लिए अपने घर आता है।बाले ने बताया।

 मैं और मिस्टर डिसूज़ा आपकी कार में उनके पीछे चलेंगे। आप अपनी कार में उनके पीछे चलेंगे।
और सलजार से निपटिए --बाले ने कहा,

नहीं। मैं पहले नॉर्मन का झगड़ा सुलझाना चाहता हूँ। तुम और मैं उसका पीछा करेंगे और डिसूजा और असरार पुलिस बल के साथ तैयार रहेंगे, संदेश मिलते ही छापा मारने के लिए।

खान ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "इंचा मोली हम मोली , कितने महान, महान, है।"

"कम्बख्त, क्या यह मौज-मस्ती का समय है?"

"तो मैं क्यों चीखूँ-चिल्लाऊँ? अगर आपको कुछ हो जाता, तो यही करता," बाले ने मासूमियत से कहा। सब हँस पड़े।

###############

शहर से जामगढ़ तहसील की ओर जाने वाली चौड़ी पक्की सड़क पर किशमिश के रंग की एक पुरानी लंबी कार तेज़ रफ़्तार से चल रही थी। उसमें सिर्फ़ एक आदमी था, जो कार चला रहा था।

वह काले रंग का लबादा पहने हुए था और उसका आधा चेहरा उसके सिर पर लगी टोपी के सामने से छिपा हुआ था।

 और बाकी आधा हिस्सा उसके कोट के खड़े कॉलर से छिपा हुआ था। उसने आँखों पर काला चश्मा पहना हुआ था। कार असामान्य रूप से तेज़ थी और उसके पहियों की आवाज़ बस सरसराहट जैसी थी। कभी-कभी वह सड़क के किसी गड्ढे से उछल जाती, लेकिन ड्राइवर

अपनी ही धुन में उसी गति से चला जा रहा था। कार पंद्रह मिनट तक सीधी सड़क पर उसी गति से चलती रही और फिर दूसरी छोटी सड़क पर मुड़ गई। यहाँ उसकी गति पहले से थोड़ी धीमी हो गई। ड्राइवर ने एक हाथ से स्टीयरिंग व्हील पकड़े हुए, दूसरे हाथ से अपनी भीतरी

जेब से एक कार्ड जैसी चीज़ निकाली और उसे देखने लगा। यह एक तस्वीर थी। एक बेहद खूबसूरती से उकेरी गई लड़की की, जिसके नीचे उर्मिला लिखा था। उसने लंबे समय तक झुककर तस्वीर वापस अपनी जेब में रख ली।

चलते-चलते उसकी गाड़ी एक ढलान से गुज़री और फिर एक कच्ची सड़क पर मुड़ गई। यहाँ, ऊँचे जंगली पेड़ों के बीच, एक पुराना बंगला दिखाई दिया, जिसके दरवाज़े पर एक सड़ा हुआ बोर्ड लगा था, "महामहिम बांजिरा का डाक बंगला।" गाड़ी का ड्राइवर उसे कुछ दूरी पर अपने रास्ते से हटाकर झाड़ियों में घसीटता हुआ ले गया था। फिर वह उसमें से उतरा और तेज़ कदमों से डाक बंगले में दाखिल हुआ।

डाकघर वाले बंगले के बरामदे में एक ब्लडहाउंड लेटा हुआ था। उसे देखते ही वह ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगा, लेकिन जब नए व्यक्ति ने उसे हाथ नहीं हिलाया, तो कुत्ता दौड़कर उसके पैर पकड़ लिया और पूरी ताकत से दाँत दिखाने लगा। नए व्यक्ति पर इसका कोई असर नहीं हुआ। उसने शांति से दोनों हाथों से उस भड़के हुए ब्लडहाउंड का गला पकड़ लिया। कुत्ते ने उसके शरीर पर पंजों से वार करना शुरू कर दिया, जिससे उसके कपड़े कुछ जगहों से फट गए, लेकिन अंदर से मांस और त्वचा की बजाय सिर्फ़ हड्डियाँ झाँक रही थीं। नए व्यक्ति को पता नहीं क्या सूझा, इसलिए उसने एक हाथ से कुत्ते की गर्दन छोड़ी और अपना चश्मा उतारकर उसके चेहरे पर पड़े काले कपड़े को पलट दिया। कुत्ते ने जैसे ही उसका रूप देखा, वह उसे छोड़कर ज़ोर-ज़ोर से और कर्कश आवाज़ में भौंकता हुआ बाहर भाग गया। वह मुस्कुराया और अंदर चला गया।

एक बड़े कमरे से गुजरते हुए एक और लंबा शयनकक्ष था, जो कभी हीज हाईनेस्स

इस का इस्तेमाल बंजीरा या उसके किसी अफ़सर ने अपनी यात्राओं के दौरान आरामगाह के तौर पर किया होगा, लेकिन वह बरसों से ऐसे ही पड़ी थी। उसकी हालत अच्छी नहीं थी। इस कमरे में एक चौड़ी मेज़ रखी थी जिस पर कुछ वैज्ञानिक उपकरण रखे थे, और सिर से पाँव तक सफ़ेद कपड़ों में लिपटा एक आदमी मेज़ पर झुका हुआ, कांच पर खून की बूँद को माइक्रोस्कोप से देख रहा था। दरवाज़ा खुला देखकर वह सीधा खड़ा हो गया। अंदर आए उस आदमी ने उसके सामने ही अपने चेहरे से काला कपड़ा फाड़ दिया। अब वहाँ सिर्फ़ एक मरे हुए आदमी की खोपड़ी थी, जिसकी कोठरियों में दो पीली, डरावनी आँखें चमक रही थीं। उसके दाँत ऊपर-नीचे खड़े थे, बहुत डरावने लग रहे थे।

सालाज़ार, तुम कहाँ गए थे? तुम्हें कितना काम करना है? मेरे हुक्म के बिना ये करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? सफ़ेद कपड़ों वाला डॉक्टर इस पर भड़क गया।

अचानक, प्रतिक्रिया में, सलजार का खनकता हुया भयानक कहकहा गूंज उठा , और फिर बोला --

" मूर्ख आदमी , तुम सलाज़ार को अपना गुलाम बनाना चाहते हो। क्या तुम्हें नहीं पता कि सलाज़ार तुम जैसे वैज्ञानिक को चुटकी में मसल सकता है ?"

तो तुम तुम तुम्हारी याददाश्त --- वापस आ गयी ?

ये चुटकुले मुझ पर आजमाने चले थे, डॉक्टर, आपने कई निर्दोष गरीब लोगों की जिंदगी बर्बाद कर दी है।
तुमने कई परिवार बर्बाद कर दिए हैं। और आज भी--- । यह कहते हुए वह आगे बढ़ गया।
घबराहट में डॉक्टर ने तेज़ाब की बोतल उसकी ओर खींच मारी , बोतल सालाज़ार को लगी और टूट गई, और तेज़ाब अब उसके कपड़ों पर बिखर गया।

मेरी हड्डियाँ तो इसके लिए पहले से ही सुरक्षित हैं, बच्चे। वह और करीब आता गया।

98

"मेरे पास मत आओ, वरना मैं तुम्हें टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा।" डॉक्टर घबराहट में चिल्लाया।

जवाब में, सालाज़ार फिर से हंस पड़े।

डॉक्टर ने मेज़ की दराज़ खोली, भरी हुई पिस्तौल निकाली और सालाज़ार पर गोलियाँ बरसानी शुरू कर दीं, लेकिन स्टील की हड्डियों से बने उस ज़िंदा ढ़ाँचे पर इसका क्या असर होता? बहरहाल, गोलियों की आवाज़ सुनते ही कमरे के पिछले दरवाज़े खुल गए और पिस्तौलों से लैस पाँच-छह आदमी अंदर घुस आए, लेकिन सालाज़ार को देखते ही चीख़-चीख़कर भागने लगे। तेज़ाब से पिघले सालाज़ार के कपड़े टुकड़े-टुकड़े होकर ज़मीन पर गिर पड़े थे। अब वह एक नंगा इंसानी ढाँचा था। एक चलता-फिरता, मांस-हीन और हड्डी-रहित पिंजरा।

डॉक्टर दीवार के कोने से पीछे हट गया। और अगले ही पल उसकी गर्दन हत्यारे के लोहे के पंजों में थी। एक मिनट में उसकी मौत हो गई। फिर भी हत्यारे ने उसे अच्छी तरह हिलाया और छोड़ दिया। फिर वह पिछले दरवाज़े की ओर मुड़ा।
############

डॉ. देविंदर जैसे ही अपने छोटे से बंगले के बरामदे से बाहर निकले और अपनी छोटी पीली कार में बैठे, सड़क के दूसरी तरफ खड़ी एक टैक्सी ने लाइट जलाई और आगे बढ़ने लगी, शायद किसी को इशारा करने के लिए। देविंदर ने इस पर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने अपनी कार

फिर से स्टार्ट की और उसे सड़क पर लाकर तेज़ रफ़्तार से छोड़ दिया। रात के ग्यारह बज रहे थे। बाज़ार शांत थे। बस इक्का-दुक्का होटल और कुछ दुकानें खुली थीं। उनकी कार बाज़ारों और विभिन्न इलाकों से गुज़रती हुई शहर के बाहर जामगढ़ तहसील की ओर जाने वाली चौड़ी पक्की सड़क पर आ गई। उसके बहुत पीछे, एक और लंबी काली कार सड़क पर रेंग रही थी। उसमें शायद कोई ख़ास साइलेंसर लगा था, जो

इस वजह से इंजन की गर्जना बिल्कुल सुनाई नहीं दी। उसकी लाइटें भी बंद थीं और शायद इसी वजह से आगे वाली कार को इसका पता भी नहीं चला। दोनों कारें उसी तरह आगे-पीछे चलती रहीं। जब तक कि अगली कार लगभग 108 मील चलने के बाद दूसरी संकरी सड़क पर मुड़ नहीं गई। पीछा करने वाली कार भी पीछे थी। फिर, आगे जाकर ढलान से गुज़रते हुए, कार ढलान पर हीज हाईनेस बंजीरा के पुराने और वीरान पोस्ट ऑफिस बंगले की ओर मुड़ गई और रुक गई। डॉ. देविंदर ने हेडलाइट्स ऑफ करते हुए इंजन बंद कर दिया और कार से बाहर निकल गए। फिर उन्होंने अपनी कार का दरवाज़ा बंद किया और बंगले की सीढ़ियाँ चढ़कर अंदर चले गए। बंगले के दरवाज़े पर सिर्फ़ एक आदमी बैठा था, जिसके हाथ में एक भरी हुई बंदूक थी। देविंदर को देखकर वह एक तरफ़ हट गया और अंदर जाने के बाद फिर से गलियारे में टहलने लगा। वह धीरे-धीरे सीटी बजा रहा था। शायद उसे इस बात से कोई लेना-देना नहीं था कि अंदर क्या हुआ था और क्या हो रहा था। लेकिन दो मिनट बाद, उसने कुछ फीट दूर झाड़ियों में कुछ सरसराहट की आवाज सुनी।

कौन है?” उसने पुकारा। जब कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई, तो वह हाथ में टॉर्च लेकर सीढ़ियों से नीचे आया और टॉर्च की रोशनी में देखने के लिए झाड़ी के पास गया। अचानक, पीछे से एक हाथ उसके सिर पर पड़ा और वह चक्कर खाकर वहीं गिर पड़ा। उसकी टॉर्च और बंदूक छीन ली गई और उसके हाथ-पैर बाँध दिए गए और उसे झाड़ी में घसीटा गया। चार परछाइयाँ तितर-

बितर हो गईं और डाकघर के बंगले की ओर बढ़ने लगीं। किसी ने उनका विरोध नहीं किया। लेकिन जब वह डाकघर के बंगले की सीढ़ियों पर कदम रख रहा था, तो अंदर कुछ शोर हुआ और पिस्तौल की गोली की आवाज के साथ, एक परछाई उसके ऊपर गिर गई। गोली की आवाज के साथ वह वहीं गिर पड़ा। उसके साथी तुरंत सीढ़ियों से नीचे लुढ़क गए और बार की आड़ लेकर उन्होंने भी संदिग्ध पर गोलियां चलानी शुरू कर दीं

100

"चिंता मत करो, गोली मेरे पैर में लगी है।" यह कहकर वह सीढ़ियों से लुढ़कता हुआ नीचे आया और उनके पास पहुँचा। रात के अँधेरे में इस सुनसान जगह पर दोनों तरफ से गोलियाँ चलने लगीं और उनकी आवाज़ से पूरा सुनसान इलाका गूंजने लगा।

डिसूजा, हाथ ऊपर करो और टॉर्च की रोशनी फेंको, मैं गोली चलाता हूँ। ---खान की आवाज़ सुनाई दी।

जवाब में एक हाथ उठा और फिर टॉर्च की तेज़ रोशनी गलियारे में दौड़ने लगी। अचानक, एक साथ दो गोलियाँ चलीं और टॉर्च डिसूजा के हाथ से उड़ गई। वह सिहर उठा और उसने अपना हाथ नीचे खींच लिया, लेकिन उसी समय, गलियारे में किसी के गिरने की आवाज़ और कुछ दौड़ते हुए कदमों की आहट सुनाई दी। खान और बाले अपनी जगह से उछलकर भागे। डिसूजा भी उनके पीछे था, उसका हाथ पकड़े हुए। उसके दूसरे हाथ में पिस्तौल थी। उन्होंने असरार को वहीं छोड़ दिया।

टॉर्च की रोशनी में उसने बरामदे में देखा। देविंदर का शरीर खून से लथपथ पड़ा था। गोली उसके सीने में लगी थी और वह मर चुका था। तभी अंदर से एक और चीख की आहट सुनाई दी

और बाले और खान ज़ोर से दरवाज़ा खोलकर अंदर दाखिल हुए। यह कमरा अँधेरा था, लेकिन बगल वाला कमरा उजाला था। वह जल्दी से अँधेरे कमरे को पार कर जैसे ही उजाले वाले कमरे के दरवाज़े पर पहुँचा, उसने देखा कि पेगी को एक मोटे, हट्टे-कट्टे आदमी ने जकड़ रखा था। यह आदमी उसे ज़बरदस्ती अपनी बाहों में जकड़े हुए था।

बाले पीछे से आया।

"बस थोड़ा सा, भाई सुनो ," उसने बड़ी गरिमा के साथ उस आदमी की पीठ थपथपाते हुए कहा।

"तुम रंग में भांग डालने आए हो? बाद में सुनेंगे।" यह कहते हुए वह मुड़ा ही था कि बाले का एक ज़ोरदार मुक्का उसके माथे पर लगा। वह स्तब्ध होकर वहीं पेगी के पैरों पर गिर पड़ा।

नमस्ते, मेरी जान। बाले ने पेगी की तरफ़ मुस्कुराते हुए कहा। पेगी बस मुस्कुरा दी। इतनी देर में उसके बगल वाले बड़े कमरे में भी रोशनी आ गई। सुपरिंटेंडेंट ख़ान और डिसूज़ा अंदर आ गए थे।

जैसे ही बाले पेगी के साथ कमरे में लौटा, पेगी ने छत से लटकी एक लाश देखी तो चीख पड़ी। खान, बाले और डिसूजा भी वहीं खड़े होकर सफ़ेद कपड़ों वाली डॉक्टर की लाश को देख रहे थे। तभी खान ने पिस्तौल से उसका रस्सा काट दिया और वह धड़ाम से ज़मीन पर गिर पड़ी। उन्होंने उसके गले में एक कागज़ लटका देखा। खान ने उसके गले का वो कागज़ का टुकड़ा निकाल लिया ।

उसने उसे निकाला और पढ़ना शुरू किया। उसमें लिखा था:

प्रिय पुत्र सुपरस्टार खान!

तुमने अपने मन में मुझे खत्म कर दिया था, पर मेरी कोई मौत ही नहीं है। यह पागल डॉक्टर भी खुद को बहुत बड़ा वैज्ञानिक समझता था और मुझे अपने वश में रखन चाहता था, पर मैंने ही उसे उसके अंजाम तक पहुँचाया। हालाँकि उसने मेरे बिखरे हुए अंगों को बड़ी सफाई से जोड़कर मुझे फिर से जीवन दिया था, पर मैं उन बेचारे और मासूम लोगों के विनाश के लिए उसे माफ़ नहीं कर सकता जिन पर उसने अपना घिनौना सिद्धांत आजमाया था। नीचे तहखाने में ऐसे 25 मासूम बंद हैं जो संयोग से मेरे लगातार आने-जाने की वजह से उसकी क्रूरता से महफूज़ थे। हाँ, मुझसे भी गलती हुई है। उर्मिला का अपार सौंदर्य देखकर मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सका। मैं जानता था कि वह मेरी नहीं हो सकती। मैंने उसे उसी क्षण खत्म कर दिया जब वह एक पुरुष से प्रेम और वफ़ादारी का वादा कर रही थी। वह बेबस थी, औरत कितनी धोखेबाज़ हो सकती है, खैर, अब मैं जाता हूँ। दुनिया बहुत बड़ी है और मुझे अभी कई देशों की यात्रा करनी है। अगर तुम इतनी मूर्खता से मेरा पीछा करोगे, तो मुझे फिर से अपराध की दुनिया में लौटना पड़ेगा। और मुझे लगता है कि तुम ऐसे ही मूर्ख होगे।

अच्छा, अब छोड़ो -

तुम्हारा पुराना परिचित - सलाजार

डिसूज़ा ने अपने दूसरे हाथ से सफ़ेद कपड़े पहने डॉक्टर के चेहरे के आधे हिस्से पर बंधा सफ़ेद कपड़ा फाड़ दिया, लेकिन वे सब चौंक गए। यह डॉ. नारमन नहीं थे।

"डॉ. पांडे?" सबने आश्चर्य से कहा।

"हाँ," खान ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

"और डॉ. नारमन कहाँ गए?" नाला ने पूछा।

वो उन लाचार पागलों में से एक है। वोपागलखाने में ही मिलेगा।"

"कैसे?" पैगी ने पूछा। "मुझे लगा था कि वो डॉक्टर बनना चाहता है। वो किसी को मुँह नहीं दिखा रहा है।"

यह वास्तव में डॉ. नारमन का असिस्टंट था, लेकिन उनकी कार्यप्रणाली और सिद्धांत को पूरी तरह से जानने के बाद, उन्होंने एक दिन धोखे से उसे बेहोश कर दिया और उसके शरीर को बंदर का शरीर लगा दिया।

"वाह, लेकिन आपको यह कैसे पता चला?"

खान ने पागलों को देखने और मेडिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट के निदेशक मंडल के सदस्यों सहित सभी डॉक्टरों पर नजर रखने के बाद कहा।

"चलो, नॉर्मन उस गड्ढे में गिर गया जो उसने दूसरों के लिए खोदा था, और ये बेटे सालाजार के हाथों बड़े घर तक पहुँच गए," बाले ने संतुष्टि की गहरी साँस लेते हुए कहा।

अरे, तुम्हारे हाथ को क्या हुआ?" पैगी डिसूजा ने देखा कि उसके हाथ से खून टपक रहा है।

"कुछ नहीं, बस एक गोली का घाव है," डिसूजा ने जवाब दिया।

बाले को डिसूजा के प्रति पेगी की सहानुभूति पसंद नहीं आई, इसलिए उसने मुंह बनाया और उन दोनों के बीच आ गया।

पैगी डार्लिंग। उसने उससे बहुत रोमांटिक लहजे में बात की।

चुप रहो, -- पेगी बिगड़ गयी ।

"अरे, क्या तुम्हारा भेजा भी किसी बंदरिया से बदल दिया गया?" बाले ने उसे ध्यान से देखते हुए कहा।

"अरे, यह मेरी पत्नी हेलेन डिसूजा है।" डिसूजा ने पैगी का हाथ अपने हाथ में लिया और औपचारिक ढंग से उसका परिचय बाले से कराया।

"पत्नी --? बाले उछल पड़ा तो फिर पेग्गी ?" उसने आश्चर्य से पूछा।

"वे सिर्फ़ जाँच-पड़ताल के लिए हैं। उन्हें भी ऐसे कामों में मदद करने का शौक है। उन्हीं की मदद से हमें रूह अफ़ज़ा मिला। उन्हीं की मदद से तुम नहर के किनारे वाले घर तक पहुँचे और फिर वहाँ से भाग निकले।" सुपरिंटेंडेंट ख़ान ने उसे पूरी बात बताई।

"ओ माइ गोद , यह तो मेरी भब ही निकली । अब मैं कहाँ जऊँ?"

यह कहते हुए, वह दोनों हाथों से सिर पकड़े वहीं बैठ गया , लेकिन खान ने उसका कान पकड़ा और वो चुपचाप उसके पीछे चला गया। असरार, घायल अवस्था में भी, रेंगते हुए कार तक पहुँच गया था। खान ने तुरंत प्राथमिक उपचार बॉक्स से एक पट्टी निकाली और उसके और डिसूज़ा के ज़ख्मों पर पट्टी बाँधी, और उनकी कार आधी रात के अँधेरे को चीरती हुई शहर की ओर चल पड़ी। रिहा हुए और गिरफ़्तार हुए लोगों का काफ़िला उनके पीछे था।

******* समाप्त *******

sjeet